मनहर चौहान

अरे, ओमप्रकाश!

ARE, OMPRAKASH !
(Fiction)
By
Manhar Chawhan
Rs. 7.00

मनहर चौहान की ओर से

ओमप्रकाश की यह कथा बिल्कुल सच्ची है। बायरन ने कहा था, 'सत्य तो कल्पना' से भी अधिक विचित्र होता है।' इस सत्य-उपन्यास को पढ कर लगेगा, बायरन कितना सही था!

सत्य-कथाओं पर आधारित वृतान्त-उपन्यासों(डाक्यू-मेण्ट्री नॉवल्स) के लेखन की कोई नियमित परम्परा हिन्दी में नहीं है। मैंने इस दिशा मे कुछेक प्रयोग किए हैं। 'सीमाएं' के बाद, इस तरह का मेरा नवीनतम प्रयास, आप के हाथो में है। इस पर आप की राय जानने को उत्सुक हूं।

'शास्त्री' की उपाधि का गलत-सलत अर्थ समझा कर, स्वयं को भारतीय तान्त्रिकों और योगियों से जोड़ कर, ओमप्रकाश उर्फ पीटर कून ने अपने पढे-लिखे देश को भी किस तरह बेव-कूफ बनाया, इस की यह सनसनीखेज सत्य-कथा, ओमप्रकाश के देश के लिए चुनौती हो चाहे न हो—भारत के लिए चुनौती अवश्य है। पश्चिम की सास्कृतिक दासता, आजादी के इतने-इतने वर्षों बाद भी, किस बुरी तरह हमें जकड़े हुए है, किसी से छिपा नहीं। उन्हीं पश्चिमी देशों मे भारतीय सभ्यता की धाक कितनी अधिक है, इस का आईना इस कृति में मिलेगा।

आध्यात्मिक शान्ति की खोज में निकले हिप्पियों ने भारत पर 'आक्रमण' तो अब किया है, लेकिन जब हिप्पी सम्प्रदाय का कहीं अता-पता नहीं था, तब भी भारतीय संस्कृति के नाम पर पश्चिम में क्या-क्या हंगामे होते थे, कम ही लोग जानते होंगे। 'अरे ओमप्रकाश !' काफी-कुछ बता सकता है।

मुझे विश्वास है कि ऊपर-ऊपर से केवल सत्य-कथा लगने वाली इस रचना की गहराइयों में जो चुनौती झांक रही है, उसे ग्रहण करना पाठकों के लिए मुश्किल नहीं रहेगा। आखिर क्यों हम हिन्दी जानते हुए भी अंग्रेजी बोलने में आज भी गर्व अनुभव करें ? क्यों पश्चिम से चली फैशन-नग्नता का आंख मूंद कर अनुसरण करें और इतरा कर चलें ? इत्यादि।

पश्चिम की सांस्कृतिक दासता की बेड़ियां तोड़ने में यदि इस उपन्यास ने रंच-मात्र भी सहयोग दिया, तो अपने इस प्रयास को सार्थक मानने से मैं नहीं हिचकूंगा।

अस्तु।

…मनहर चौहान।

द्वारा : उमेश प्रकाशन,
५-नाथ मार्केट, नई सड़क,
दिल्ली-६

१५-६-७२

जरा मेरे कान मे एक बात तो बताइए। किसी की आखों का वर्णन आप ने, अधिक-से-अधिक कितने पृष्ठों में पढा है ?

शायद आपका उत्तर यही होगा कि आंखो का वर्णन कभी भी और कही भी हम ने एक-दो पैराग्राफो से ज्यादा विस्तार में नही पढा। अनेकानेक पृष्ठों मे वर्णन हो, इस का प्रश्न ही नही।

वास्तव में, दुनिया की सब से सुन्दर आखों का वर्णन भी एक-दो पैराग्राफो मे ही झेला जा सकता है। यदि उसी वर्णन को कई पृष्ठों में फैलाया जाए, तो निश्चय ही वह ऊबाऊ हो जाएगा।

लेकिन ठहरिए। अपवाद हर नियम के होते हैं या नही ?

यह जो उपन्यास आपके हाथ मे है, इस का हर पृष्ठ—यो समझिए—मेरी आंखो के वर्णन पर ही न्योछावर है।

और इसके बावजूद, मेरा दावा है कि आप ऊब नही सकते। मेरी यह सच्ची कहानी पढने के बाद आप अनायास बोल पड़ेंगे, "अरे !"

मेरा अपना नाम है ओमप्रकाश।

इसी लिए, 'अरे', और 'ओमप्रकाश' को मिला कर मैंने अपनी इस सच्ची कहानी ही का नामकरण ही कर दिया है—'अरे, ओमप्रकाश !' मुमकिन है, आप को यह नाम पसन्द न आए, किन्तु···

फिर से वही दावा—

यह उपन्यास आपको जरूर पसन्द आएगा। किन्तु, इस सत्य-कथा को क्या केवल एक उपन्यास ही माना जाए ? वास्तव में, यदि आप सूक्ष्मता से जांचेंगे, तो इस सत्य-कथा मे स्वयं अपनी सूरत देखेंगे। इस में जो-कुछ हुआ, भारत के नाम पर संयुक्त-राज्य-अमेरिका मे हुआ—किन्तु, सच पूछें तो, ये सभी सत्य घटनाए शहरी सांकेतिकता से ओतप्रोत हैं।

जब लाश गड्ढे में डाली गई, कितने जोर की आवाज ! जैसे भूचाल आया हो, कोई इमारत ढह रही हो···

लाश को गड्ढे में डालने वाले हाथियों की आंखें गमगीन थीं। महावत उन्हें उस गड्ढे से काफी दूर चला ले गए। तब, मजदूरों ने गड्ढे में मिट्टी डालनी शुरू की। कब्र बन्द हो जाने के बाद भी मिट्टी डाली जाती रही, लिहाजा कब्र के ऊपर समाधि जैसी एक नन्हीं-सी टेकरी खड़ी हो गई।

'पुरानी अम्मा' की मौत को गांव वालों से छिपाया जा सकता, यह सम्भव नहीं था। न ऐसे किसी छिपाव की आवश्यकता ही मुझे महसूस हुई थी। सोच भी कौन सकता था। कि गांव वाले 'पुरानी अम्मा' की मृत्यु को कैसा रूप देंगे।

ग्रामीणों के बीच विद्रोह की तैयारियां, चुपके-चुपके, होती रहीं। मुझे भनक न मिल सकी। ग्रामीणों के संग मेरा उठना-बैठना नहीं था। गांव में ही रहता होने के बावजूद मैं गांव वालों से कटा हुआ था—स्वयं गांव वाले मुझे काट कर रखे हुए थे। इसी लिए वे मुझे समझ नहीं पाते थे और मुझे लेकर न जाने क्या-क्या सोचते रहते थे।

उन के मन में अनेक गलतफहमियां थीं, जो 'पुरानी अम्मा' की मौत होते ही भड़कने लगीं। मौत के दसवें या ग्यारहवें दिन मेरे अनुचरों ने सूचित किया, "एक जुलूस आप के बंगले की ओर बढ़ रहा है।"

"जुलूस ?" मैंने पूछा, "किन का जुलूस ?"

"गांव वालों का।"

"क्यों ? वे क्या कहना चाहते हैं ?"

"वे आपको बर्बाद कर देना चाहते हैं।"

"लेकिन क्यों ? मैंने उन का क्या बिगाड़ा है ?"

"वे कहते हैं कि आप ने पूरे गांव के नलकों का पानी जहरीला कर देने की साजिश की है।"

"अरे, यह कैसी बात है ! मैं भला क्यों ऐसी साजिश करूंगा ?" मुझे सचमुच आश्चर्य हुआ था यह सुन कर।

"गांव वाले नारे लगा रहे हैं कि आप उनके दुश्मन हैं, क्योंकि··· दरअसल···यह दुश्मनी एक-तरफा नही है। वे आप के दुश्मन हैं और आप उन के। नलको का पानी जहरीला करके आप ने उन्हे नुकसान पहुचाने की कोशिश की—अपनी सावधानी के कारण वे बच गए। वे पानी उबाल कर पीने लगे हैं और···अब उनकी बारी है। उन का जुलूस आपके बंगले को आग लगा देने के लिए बढा आ रहा है। बचिए।"

"लेकिन·· लेकिन···" मैं चकित था, "यह कैसे हो सकता है ? मैं यदि चाहू, तब भी नलकों का पानी जहरीला कैसे कर सकता हू ? अव्वल तो मैंने ऐसा चाहा ही नहीं है। मैं उन्हे अपने दुश्मन नही मानता—हालांकि वे मुझे अपने दुश्मन के रूप मे देख सकते हैं, देखते ही हैं···उन के मन की गलतफहमियां जब तक दूर नही होती···"

"जो भी है—अब बताइए कि हम क्या करें···" अनुचरो ने भय-भीत मुद्रा मे मुझ से पूछा, "क्या पुलिस को फोन किया जाए ?"

"नही।" मैंने उत्तर दिया और उठ पडा। मैं बाहर निकलने के लिए दरवाजे की ओर बढा।

अनुचरो ने रोका, "अकेले बाहर न जाइए। आप को देखते ही सब का खून खोल जाएगा।"

"मुझे देखते ही वे सकपका जाएगे।" मैंने उत्तर में कहा और दरवाजा पार कर आगन में निकल आया।

मेरे बंगले का फैलाव अद्भुत है। इसी से अन्दाज़ा लगा लीजिए कि जब महंगाई आज के जितनी नही थी, तब मैंने यह लम्बी-चौडी जमीन, जो किसी भव्य मैदान से कम नही, पूरे एक लाख डालर में खरीदी थी। उस सौदे मे वे इमारतें भी शामिल थीं, जो इस जमीन पर सीना तान कर खड़ी थी—आज भी खडी है। लगभग सौ वर्ष पुरानी, मजबूत इमारतें, जिनका निर्माण एक फान्सीसी जल-दस्यु ने किया था। जल-दस्यु मर-खप गया। उस के परिवार वालो ने समुद्री डकैती की उसकी परम्परा आगे न चलाई। उसकी असीम सम्पति अब बिक जाने के लिए तैयार थी—लेवाल नही मिलता था। मैंने लाख डालर एक मुश्त दे कर

जब लाश गड्ढे में डाली गई, कितने जोर की आवाज ! जैसे भूचाल आया हो, कोई इमारत ढह रही हो…

लाश को गड्ढे में डालने वाले हाथियों की आंखें गमगीन थीं। महावत उन्हें उस गड्ढे से काफी दूर चला ले गए। तब, मजदूरों ने गड्ढे में मिट्टी डालनी शुरू की। कब्र बन्द हो जाने के बाद भी मिट्टी डाली जाती रही, लिहाजा कब्र के ऊपर समाधि जैसी एक नन्हीं-सी टेकरी खड़ी हो गई।

'पुरानी अम्मा' की मौत को गांव वालों से छिपाया जा सकता, यह सम्भव नहीं था। न ऐसे किसी छिपाव की आवश्यकता ही मुझे महसूस हुई थी। सोच भी कौन सकता था। कि गांव वाले 'पुरानी अम्मा' की मृत्यु को कैसा रूप देंगे।

ग्रामीणों के बीच विद्रोह की तैयारियां, चुपके-चुपके, होती रही। मुझे भनक न मिल सकी। ग्रामीणों के संग मेरा उठना-बैठना नहीं था। गांव में ही रहता होने के बावजूद मैं गांव वालों से कटा हुआ था—स्वयं गांव वाले मुझे काट कर रखे हुए थे। इसी लिए वे मुझे समझ नहीं पाते थे और मुझे लेकर न जाने क्या-क्या सोचते रहते थे।

उन के मन में अनेक गलतफहमिया थीं, जो 'पुरानी अम्मा' की मौत होते ही भड़कने लगीं। मौत के दसवें या ग्यारहवें दिन मेरे अनुचरों ने सूचित किया, "एक जुलूस आप के बंगले की ओर बढ़ रहा है।"

"जुलूस ?" मैंने पूछा, "किन का जुलूस ?"

"गांव वालों का।"

"क्यों ? वे क्या कहना चाहते हैं ?"

"वे आपको बर्बाद कर देना चाहते हैं।"

"लेकिन क्यों ? मैंने उन का क्या बिगाड़ा है ?"

"वे कहते हैं कि आप ने पूरे गांव के नलकों का पानी जहरीला कर देने की साजिश की है।"

"अरे, यह कैसी बात है ! मैं भला क्यों ऐसी साजिश करूंगा ?" मुझे सचमुच आश्चर्य हुआ था वह सुन कर।

"गाव वाले नारे लगा रहे है कि आप उनके दुश्मन है, क्योकि··· दरअसल···यह दुश्मनी एक-तरफा नही है। वे आप के दुश्मन हैं और आप उन के। नलकों का पानी जहरीला करके आप ने उन्हें नुकसान पहुंचाने की कोशिश की—अपनी सावधानी के कारण वे बच गए। वे पानी उबाल कर पीने लगे हैं और···अब उनकी बारी है। उन का जुलूस आपके बंगले को आग लगा देने के लिए बढा आ रहा है। बचिए।"

"लेकिन···लेकिन···" मैं चकित था, "यह कैसे हो सकता है ? मैं यदि चाहू, तब भी नलकों का पानी जहरीला कैसे कर सकता हू ? अव्वल तो मैंने ऐसा चाहा ही नही है। मैं उन्हें अपने दुश्मन नही मानता—हालांकि वे मुझे अपने दुश्मन के रूप मे देख सकते हैं, देखते ही हैं···उन के मन की गलतफहमिया जब तक दूर नहीं होतीं···"

"जो भी है—अब बताइए कि हम क्या करें···" अनुचरों ने भयभीत मुद्रा मे मुझ से पूछा, "क्या पुलिस को फोन किया जाए ?"

"नही।" मैंने उत्तर दिया और उठ पड़ा। मैं बाहर निकलने के लिए दरवाजे की ओर बढा।

अनुचरों ने रोका, "अकेले बाहर न जाइए। आप को देखते ही सब का खून खोल जाएगा।"

"मुझे देखते ही वे सकपका जाएगे।" मैंने उत्तर में कहा और दरवाजा पार कर आगन में निकल आया।

मेरे बगले का फैलाव अद्भुत है। इसी से अन्दाजा लगा लीजिए कि जब महंगाई आज के जितनी नही थी, तब मैंने यह लम्बी-चौड़ी जमीन, जो किसी भव्य मैदान से कम नहीं, पूरे एक लाख डालर में खरीदी थी। उस सौदे मे वे इमारतें भी शामिल थी, जो इस जमीन पर सीना तान कर खड़ी थी—आज भी खड़ी हैं। लगभग सौ वर्ष पुरानी, मजबूत इमारतें, जिनका निर्माण एक फ्रान्सीसी जल-दस्यु ने किया था। जल-दस्यु मर-खप गया। उस के परिवार वालों ने समुद्री डकैती की उसकी परम्परा आगे न चलाई। उसकी असीम सम्पत्ति अब बिक जाने के लिए तैयार थी—लेवाल नही मिलता था। मैंने लाख डालर एक मुश्त दे

जब लाश गड्ढे में डाली गई, कितने जोर की आवाज ! जैसे भूचाल आया हो, कोई इमारत ढह रही हो...

लाश को गड्ढे में डालने वाले हाथियों की आंखें गमगीन थीं। महावत उन्हें उस गड्ढे से काफी दूर चला ले गए। तब, मजदूरों ने गड्ढे में मिट्टी डालनी शुरू की। कब्र बन्द हो जाने के बाद भी मिट्टी डाली जाती रही, लिहाजा कब्र के ऊपर समाधि जैसी एक नन्हीं-सी टेकरी खड़ी हो गई।

'पुरानी अम्मा' की मौत को गांव वालों से छिपाया जा सकता, यह सम्भव नहीं था। न ऐसे किसी छिपाव की आवश्यकता ही मुझे महसूस हुई थी। सोच भी कौन सकता था। कि गांव वाले 'पुरानी अम्मा' की मृत्यु को कैसा रूप देंगे।

ग्रामीणों के बीच विद्रोह की तैयारियां, चुपके-चुपके, होती रही। मुझे भनक न मिल सकी। ग्रामीणों के संग मेरा उठना-बैठना नहीं था। गांव में ही रहता होने के बावजूद मैं गांव वालों से कटा हुआ था—स्वयं गांव वाले मुझे काट कर रखे हुए थे। इसी लिए वे मुझे समझ नहीं पाते थे और मुझे लेकर न जाने क्या-क्या सोचते रहते थे।

उन के मन में अनेक गलतफहमिया थीं, जो 'पुरानी अम्मा' की मौत होते ही भड़कने लगीं। मौत के दसवें या ग्यारहवें दिन मेरे अनुचरों ने सूचित किया, "एक जुलूस आप के बंगले की ओर बढ़ रहा है।"

"जुलूस ?" मैंने पूछा, "किन का जुलूस ?"

"गांव वालों का।"

"क्यों ? वे क्या कहना चाहते हैं ?"

"वे आपको बर्बाद कर देना चाहते हैं।"

"लेकिन क्यों ? मैंने उन का क्या बिगाड़ा है ?"

"वे कहते हैं कि आप ने पूरे गांव के नलकों का पानी जहरीला कर देने की साजिश की है।"

"अरे, यह कैसी बात है ! मैं भला क्यों ऐसी साजिश करूंगा ?" मुझे सचमुच आश्चर्य हुआ था वह सुन कर।

"गांव वाले नारे लगा रहे हैं कि आप उनके दुश्मन हैं, क्योंकि··· दरअसल···यह दुश्मनी एक-तरफा नही है। वे आप के दुश्मन हैं और आप उन के। नलको का पानी जहरीला करके आप ने उन्हें नुकसान पहुंचाने की कोशिश की—अपनी सावधानी के कारण वे बच गए। वे पानी उबाल कर पीने लगे हैं और···अब उनकी बारी है। उन का जुलूस आपके बगले को आग लगा देने के लिए बढा आ रहा है। बचिए।"

"लेकिन···लेकिन···" मैं चकित था, "यह कैसे हो सकता है ? मैं यदि चाहू, तब भी नलको का पानी जहरीला कैसे कर सकता हू ? अव्वल तो मैंने ऐसा चाहा ही नही है। मैं उन्हें अपने दुश्मन नही मानता—हालाकि वे मुझे अपने दुश्मन के रूप मे देख सकते हैं, देखते ही हैं···उन के मन की गलतहफमिया जब तक दूर नही होती···"

"जो भी है—अब बताइए कि हम क्या करें···" अनुचरो ने भयभीत मुद्रा में मुझ से पूछा, "क्या पुलिस को फोन किया जाए ?"

"नही।" मैंने उत्तर दिया और उठ पडा। मैं बाहर निकलने के लिए दरवाजे की ओर बढा।

अनुचरो ने रोका, "अकेले बाहर न जाइए। आप को देखते ही सब का खून खोल जाएगा।"

"मुझे देखते ही वे सकपका जाएगे।" मैंने उत्तर में कहा और दरवाजा पार कर आगन में निकल आया।

मेरे बंगले का फैलाव अद्भुत है। इसी से अन्दाजा लगा लीजिए कि जब महगाई आज के जितनी नही थी, तब मैंने यह लम्बी-चौडी जमीन, जो किसी भव्य मैदान से कम नही, पूरे एक लाख डालर में खरीदी थी। उस सौदे में वे इमारतें भी शामिल थीं, जो इस जमीन पर सीना तान कर खडी थी—आज भी खडी हैं। लगभग सौ वर्ष पुरानी, मजबूत इमारतें, जिनका निर्माण एक फ्रान्सीसी जल-दस्यु ने किया था। जल-दस्यु मर-खप गया। उस के परिवार वालों ने समुद्री डकैती की उसकी परम्परा आगे न चलाई। उसकी असीम सम्पति अब बिक जाने के लिए तैयार थी—लेवाल नही मिलता था। मैंने लाख डालर एक मुश्त दे कर

(वल्कि कहिए, दिलवा कर) जल-दस्यु के परिवार की समस्या हल कर दी। नकद धन ले कर परिवार गांव से खिसक गया। कहां गया, नहीं मालूम।

गांव में सन्नाटा खिच गया, जव लोगों ने सुना कि मैंने वह रगम एक-मुश्त दे दी। उसी दिन से गांव वालों ने यह धारणा वना ली कि मैं उन से अलग-थलग व्यक्ति हूं—उन से वहुत ऊंचा—और इसी लिए, अपनी अपनी हीनता को नकारने के लिए, गांव वालों ने मुझ से नफरत करना शुरू कर दिया।

गांव का हर व्यक्ति मुझ पर जासूसों की तरह निगाह रखने लगा। इससे मेरी जो हरकतें रहस्यमय न होतीं, वे भी रहस्य से ओतप्रोत हो कर, गांव वालों के वीच गरमागरम कानाफूसियों का कारण वन जातीं।

आगमन से उतर कर मैंने काफी लम्बा रास्ता पैदल पार किया। दो अनुचर मेरे साथ रहे। आने को तो कई अनुचर साथ आ रहे थे। मैंने ही वापस भेज दिया। दाएं-वाएं एक-एक अनुचर को साथ लिए मैंने वह नन्हा-सा जंगल पार किया, जिसे मैंने वड़े व्यवस्थित ढंग से अपने वंगले के चारों ओर लगाया था। जंगल में सिहों के पिंजड़े। शेरों के पिंजड़े। हाथी। वन्दर। हिरन। वारहसिंगे। गिलहरियां आदि। ये सव पशु मैंने दूर-दूर से मंगवाएं थे—वंगले के आसपास 'तान्त्रिक वातावरण' तैयार करने के लिए। विभिन्न पक्षी भी, प्रायः हर वृक्ष पर, चहक-फुदक रहे थे। उन पशु-पक्षियों पर कोई ध्यान न देता हुआ मैं वंगले की दिव्य चहारदीवारी की ओर वढ़ता रहा, ताकि गेट तक पहुंच सकूं।

मैं और गांव वाले लगभग साथ-साथ ही गेट पर पहुंचे। जुलूस सचमुच खूंख्वार मुद्रा में था। वूढ़े कुछेक ही थे—शेष सव युवक-युवतियां। किसी के हाथ में बेंत है, तो किसी के पास डण्डे हैं, वृक्षों से तोड़ी हुई शाखाएं हैं—जिसे जो मिला, वही उठा लाया है। मिट्टी-तेल के कनस्तर भी हैं जुलूस में। सचमुच इनके इरादे नेक नहीं।

लेकिन क्यों ? आखिर क्यों ?

अव जरा मेरी आंखों के चमत्कार पर गौर फरमाइए। ज्यों ही मैं

गेट पर आया, जुलूस हक्का-बक्का रह गया। जुलूस वालों को मैंने कुछ इस तरह घूरा कि वे सन्नाटे में आ गए। मुझ जैसे व्यक्तित्व के लोग, दुनिया भर में, दस-पांच ही होंगे। कद्दावर शरीर के अलावा—ऐसा रौबीला चेहरा कि देखते ही चरण छू लेने का मन हो जाए। आखें ऐसी कौंधती हुई कि पहली निगाह मे ही पत्थर भी दास बन जाए। जिनके पास ऐसी आंखें होती हैं, वे दुनिया का नेतृत्व अवश्य करते हैं। इतना निश्चित है कि यदि मैंने अपना नाम ओमप्रकाश न रख लिया होता, तो अवश्य ही दुनिया का महान् नेता बना होता। किन्तु मेरे भग्य में ओमप्रकाश बनना ही बदा था। और···मैं असन्तुष्ट भी तो नही !

चूंकि मैं अपने बंगले से बहुत कम बाहर निकलता हूं, गाव वालो ने मुझे कभी-कभी ही देखा है। जो अक्सर दिखाई पड़ते हैं, उनका रौब खत्म होते देर नहा लगती। एक तो मेरा कभी-कभी ही दिखाई पड़ना, दूसरे—मेरी आखों मे ज्वालामुखी ! सरकश का रिंग मास्टर जिस तरह हिंस पशुओ को केवल अपनी आखो के तेज से वश मे करता है, उसी तरह मैंने अपनी आखो के तेज से, क्षण-मात्र मे, उस जुलूस को वश मे कर लिया।

मुझ से आमना-सामना होते ही जुलूस के नारे डूबने लगे। युवक-युवतियां और बूढे-बूढियो के बढ़ते कदम एकदम रुक गए।

मैंने गम्भीरता से पूछा, "क्या बात है ?"

किसी के मुंह से बोल न फूटा।

मैंने फिर पूछा, "क्या बात है ? क्यो आप लोग ऐसा उपद्रव कर रहे है ?"

इस पर एक जवान आगे आया और बोला, "आप ने पूरे गाव की वाटर-सप्लाई जहरीली कर दी है।"

"किस तरह ?"

"आप ने अपनी एक हथिनी गांव की धरती मे ही दफन की है या नहीं ?"

"हां। तो ?"

"जिस तलैया से गांव में पानी आता है, उस तलैया में, भीतर-ही-भीतर, कई स्रोते फूटते हैं—आप को मालूम होगा।"

"हां, मुझे मालूम है।"

"आप ने हथिनी जहां दफन की है, ठीक वहीं से जमीन के भीतर-भीतर, एक स्रोता बहता है। हथिनी की लाश कितनी जहरीली होती है, सारी दुनिया जानती है लाश का जहर सोते के पानी के साथ मिल तलैया तक पहुंच चुका है। फिलहाल यह जहर इतना कम है कि पानी को उबाल कर पीया जा सके, लेकिन थोड़े ही दिनों में पूरी तलैया इतनी जहरीली हो जाएगी कि गांव वालों को एक बूंद भी पानी नहीं मिलेगा।"

सुन कर मेरा मन होने लगा कि मुस्करा दूं, किन्तु गम्भीर रहा और बोला, "क्या आप लोगों को पूरा विश्वास है कि तलैया में 'पुरानी अम्मा' की लाश का जहर घुल रहा है ?"

"हां और हमें यह भी विश्वास है कि आप ने जान-बूझ कर हथिनी एक ऐसी जगह दफन की, जिस से उस का जहर···"

"ठहरिए।' मैंने टोक दिया, "मुझे एक बात बताइए।"

"क्या ?"

"पानी नीचे से ऊपर बहता है या ऊपर से नीचे ?" मैंने पूछा।

"जी ?" वह युवक समझ न पाया कि मैंने ऐसा सवाल क्यों किया।

मैंने दोहराया, "बताइए, पानी किधर से किधर बहता है ? नीचे से ऊपर या ऊपर से नीचे ?"

"जी, ऊपर से नीचे।" युवक ने उत्तर दिया।

'चले जाइए आप लोग। मैंने जवाब दे दिया है। आप की आशंका निराधार है।"

"जी ?"

"क्या मुझे बताना पड़ेगा कि मेरी जमीन निचाई की तरफ है और गांव की तलैया ऊंचाई की तरफ ? क्या मेरी नीची जमीन से तलैया की की तरफ कोई स्रोता बह सकता है ?" मैंने खीझे हुए स्वर में पूछा।

जुलूस के लोग एक-दूसरों के चेहरे ताकने लगे। मेरी चुनौती-भरी

आंखें उन पर टिकी रहीं। मैंने कोई रहस्योद्घाटन नहीं किया था। मैंने उन्हें केवल एक बात याद दिलाई थी—ऐसी बात, जिसे वे अपनी उत्तेजना में भूल गए थे। मानव-स्वभाव कितना विचित्र है। उत्तेजना में मानव कितनी मामूली बातों पर भी ध्यान नहीं दे पाता !

मैंने अपनी चहारदीवारी के भीतर उस नन्ही-सी टेकरी की ओर इशारा किया, "वह रही 'पुरानी अम्मा' की कब्र। यदि अब भी आप लोगों को शक है कि 'पुरानी अम्मा' का जहर तलैया तक पहुंच रहा है, तो जाइए और कब्र को खोद डालिए। 'पुरानी अम्मा' के अवशेष निकालिए और फेंक दीजिए जहां जी चाहे—स्रोते का रास्ता साफ कर दीजिए ! लेकिन...अवशेषों से जो बदबू आएगी, उस की जिम्मेदारी मेरी न होगी।"

इन शब्दों के साथ मैं खिलखिला कर हंस पड़ा।

यहां आप को बता दूं कि मैं शायद ही कभी खिलखिलाता हूं। *खिलखिलाने जैसी स्थितियों में केवल मुस्करा देना ही मुझे पर्याप्त लगता* है। इसी लिए—जब भी मैं खिलखिलाता हूं—उस का प्रभाव हमेशा नाटकीय होता है। नाटकीय और रोमांचक ! खिलखिलाते समय अवश्य मेरी आंखों की कौंध इतनी तीव्र हो जाती है कि...

ज्यों ही मैं खिलखिलाया, जुलूस के आगे-आगे खड़े लोगों के होंठों पर झेंप-भरी मुस्कान आ गई। वे अपने-आप शर्मिन्दा थे और मैं चाहता था, वे केवल मुस्कराए नहीं। वे उसी तरह खिलखिलाएं जिस तरह मैं।

मैंने दोनों हाथ अपने सिर के ऊपर तक उठाते हुए इशारा किया—शुरू !

क्या शुरू ?

खिलखिलाहट शुरू !

एक क्षण तो जुलूस के लोग न समझे कि मेरा इशारा क्या है, लेकिन जब समझे तो उन्होंने मेरे आदेश का पालन तुरन्त किया। सब-के-सब हंसने लगे—हंसे नहीं, खिलखिलाने लगे। उन के मुंह खुल गए। दांत, जीभ और तालू नजर आने लगे और उन के गलों से खिलखिलाहट का हाहाकार

फूट पड़ा।

मैंने अपने हाथों से इशारा किया—और खिलखिलाओ···और अधिक खिलखिलाओ···

मेरा इशारा केवल इशारा नहीं था। वह आदेश था। सारा जुलूस हो-हो-हो करता हुआ खिलखिलाने लगा। हर व्यक्ति अपनी जगह से हट गया।

उन्हें खिलखिलाते छोड़कर मैं लौटा और अपने बंगले में वापस आ गया। मुझे नहीं मालूम, जुलूस कब बिखरा, किस मुद्रा में बिखरा। इतना अवश्य निश्चित था कि अब गांव वाले मुझे अपना शत्रु नहीं मान सकते थे। उन्होंने एक सामूहिक खिलखिलाहट में मुझे अपने साथ रखा था। यह कुछ ऐसी ही बात थी, जैसे शराब पीने के किसी सामूहिक आयोजन में मैं और वे साथ-साथ रहें।

मेरे और उनके बीच की दरार, अब, निश्चित रूप से मुंद गई थी। धन्यवाद 'पुरानी अम्मा' को !

किन्तु, मन के किसी कोने में मैं उदास भी था। एक लगभग स्थायी शत्रुता को समाप्त करने के लिए क्या मैंने 'पुरानी अम्मा' की लाश का बाकायदा उपयोग नहीं किया ? क्या लाशों का ऐसा उपयोग करना उचित है ?

इसी लिए, मन-ही-मन, 'पुरानी अम्मा' से मैं क्षमा-याचना कर रहा था। नत-मस्तक था मैं।

□

उसी 'पुरानी अम्मा' की कब्र खोदी जा रही है। फावड़े चल रहे हैं, जमीन उलीची जा रही है। मैं ठण्डी तटस्थता से देख रहा हूं। नत-मस्तक होने जैसी भावना मेरे मन में आज भी है, लेकिन भावनाओं की उग्रता से अनुभव करने की क्षमताएं मर चुकी हैं। मैं इतना बूढ़ा हो गया हूं कि मेरी आंखें कमजोर हैं, कान कमजोर हैं, टांगें कमज़ोर हैं—इसी तरह, मेरी समस्त भावनाएं भी कमजोर, फीकी और धुंधली···उम्र का दोष है। मैं क्या करूं।

'पुरानी अम्मा' का सारा मांस मिट्टी हो चुका है। कब्र इतनी पुरानी है कि अब उसे खोलने में किसी तरह की बदबू आने का खतरा नहीं।

मैंने अपनी विराट सम्पत्ति का अधिकांश हिस्सा बेच दिया है। बहुत-सा हिस्सा दान मे भी दिया है। बूढा आदमी जानता है कि सब-कुछ इस धरती पर ही छोड़ जाना है। इसीलिए वह बेचने-बेचने या दान देने लगता है। जवानों के साथ ऐसी बात नही। वे अपनी जिन्दगी और भविष्य के साथ इस कदर जुडे रहते हैं कि अपनी सम्पत्ति की रक्षा करने या उसे बढाने के लिए जान हथेली पर रख कर लड़ते हैं—हर तरह की आपाधापी करते हैं।

आपाधापी !

इस क्षेत्र मे मैंने, अपनी जवानी के दौरान, क्या-क्या नही किया ! बल्कि, यह कि इस दुनिया ने मुझे क्या-क्या नहीं करने दिया !

सब याद आ रहा है। कितना रोमांच ! बुढापे मे हर चीज फीकी हो चुकी होने के बावजूद यह रोमाच, अभी, कितना तेज लग रहा है !

जिस बगले की चहारदीवारी के भीतर 'पुरानी अम्मा' को दबाया गया था, वह बगला मैंने—चहारदीवारी और 'पुरानी अम्मा' की कब्र समेत—'हिलटॉप एलिमेण्ट्री स्कूल' को मिट्टी के मोल बेच दिया है। चूकि कब्र अब उनकी खरीदी हुई चीज है, उन्हें हक है कि कब्र के साथ वे जो जी मे आए, करें—लेकिन उन्होंने अपना व्यवहार अत्यन्त भद्रता का रखा है। कब्र खोदने से पहले उन्होंने बाकायदा मुझ से अनुमति मागी, ताकि मुझे किसी तरह का भावनात्मक आघात न पहुंचे। मैंने सहर्ष अनुमति दे दी, किन्तु निवेदन किया, 'कब्र खुदते समय मैं उपस्थित रहना चाहूंगा।'

यह मेरी भावुकता ही तो है कि कब्र खुदते समय मैं स्वयं की उपस्थित रखना चाहता हूं, लेकिन···क्रूर से क्रूर व्यक्ति भी भावुकता से पूरी तरह कभी नही छूट सकते। फिर, मैं उतना क्रूर हू भी तो नहीं।

बुढ़ापे में तो, अब, जरा भी क्रूर नहीं रहा हूं।

'पुरानी अम्मा' का पूरा अस्थिपंजर कब्र में से निकाला जा रहा है—'हिलटॉप एलिमेण्ट्री स्कूल' के विद्यार्थियों के निरीक्षण-परीक्षण के लिए। हाथी मरने के बाद भी सवा लाख का—इस कहावत को 'पुरानी अम्मा' का अस्थिपंजर खूब चरितार्थ करेगा।

मेरे बंगले को आग लगाने के लिए आए जुलूस को मैंने जब अपनी खिलखिलाहट द्वारा तितर-बितर किया था, तब भी 'पुरानी अम्मा' ने यही साबित किया था कि हाथी मरने के बाद भी सवा लाख का होता है।

न 'पुरानी अम्मा' मरती, न उसकी लाश उस जगह दफन की जाती जहां कि दफन की गई—और न ग्रामीणों ने वैसे जुलूस निकाला होता।

न वैसा जुलूस निकलता, न मेरे और ग्रामीणों के बीच एक नए, भद्र रिश्ते की शुरुआत होती! हम हमेशा परस्पर दुश्मनी ही पालते रहते।

जुलूस के तितर-बितर होने के अगले दिन गांव का पोस्ट-मास्टर मुझसे मिलने आया था। अतिथि-कक्ष में मैंने उसका जी खोल कर स्वागत किया—ऐसा स्वागत कि बेचारा झेंपने लगा। बोला, "मैं क्षमा-याचना करने आया हूं।"

"क्षमा याचना कैसी!"

"क्या आप हमें क्षमा-याचना का अधिकार भी न देंगे?"

"नहीं, नहीं, मेरा मतलब था—क्षमा-याचना की जरूरत क्या है।"

"असल में···कुछ तत्व आपके खिलाफ शुरू से सक्रिय रहे हैं। उन्हीं ने गांव वालों को भड़का दिया था।" पोस्ट-मास्टर का स्वर क्षमा-याचना का ही था, "मैं तो गांव वालों से हमेशा कहता रहा हूं कि यदि ओमप्रकाश जी यहां न हों, तो गांव का व्यापार आधा रह जाए। ओम जी के ही कारण यहां न्यूयार्क के सब से धनवान लोगों का आना-जाना है। इतनी रौनक है। वे धनी लोग इधर आते हैं, तो कुछ देकर ही जाते हैं।

गाव के चुगी विभाग की तो दसो उगलियां घी में हैं । किसको वदौलत ?"

"आप मुझे जरूरत से ज्यादा सम्मान दे रहे हैं ।"

"नही, ओम जी । असल मे हम इस योग्य ही नही हैं कि आपको सम्मान दे सकें । फिर भी···यदि अनुमति हो, तो···आपको सम्मानित करने का थोड़ा प्रयास हम अवश्य करें ।"

इसके उत्तर में मैंने कहा, "पोस्ट-मास्टर साहब ! मुझे आप भला मानस समझें, मेरे लिए यही बहुत है ।"

"लेकिन, सुनिए तो सही···कि गांव वालो ने आप को किस-किस तरह सम्मानित करने की सोची है ।"

मैं मुस्कराया, "अच्छा । बताइए ।"

"स्थानीय व्यापारियो ने एक 'चैम्बर आफ कामर्स' बनाया हुआ है । वे चाहते हैं कि आप इस चैम्बर के निदेशक बन जाएं ।"

"ओह, लेकिन मैं व्यापारी नही हू । व्यापारियो का कोई गुण मुझ में नही । निदेशक बनना तो दूर, मुझमे इस चैम्बर की मामूली सदस्यता के भी गुण नही हैं ।"

"मुझे भय है, ओम जी, कि शायद अपनी योग्यताओं का सही मूल्यांकन आप नही कर पा रहे। आप को सम्मानित करने का दूसरा प्रस्ताव है 'वालण्टिर फायर कम्पनी' की ओर से ।"

मैंने आश्चर्य से आंखें झपकाईं, 'फायर कम्पनी से मेरा क्या ताल्लुक ?"

"यह तो मैंने कम्पनी वालों से नही पूछा, किन्तु उन्होने मुझे जिम्मेदारी सौंपी है कि मैं आपको राजी कर लू ।"

"राजी ? किस बाबत ?"

"वालण्टिर फायर कम्पनी' आप को अपने वालण्टियरों मे शामिल करना चाहती है ।"

"लेकिन, बन्धु, मेरे पास इतना वक्त नही कि किसी आगजनी के समय कम्पनी के जवानो के कन्धे से कन्धा भिड़ा कर काम कर सकू ।"

"मैंने भी यह आशंका कम्पनी के सामने रखी थी ।" पोस्ट-मास्टर मुस्कराने लगा, "कम्पनी के अध्यक्ष ने कहा कि आग बुझाने के लिए

ओम जी को स्वयं आने की जरूरत ही क्या है ! कम्पनी के पास बहुतेरे स्वयं-सेवक हैं। वे सब सम्भाल लेंगे।"

"फिर''कम्पनी की मेरी सदस्यता का अर्थ क्या होगा ?" मुझे सचमुच कौतूहल हो आया था।

"आपको एक नन्हा-सा सिंह दिया जाएगा—लाल और सुनहरे रंगों से सजा। उसे आप अपनी कार के बोनेट पर लगा सकेंगे। इसके बाद, आप को अधिकार होगा कि चाहे जिस वक्त, चाहे जिस सड़क से, चाहे जिस गति के साथ गुजर जाएं – इस बात पर आप का चालान कभी न किया जाएगा कि आपने जरूरत-से-ज्यादा तेजी के साथ कार चलाई। यह सुविधा आपको न्यूयार्क शहर को छोड़ इस सम्पूर्ण जिले के हर गांव और कसबे में मिलेगी।"

'मुझे मानना पड़ेगा कि यह सुविधा रोमांचक है। तेजी से कार चलाना मेरा पुराना शौक रहा है।" मैंने कहा, 'वालण्टिर फायर कम्पनी' का प्रस्ताव मुझे सहर्ष स्वीकार है।"

"और 'चैम्बर आफ कामर्स' का ?"

"उस बारे में''अभी मैं संकोच में हूं।"

"मेरी निजी राय यह है, ओम जी, कि आपको ''चैम्बर आफ कामर्स' के निदेशक का पद सम्भाल लेना चाहिए। इससे, कुछ और नहीं तो, गांव वालों के साथ आपके सम्बन्ध तो बेहतर हो ही जाएगे। बुराई क्या है ?"

"हांआं, बुराई तो कुछ नहीं।"

"तो ? मैं आपकी स्वीकृत 'चैम्बर आफ कामर्स' तक पहुंचा दूं ?"

और मैं हामी भरता हुआ मुस्करा दिया था।

कुछ दिनों बाद 'चैम्बर आफ कामर्स' ने मुझे खजान्ची बना दिया। निदेशक के पद पर जितने भी दिन मैं रहा, मैंने रुचि ले कर काम किया। अपने व्यस्त कार्यक्रमों में से भी मैंने इस जिम्मेदारी को निभाने के लिए पर्याप्त समय हमेशा निकाला। खजान्ची बनने के बाद आसपास के क्षेत्रों की अनेक संस्थाओं की आर्थिक दशा मुझ पर प्रकट हुई। पास के ही

गाव पर्ल-रीवर के स्टेट बैंक की हालत काफी खस्ता थी। मौका देखकर मैंने ऐसा जाल बिछाया कि उस बैंक के अधिकाश शेयर मेरे पास आ गए और मैं उस का अध्यक्ष मनोनीत किया गया।

ये सारे झगड़े टण्टे मैंने केवल इसलिए अपने कन्धों पर लिए कि मैं आसपास के क्षेत्रों मे फैली अपनी बदनामी को धो डालना चाहता था। अपने इस उद्देश्य को पाने में मुझे आशा से अधिक सफलता मिली। सामाजिक और आर्थिक क्षेत्रों में मेरा महत्त्व इतना बढ गया कि अब कोई मेरे खिलाफ चू नहीं कर सकता था।

किन्तु मेरा मुख्य कार्य-क्षेत्र कोई और था। यह कार्य-क्षेत्र मेरे बगले के भीतर ही था। बगले से बाहर की सफलताओं ने मुझे बगले के भीतर भी नई सफलताए दी और मेरा व्यक्तित्व एक नई आभा से चमचमाने लगा।

यह सब किस के जोर पर हुआ ?

'पुरानी अम्मा' के जोर पर ही न ? यदि वह मरी न होती, यदि उसकी कब्र को लेकर गाव मे उतना हगामा न हुआ होता'''सफलताओं का यह सिलसिला कैसे शुरू होता ? मेरा ख्याल है, दुनिया के किसी व्यक्ति ने एक हब्शिनी की मौत से उतना लाभ न उठाया होगा, जितना मैंने उठाया।

उसी 'पुरानी अम्मा' की कब्र अब मैं बेच चुका हू। कब्र खुद रही है, 'पुरानी अम्मा' का अस्थिपजर बाहर निकाला जा रहा है, मैं देख रहा हूं'''स्वयं अपने इतिहास का अस्थिपजर !

□

अस्थिपजर स्कूल वाले ले गए हैं। मैं अपने बगले में लौट आया हूं। मेरे अनेक बगले हैं। स्कूल वालो को जो क्षेत्र मैंने बेचा है, उस क्षेत्र के बगले अब मेरे नही रहे, किन्तु अब भी मेरे पास अनेक बंगले हैं।

इन दिनों जिस बंगले मे रह रहा हूं, वहा लौट आया हू। मन कर रहा है—'वालण्टिर फायर कम्पनी' द्वारा दिए गए विशेषाधि का

उपयोग करूं। बूढ़ा हो गया हूं, मेरी सारी चेतनाएं मन्द हो चली हैं, लेकिन आज···अपनी रगों में यह कैसा अदम्य उत्साह अनुभव कर रहा हूं—ओहो !

मैं अपने गैरेज का ताला खोल रहा हूं।

गैरेज का दरवाजा खोलकर मैं अपनी प्रिय कार 'स्टैनले स्टीमर' के सामने खड़ा हूं। पुराना माडल है—भाप से चलता है।

'स्टैनले स्टीमर' भाग रही है। मैं बूढ़ा···सहसा जवान हो कर—उस का स्टियरिंग-व्हील इतनी खूबी से सम्भाल रहा हूं कि स्वयं चकित हूं। 'स्टैनले स्टीमर' की गति क्षण-क्षण बढ़ा रहा हूं। दाएं-बाएं की हर चीज़ तेज़ी से पीछे भाग रही है। फिसलती रेखाओं की तरह हर चीज अपना मूल आकार खो कर मेरे दाएं-बाएं से सनसनाती हुई गुजर रही है। मनुष्य की जिन्दगी भी इसी तरह सनसना कर गुज़र जाती है। पता ही नहीं चलता, कब मौत सामने आ खड़ी हुई; कब प्रकृति ने ऐलान कर दिया—जिन्दगी खत्म !

कार की गति ज्यों ही ज़िन्दगी की गति जैसी महसूस हुई है, मुझ पर उन्माद छा गया है। मैं इतनी तेज़ी से कार दौड़ाने लगा हूं कि यदि दुर्घटना हुई, तो मेरी चिन्दियां उड़ जाएंगी।

लेकिन क्या दुर्घटना आज ही होनी है ?

पीछे का दृश्य देखने के शीशे में सहसा गौर करता हूं—कोई कार मेरा पीछा कर रही है। किसकी कार ?

उंह, किसी की भी कार।

लेकिन वह पीछा क्यों कर रही है ? क्या वह पुलिस की कार है, जो मुझ पर आरोप लगाने वाली है कि मैं जरूरत-से-ज्यादा तेजी से कार दौड़ा रहा हूं ? ह, ह, ह···यदि वह कार पुलिस की ही है, तो···बेचारों को नहीं मालूम कि मुझे कैसा विशेषाधिकार मिला हुआ है।

नहीं। पुलिस को बाकायदा मालूम है कि मेरे विशेषाधिकार क्या हैं। वह कार पुलिस की नहीं हो सकती। फिर किसकी है ?

आंखें सिकोड़ कर उस आयताकार शीशे में देखता हूं, जिस में पीछा

कर रही कार अपने लघु रूप में बिम्बित हो रही है। वह न केवल पीछे लगी हुई है, बल्कि उसकी गति मुझ से अधिक है। इसीलिए, शीशे में उस का बिम्ब क्रमशः फूल कर बडा हो रहा है।

पहचान लेता हू। होठो पर मुस्कान छन आती है। मेरे पास अनेक कारें हैं। जो कार मेरा पीछा कर रही है, वह मेरी अपनी कार है। फर्क केवल इतना कि स्टैंनले स्टीमर को मैं स्वयं चला रहा हूं, जबकि पीछे लगी हुई उस कार का संचालन कोई और कर रहा है।

कौन ?

जिस तरह सहसा वह कार पहचान मे आई है, उसी तरह मैंने खतरे को भी सहसा पहचान लिया है। नही, मुझे यों दीवानों की तरह कार नही दौडानी चाहिए। देहाती सड़कों पर इतनी गति कभी भी कार के उलट जाने का कारण बन सकती है। आखिर में आत्महत्या करने नही निकला हूं। मुझ जैसे अनोखे, सफल व्यक्ति को आत्महत्या करने की जरूरत क्या है ? फिर क्यो मैं इतनी तेज़ी से कार दौड़ा रहा हूं ?

मैंने तुरन्त गति धीमी कर ली। आसपास की जिन चीजो ने अपनी मूल आकृतिया खो दी थी, वे क्रमशः अपनी आकृतियो को प्रकट कर रही हैं। लगता है, मैंने अपने-आप को नही थकाया ; आसपास की इन चीजों को थका दिया है। मेरे दाएं-बाएं से, उतनी भयंकर तीव्रता के साथ, सरक-सरक कर वे अस्त हो गई थी। अब मैंने अपनी कार धीमी कर ली है और ये चीजें अपनी मूल आकृतियों को हवा मे घोल देने के लिए मजबूर नही हैं। इसीलिए ये मेरा आभार मान रही हैं—गहरी सासें ले-ले कर।

मेरी गति कम होते ही पीछे लगी हुई वह कार झपट कर नजदीक चली आई है। मैंने कार रोक दी है। मेरी कार द्वारा उडाई गई धूल के बादल को चीर कर पीछे की कार सहसा प्रकट हुई है—बिल्कुल नए सिरे से प्रकट। वह रुक गई है। उसका दरवाजा खुलता है। मैं देखता हूं—ज्नान्दो उतर रही है।

ब्लान्शे—मेरी हसीन बीवी। उसका चेहरा फक है। मैं मुस्कराता हूं, "अरे, तुम हो।"

"आपको क्या हो गया था ? इतनी तेजी से कार क्यों दौड़ा रहे थे ? मुझे नौकरों ने बताया कि आप अचानक कार ले कर निकल भागे।"

"यों ही···मेरे मन में इच्छा जगी कि अपने जिन्दा होने का स्वाद चखूं।" मैंने उत्तर दिया है।

"कार इतने खतरनाक ढंग से दौड़ा कर ही जिन्दगी का स्वाद मिल जाता है ?"

"तुम इतनी घबराई हुई क्यों हो ? देखो, मैं सही-सलामत हूं।"

"ठीक है, लेकिन···यदि मैंने पीछा न किया होता, तो शायद आप रुकते ही नहीं। जाने क्या इरादा था आपका।"

"कोई 'इरादा' नहीं था"

"बहरहाल···अब जल्दी वापस चलिए।"

"क्यों ? जल्दी का कारण ?"

न्यूयार्क के कुछ पत्रकार आपसे मिलने आए हैं।"

"मुझ से ? क्यों ?"

"क्योंकि···वे एक ऐसा समाचार लाए हैं, जो दुःखद है।"

"दुःखद या सुखद, किसी भी समाचार को ले कर उन्हें मेरे पास आने की क्या जरूरत ? उन्हें अपने कार्यालयों में जा कर उन समाचारों के प्रकाशन की तैयारियों में जुटना चाहिए। यहां, इस गांव में, उन के लिए मेरे पास क्या है ? मैं रिटायर हो चुका हूं।"

"रिटायर होने वाले इतनी तेजी से कार नहीं दौड़ाते।"

"ओह !" मैं मुस्करा देता हूं।

"चलिए। अपनी कार आगे चलाइए। मैं पीछे पीछे आती हूं।"

हुं···ठीक है। चलो। किन्तु··· तुम ने बताया नहीं कि वह दुःखद समाचार क्या है।" मैंने पूछा है।

"थियोज का कत्ल हो गया है।"

"थियोज का कत्ल ?" मैं स्तब्ध रह जाता हूं।

"हां।"

"लेकिन..."

"पत्रकार जानना चाहते है कि इस कत्ल मे आप का किस सीमा तक हाथ है।"

"उन का दिमाग खराब है।"

"अपने आशय को वे सीधे-सीधे प्रकट नही करेंगे, लेकिन मैंने भाप लिया है—उन का आशय यही है।"

मैं दोहराता हूं, "उन का दिमाग खराब है...सचमुच खराब है।"

"जो भी है। चलिए।"

"उन से कह दो, ब्लान्शे, कि मैं इण्टरव्यू देने के लिए बिल्कुल राजी नही हूं।"

"इस मे उन का शक और बढेगा।"

"बढने दो। वे मेरा बाल भी बाका नही कर सकते। मैं शक्तिशाली हूं।"

"पत्रकारो का मुह कोई बन्द नही कर सकता। वे अमेरिका के प्रेसिडेण्ट को भी नही बख्शते।"

"हद-से-हद वे क्या कर सकते हैं? मेरे खिलाफ समाचार छापेंगे—यही न? मुझे परवाह नही है।"

"यदि आप रिटायर हो चुके हैं—याने, यदि सचमुच आप अपने जीवन मे शान्ति चाहते हैं, तो ''इन पत्रकारों से आप को अवश्य मिलना चाहिए।"

"मैंने कहा न, मैं इतना शक्तिशाली हूं कि वे मेरा कुछ नहीं बिगाड सकते। वे अमेरिकी प्रेसिडेण्ट को कुर्सी से उतार सकते हैं, लेकिन मेरा क्या करेंगे? मैं किसी कुर्सी पर नहीं हूं। मैं अपने निजी राज्य में हूं। सब से बड़ी बात—थियोज के कत्ल में मेरा कोई हाथ नहीं है। वास्तव मे थियोज के साथ मेरा सम्पर्क ही कई बरसों से कटा हुआ है।"

ब्लान्शे ने मुस्कराने की चेष्टा की है, "खुदा के वास्ते तुरन्त वापस चलिए और पत्रकारों से कह दीजिए कि आप का कोई हाथ नहीं है,

कि आप निर्दोष हैं। यदि उन के सामने आप ने यह प्रकट किया कि आप शक्तिशाली हैं और वे आप का बाल भी बांका नहीं कर सकते, तो यकीन जानिए—वे आप की शान्ति भंग करने में कोई कसर नहीं छोड़ेंगे।"

"मेरी ओर से तुम्हीं कह दो कि मेरा कोई हाथ नहीं है।"

"यदि मैं कह सकती, तो कह चुकी होती। आप का पीछा करने में मैंने स्वयं अपनी जान खतरे में डाली है। जीवन में कभी मैंने इतनी तेजी से कार नहीं दौड़ाई। प्लीज...मैं आप की बीबी हूं। आप को मेरा कहना मानना चाहिए।"

"अच्छा, ठीक है, किन्तु...थियोज़ का कत्ल कहां हुआ ?"

"तिब्बत में।"

"तिब्बत में ? थियोज़ वहां कैसे पहुंच गया ?"

"मैं कैसे बता सकती हूं ? मैं उतना ही जानती हूं, जितना आप।"

"कत्ल किस ने किया ? क्यों ?"

"मुझ से न पूछिए। मैं नहीं जानती, प्लीज।" ब्लान्शे की आंखें सहसा डबडबाने लगती हैं।

ब्लान्शे की हालत कितनी खस्ता है, यह मैंने अब जाना है। "नहीं, डार्लिंग, रोओ नहीं।" मैं पुचकारने जैसे स्वर में कहता हूं, "जो कहोगी करूंगा। चलो।"

मेरी कार न्याक गांव की ओर वापस जा रही है—न्याक, जहां का मैं अघोषित राजा हूं। ब्लान्शे की कार पीछे-पीछे।

इस बार मेरी गति इतनी नहीं है कि दाएं-बाएं की हर चीज़ अपनी मूल आकृति को हवा में घोल देने के लिए मजबूर हो जाए।

कत्ल...कत्ल...मेरे आसपास यही शब्द चमगादड़ की तरह मंडरा रहा है... थियोज़ का कत्ल...तिब्बत में थियोज़ का खात्मा...

□

चचेरे भाई थे या ममेरे ?"

"वह मेरा चचेरा भाई था, लेकिन इस से मूल प्रश्न का क्या सम्बन्ध ? यदि वह मेरा भाई हो ही नहीं, तब भी, मैं नहीं सोचता कि स्थिति में कोई अन्तर आएगा।"

"क्या आप को मालूम है कि थियोज ने न्यूयार्क में अपनी तन्त्र-विद्या के जोर पर एक महिला का इलाज किया था, जो इलाज के ही फलस्वरूप पागल हो गई थी ?"

"थियोज एक अच्छा तान्त्रिक और योगी था। मैं नहीं सोचता कि उस महिला के पागलपन का कारण थियोज के उपचार में छिपा हुआ था। कारण कुछ और रहा होगा। मुझे केवल इतना मालूम है कि थियोज की कोई मरीज पागल हो गई थी।"

"आप को यह भी मालूम होगा कि उस महिला के पति ने थियोज पर पच्चीस हजार डालर का दावा किया था।"

"जी हां, मुझे यह ज्ञात है—और मुझे यह भी ज्ञात है कि अदालत में थियोज की जीत हुई थी, हार नहीं।"

"ओम जी ! कानून की पेचीदगियां कुछ ऐसी है कि कई बार अपराधी को पहचान लेने के बावजूद अदालतें उसे छोड़ देने को मजबूर होती हैं।"

मैं नाराज हो जाता हूं, 'आप कहना क्या चाहते हैं ?"

"जो मूल प्रश्न हम पूछना चाहते हैं, वह यह है कि क्या सचमुच योग-विद्या अथवा तन्त्र-विद्या में कोई अहमियत है ? क्या यह जनता को धोखा देने का केवल एक माध्यम नहीं ? केवल शब्द-जाल नहीं ?"

"नहीं।" मैं चिढ़ गया हूं।

"क्या आप सोचते हैं, इस प्रश्न का उत्तर केवल एक शब्द में देना पर्याप्त है ?"

"हां।" मैंने फिर से केवल एक शब्द का उत्तर लौटाया है।

"यह न सोचिएगा कि हम आप पर कोई आरोप लगाना चाहते हैं, लेकिन..." वरिष्ठ पत्रकार ने शुरू किया है, "न्यूयार्क में जो अफवाह

फैली हुई है, उसे अवश्य आप के सामने रखा जाना चाहिए ।"

"कहिए।"

"अफवाह है कि···थियोज के कत्ल से आप काफी लाभान्वित हुए हैं।"

"सीधे-सीधे यही क्यों नहीं कहते कि कत्ल के पीछे मेरा हाथ माना जा रहा है ?" मैंने चुनौती की मुद्रा में भौंहें उठाई हैं।

"वास्तव में, इतनी बड़ी बात हम एकाएक कैसे कह देते ?" वरिष्ठ पत्रकार झेंप-सा गया है और अपनी गोद मे देखने लगा है। वह निगाह उठाता है, किन्तु मुझ से आंखें नहीं मिलाता। कमरे की दीवार की ओर देखते-देखते वह पूछता है, "क्या आप थियोज़ को अपने प्रतिद्वन्द्वी के रूप में नहीं देखते थे?"

मैं हंसता हू, क्यों वरिष्ठ पत्रकार ने यह प्रश्न दीवार से पूछा है, जबकि जवाब मुझे देना है ! कहता हू, "प्रतिद्वन्द्वी किस तरह ? योग और तन्त्र विद्या का अपना सस्थान मैं कब का बन्द कर चुका हू। थियोज यदि अपने सस्थान का बहुत विस्तार कर लेता, तब भी मेरे बन्द हो चुके सस्थान के साथ उस की क्या होड थी ?"

वरिष्ठ पत्रकार ने पुन. दीवार से पूछा है, "लेकिन···सुना गया है कि आप अपने सस्थान को फिर से प्रारम्भ करने की ठोस योजना बना चुके हैं। इसी लिए, थियोज़ का उत्थान आप के मार्ग मे रोड़ा बन सकता था।"

"ये सब निराधार बातें हैं। मुझे बहुत खेद है कि इन बातों से मैं बोर हो रहा हू।" मैंने लट्ठमार ढंग से कह दिया है।

वरिष्ठ पत्रकार चुप रह गया है। इण्टरव्यू की बागडोर अब एक युवक पत्रकार ने सम्भाली है। उस ने मेरी आंखों में घूरने का असफल प्रयास किया है। असफल होने पर उस ने दीवार की तरफ तो घूरना शुरू नहीं कर दिया, लेकिन उस की निगाहें मेरी गर्दन पर ठहरी हुई हैं। बात करते-करते वह मेरी गर्दन को घूर रहा है···कैसी कायरता ! हुह !

उस का प्रश्न मेरे कानों तक आता है, "भारत और तिब्बत की

अनेक रहस्यमय विद्याओं और परम्पराओं के जानकार होने के नाते आप… तिब्बत के उन डकैतों के बारे में भी जानते होंगे, जो हिमालय की कन्दराओं में छिपे रहते हैं और जो 'लहोली' नाम से पहचाने जाते हैं।"

"नहीं, मैं लहोली डकैतों के बारे में कुछ नहीं जानता। वास्तव में, डकैतों का नाम मैं जीवन में पहली बार सुन रहा हूं। क्या मैं पूछ सकता हूं कि डकैतों का जिक्र यहां क्यों छेड़ा जा रहा है ?"

"जिक्र इस लिए छेड़ा गया, ओम जी, कि…प्राप्त सूचनाओं के अनुसार, थियोज़ बनार्ड की हत्या लहोली डकैतों ने ही की है।"

"हिमालय में तिब्बती डकैत रहते हैं, इन की सामान्य सूचना मुझे है। विशेष कुछ नहीं जानता। थियोज़ का कत्ल हुआ है, इस की जानकारी आप ही लोगों ने मुझे दी। यह समाचार रेडियो पर नहीं आया, अखबारों में भी शायद प्रकाशित नहीं हुआ।"

"कल होगा। साथ में आप का इण्टरव्यू भी।"

"जो भी है…कत्ल का समाचार आप लोगों से ही मुझे मिला। लहोली डकैतों की बाबत भी मैंने आप ही से जाना। आप मुझ से क्या जानकारी प्राप्त करने आए हैं ? जानकारियां तो आप देंगे, क्योंकि जानकारियां मेरे पास नहीं, आप के पास हैं।"

"क्या हम जान सकते हैं कि योग और तन्त्र विद्या का अपना संस्थान आप ने बन्द क्यों कर दिया ?"

"संस्थान मेरा था। मर्जी हुई, बन्द कर दिया। आप लोगों को क्यों दिलचस्पी होनी चाहिए ?"

"हमारा ख्याल है कि आप का उत्तर सन्तोषप्रद नहीं। अफवाह है कि आप ने योग विद्या की आड़ में न्यूयार्क के कई पूंजीपति घरानों से काफी धन प्राप्त किया है। यह धन इतना अधिक था कि आप डर गए… शायद उस धन की प्राप्ति के लिए आप ने पूंजोपतियों पर अपने प्रभाव का दुरुपयोग किया। दुरुपयोग के बाद, आप स्वयं अपने से ही डर गए। इसी लिए आपने…"

"आप लोग पत्रकार हैं। जैसी चाहें, कल्पनाएं कर सकते हैं।"

"याने, आप इन अफवाहों को पूरी तरह नकारते हैं ?"

"ये अफवाहें इतनी महत्वहीन हैं कि मैं इन्हें नकारना भी आवश्यक नही समझता।"

"श्रीमती एन वाण्डरबिल्ट ने आप को जो अतुल धन राशि दी है…"

"उन्होंने मुझे कुछ नही दिया। जो दिया, मेरे संस्थान को दिया। अपनी मर्जी से दिया। दबाव में आ कर नही।"

"संस्थान बन्द होने के बाद क्या वह धन आप के निजी हाथों मे नही आ गया ?"

"नही। संस्थान घाटे मे चल रहा था। सब उसी में फुक गया।"

"क्या आप बताने की कृपा करेंगे कि भारतीय अगरबत्ती का एक पैकेट कितने डालर मे आता है ?"

"जी ?"

"यदि आप एक डालर में सौ पैकेट की बजाए एक पैकेट के लिए सौ डालर खर्च करेंगे—या, ऐसा खर्च अपने हिसाब मे दिखाएंगे, तो बड़े-बड़ा खजाना भी फुक सकता है।"

"अपना आशय आप साफ-साफ क्यो नही कहते ?"

"आशय यही है कि आप ने अपने संस्थान के पूंजीपति संरक्षकों के सामने जो हिसाब पेश किए होंगे, उन मे सच्चाई का बहुत ज्यादा अंश होना आवश्यक नही है।"

"मैंने कभी किसी संरक्षक को हिसाब नही दिया। संरक्षकों के रूप मे मैंने केवल उन्ही को स्वीकार किया, जिन्हें मुझ पर पूरा भरोसा था। मैं समझ नही पा रहा कि आप लोग किस सिलसिले मे मुझ से पूछताछ करने आए हैं। थियोज के कत्ल के विषय मे या मेरे संस्थान के बन्द होने के राज के विषय मे ?"

"हम आप से यों ही विभिन्न विषयो पर बात करने आए हैं—दोस्ताना ढंग की बातें…"

"मेरे पास 'यों ही बातें करने' के लिए वक्त नही। आशा है, आप

मुझे क्षमा करेंगे।"

"प्लीज, ओम साहब ! एक-दो प्रश्न और हैं।"

"कहिए।"

'क्या आप इस मान्यता का खण्डन करना चाहेंगे कि आप प्रसिद्ध डाक्टर क्लाड बर्नार्ड के पुत्र हैं ?"

मुझे आग लग गई है यह सुन कर। बड़ी मुश्किल से अपने को संयत रख कर मैंने उत्तर दिया है, "जिस बात का मैंने कभी मण्डन नहीं किया, उसी का खण्डन करना मुझे जरूरी नहीं लगता।"

"लेकिन खण्डन न करने का अर्थ यही है कि आप परोक्ष रूप से मण्डन कर रहे हैं।"

"मैं ऐसे निष्कर्षों से सहमत हूं।"

"आप ने अपना नाम डाक्टर पियरे आर्नेल्ड बर्नार्ड रखा हुआ है। यह नाम भ्रम पैदा करता है कि आप डाक्टर क्लाड बर्नार्ड के पुत्र हैं। आप ने स्वर्गीय डाक्टर बर्नार्ड की प्रसिद्धि का लाभ उठाना चाहा है। लोग आपको डाक्टर क्लाड बर्नार्ड का पुत्र समझते हैं।"

"मैं कैसे जान सकता हूं कि कौन मुझे क्या समझता है ? और यदि जान सकता होऊं, तब भी···मुझे परवाह करने की जरूरत क्या है ?"

"क्या यह सच है कि आप के पास डाक्टरेट की कोई डिग्री नहीं ? इसके बावजूद आप स्वयं को डाक्टर कैसे कहते हैं ?"

"किसी अमेरिकन विश्व-विद्यालय की डिग्री तो नहीं है मेरे पास, लेकिन मैं भारत में 'शास्त्री' की डिग्री ले चुका हूं। मुझे सन्देह है कि इस भारतीय डिग्री का सही मूल्यांकन शायद आप न कर पाएं। अमेरिका की पी० एच० डी०, एम० डी० और डी० डी० तीनों डिग्रियों को मिला कर यदि एक किया जाए, तब कहीं 'शास्त्री' का मुकाबला हो सकता है। 'शास्त्री' की डिग्री लेने के लिए मैंने भारत में अनेक वर्ष गुजारे हैं। यह सब मेरा निजी मामला है। आप लोग गुप्तचरों जैसी रुचि क्यों ले रहे हैं ?"

"जिस डिग्री का सम्बन्ध जन-साधारण के साथ हो, उसे निजी

मामला कैसे माना जाए ? हमें यह सूचित करते हुए अत्यन्त हर्ष है कि आपकी गणना इस दशक के सर्वाधिक रोमांचक व्यक्तियों में की जाने लगी है। आप का पूरा इतिहास खोद-खोद कर जनता के सामने रखा जाएगा। आप इससे बच नही सकते।"

मैं चुप रह गया हूं। वास्तव मे, मैं सन्नाटे में आ गया हूं। यदि सचमुच मेरा इतिहास खोद-खोद कर जनता के सामने रख दिया गया...

मगर मैं जान गया हूं कि मैं इन्हे रोक नही सकता।

मेरे पास केवल एक उपाय है—इन्हे सहयोग न दू। इन के सामने कुछ भी न बोलू। अब तक जो बोल चुका, आगे मुझे अपनी ज़बान बन्द रखनी चाहिए। मेरे हर शब्द को ये नए-नए रगो में प्रकाशित करेंगे। ये मेरी ऐसी-की-तैसी कर देंगे। विडम्बना यह है कि जब मैं एक भला-मानस हो गया हू—रिटायर हो चुका हू—तब ये मुझे बुरे-मानस के रूप में चित्रित करने पर आमादा हैं। ये मेरे बुढापे की शान्ति भंग कर देंगे।

मेरे सहयोगी और सरक्षक मुझ से तरह-तरह के प्रश्न पूछेंगे। उस वक्त मुझे केवल एक ही रुख अपनाना होगा। मैं पूछूगा, "जो-कुछ आप सुन या पढ रहे है, क्या उस पर आप को विश्वास है ?"

यदि इसके उत्तर में सामने वाले ने कह दिया, "हा" तो मैं कहूंगा, "फिर मेरे कहने के लिए रह क्या जाता है ? आपने विश्वास कर लिया—आप विश्वास करते रहिए। आप के विश्वास को तोड़ना मुझे आवश्यक नही लगता। अलविदा..."

और यदि सामने वाले ने कहा, "नही, मुझे विश्वास नही होता।" तो मैं कहूंगा, "जब आप को विश्वास नहीं है, मुझे बदनाम करने की चेष्टा के साथ जब आप की सहमति है ही नही—फिर मेरी ओर से कुछ भी कहा जाना अनावश्यक है। है या नही ? आप मुझे भला-मानस मानते हैं। मेरे लिए यह सौभाग्य की बात है। दूसरे चाहे जो कहते रहें, आप मेरे साथ थे और हैं—विश्वास है कि रहेंगे, धन्यवाद !"

इस प्रकार मैं सफाई देने के कष्ट से हर जगह बच जाऊंगा। जो मुझे बुरा समझेंगे, उनके सामने चुप। जो अच्छा समझेंगे, उनके सामने भी चुप। यह मुद्रा गुरुओं जैसी है। मैं गुरु हूं। था। रहूंगा।

गुरुओं जैसी मुद्रा अपना कर ही मैं अपने बुढ़ापे की शान्ति की थोड़ी-बहुत रक्षा कर सकता हूं।

वरिष्ठ पत्रकार के शब्द अब भी हवा में झूल रहे हैं, "आप का पूरा इतिहास...आप इससे बच नहीं सकते..."

और मैं चुप हूं।

मैंने अपनी ओर से कुछ भी घोषित नहीं किया है कि मैं बच सकता हूं या नहीं। मेरा चेहरा शान्त है। गुरुओं के चेहरे हर स्थिति में शान्त रहते हैं। रहने चाहिए।

एक प्रश्न...

दूसरा। तीसरा।

मैं चुप।

और मैं सामने ही खड़ा हूं। दरअसल, मुझे इन के सामने से हट जाना चाहिए, लेकिन हट नहीं रहा। इन्हें चिढ़ाना चाहता हूं। अच्छा लग रहा है।

"आप का एक नाम है ओमप्रकाश। भद्र सुन्दरियां आप को 'प्रिय गुरु' कहती हैं। भद्र पुरुषों के बीच आप 'ओम्नीपोटेण्ट ओम' के नाम से जाने जाते हैं। डाक्टर पियरे आर्नाड—यह नाम आप का है ही। क्या इनके अलावा भी आप का कोई नाम है?" वरिष्ठ पत्रकार दीवार की ओर देखता हुआ पूछ रहा है।

ठीक है, उस ने दीवार से पूछा है। दीवार जवाब दे। मैं क्यों दूं? मैं चुप हूं।

चुप। चुप। चुप।

सहसा, पत्रकार उठ पड़ते हैं, "बधाई, ओम जी! आप की खामोशी ने हमें हरा दिया।"

"मैं इस पर भी चुप।

युवक पत्रकार ने इस बार हिम्मत के साथ मेरी आँखों में देखा है। वह मुझ से कह रहा है, "ओके, मिस्टर पीटर कून। हम चलते हैं। फिर मिलेंगे।"

मेरा चेहरा तमतमा आना चाहिए—मुझे 'पीटर कून' कह कर सम्बोधित किया गया—लेकिन शान्त हूं। चुप हूं। अडिग हूं। आमने-सामने हू।

पत्रकार चले गए हैं। ब्लान्दो ने दरवाजा बन्द कर दिया है। मेरे नजदीक आती हुई बुदबुदा रही है वह, "वे आप का असली नाम जान चुके हैं।"

मैं अपनी खामोशी भंग करता हूं, "मेरा ख्याल है, वे सब-कुछ जान चुके हैं। आश्चर्य यही कि सब-कुछ जान चुकने के बाद भी वे क्या जानने के लिए मेरे पास आए।"

"वे आप को बदनाम करेंगे।"

"चुप और शान्त रहने के सिवा मेरे पास कोई उपाय नही।"

'लेकिन उन्होंने यह आखिर किस तरह जाना कि आपका असली नाम पीटर कून है···"

"बातें कभी भी छिपी नही रहतीं।" मैंने गहरी सास ली है।

"मुझे चिन्ता हो रही है। ये पत्रकार बहुत कमीने होते हैं।"

"असल में···सम्पूर्ण मानव जाति ही कमीनी है। जीवन में, अब तक, अपने-आप को मैं केवल एक मानव ही सिद्ध करता रहा हूं। मानवों जैसे एक मानव को मानवों के बीच बदनाम नही किया जा सकता।"

मेरी यह बात दार्शनिक स्तर की है। ब्लान्दो देखती रह गई है मेरी ओर। मेरी बात की गहराई ने उसे चकित-सा कर दिया है।

"आओ, ब्लान्दो।"

"कहां ?"

"आज मैं कुछ विशिष्ट चीजों मे आग लगा देना चाहता हूं। उन्हें अब तक मैंने सजो कर रखा, किन्तु अब···उन्हें भस्म करने का समय आ गया है।"

"कौन-सी चीजें ?"

"आओ भी। तुम स्वयं देख लोगी।"

बेहद सजे-धजे दो बड़े-बड़े कमरे मैंने और क्लान्शे ने पार किए हैं। फिर तीन जीने चढ़े हैं। हम पुस्तकालय में आ पहुंचे हैं। पुस्तकालय की कुछ ऐसी आलमारियां मैंने खोली हैं, जो अब कभी-कभी ही खुलती हैं। एक समय था, जब ये रोज खुलती थीं। योग और तन्त्र विद्या का मेरा संस्थान जब पूरे जोम पर चलता था, तब इन आल्मारियों की पुस्तकें आलमारियों में शायद ही कभी टिकती थीं। वापस आती-न-आती कि कोई-न-कोई फिर ले जाता। स्त्री-पुरुष का प्रेम जब अपनी सम्पूर्ण मांसलता के साथ प्रकट होता है, तो 'बाय-प्रॉडक्ट' के रूप में ऐसी पुस्तकें अवश्य जन्म लेती हैं। विश्व की सर्वाधिक सुन्दर गेट-अप वाली पुस्तकें यदि छपती हैं, तो इसी श्रेणी में। सर्वाधिक सुन्दर, सर्वाधिक कीमती। एक-एक सेट, कई-कई सौ डालर ! कुछ में केवल तस्वीरें हैं। कुछ में केवल पाठन-सामग्री। कुछ में पढ़ने और देखने— दोनों योग्य चीजें हैं। अपने संस्थान के भक्तों को मैंने पूरी लगन के साथ समझाया था कि स्त्री-पुरुष का शारीरिक प्रेम एक कविता की तरह है। इन आल्मारियों में ऐसी ही कविताएं भरी हुई हैं। मुझे 'माननीय गुरु,' 'प्रिय गुरु', 'प्रेम गुरु' आदि सम्बोधनों से पुकार-पुकार कर निहाल होने वालों को मैंने रेशा-रेशा समझाया था कि किस तरह शरीर की ही आधार-भूमि पर आत्मा और परमात्मा का मिलन होता है। भारत के खुजराहो-मन्दिरों में, शरीर की आधार-भूमि पर कैसी अमर कविता अंकित हुई है, आहा ! नर-नारी के शारीरिक प्रेम की कविता पहली बार यदि किसी देश में सचमुच सम्मानित हुई है, तो भारत में। दूसरे जितने भी देश हैं, सब भारत के शिष्य हैं। अथवा, शिष्य होने के भी योग्य नहीं हैं। भारत—तान्त्रिकों का देश। भारत—योगियों का देश। भारत—शारीरिक प्रेम की कविता का देश। भारत—वह देश कि जहां मैंने 'शास्त्री' की डिग्री हासिल की···

ह, ह, ह···

भारत कभी मैं गया ही नहीं। क्या गए बिना 'शास्त्री' की डिग्री मिल सकती है? मगर इतनी दूर तक कोई नहीं सोचता। लोग चाहते हैं कि कोई उन्हें झांसा दे। मैंने वही किया, जो लोग चाहते हैं। मैंने उन्हें झांसा दिया, वे मुझ पर न्यौछावर हो गए। मैंने उन्हें बताया—शरीर पवित्र है, शारीरिक प्रेम की कविता पवित्रतम है। उन्होंने समवेत स्वर में दोहराया—शरीर पवित्र है, शारीरिक प्रेम की कविता पवित्रतम है। मैंने उनसे कहा—मेरी परिक्मा करो, मेरे पैर छूओ, मेरे पैरों को कमल-सा पवित्र और पूज्य मानो। उन्होंने मेरी परिक्रमा की, मेरे पैर छूए, मेरे पैरों को कमल-सा पवित्र और पूज्य माना।

यह सब किस की बदौलत?

भारत की बदौलत ही तो!

भारतीयों ने काम के क्षेत्र में जितना भी अनुसन्धान किया है, सब इन आलमारियों में कैद है। भारी-भरकम ग्रन्थों के अंग्रेजी अनुवाद। काम-मूर्तियों के ज़िन्दा फोटोग्राफ। प्राचीन ग्रन्थों से चुन-चुनकर निकाली गई विचित्र काम-कथाएं। ज़िन्दा फोटोग्राफ केवल मूर्तियों के नहीं—स्वयं ज़िन्दा मनुष्यों के भी।

यह सब केवल भारत तक सीमित हो, सो नहीं। दुनिया का शायद ही कोई ऐसा देश हो, जहां का 'पतित पावन' साहित्य मैंने एकत्र न किया हो।

आलमारियों में से एक-एक पुस्तक खींच कर फर्श पर फेंक रहा हूं। इन को भस्म कर देने का समय आ गया है। ब्लान्दे कोने में खड़ी गुम-सुम देख रही है। वह मुझे रोक नहीं पा रही। फर्श पर पुस्तकों की टेकरी-सी खड़ी हो गई है।

टेकरी में आग लगाने से पहले मैं ब्लान्दे के नज़दीक आ कर बुद-बुदाता हूं, "जिस तरह लोग [illegible] मनाते हैं, उसी तरह [illegible] होने की तिथि का भी समारोह होना चाहिए। क्यों, क्या कहती हो?"

ब्लान्दे मेरी आंखों में ताक रही है। ब्लान्दे की [illegible] ताकने से मन नहीं भरता। आखिर वह मेरी [illegible] है।

मैं आगे कहता हूं, "इन 'पतित पावन' पुस्तकों में आग लगाना··· क्या यह मेरे रिटायर होने का विधिवत् समारोह नहीं ? एक निजी समारोह, जिस में केवल मैं और तुम मौजूद हैं ?"

ब्लान्शे न 'हां' कह पाती है, न 'ना'।

पुस्तकों की टेकरी के पास मैं उकड़ूं बैठ गया हूं। सिगरेट-लाइटर की नन्ही-सी लौ उस टेकरी में दाखिल हो रही है। मेरे हाथ ज़रा भी नहीं कांप रहे। नन्ही-सी लौ टेकरी में घुसने के बाद तेज़ी से इधर-उधर लपक रही है। टेकरी ने गन्धाना शुरू कर दिया है। धुएं की लकीरें उठने लगी हैं जगह-जगह से···

ब्लान्शे और मेरे बीच धुएं की लकीरें हैं—गर्म कांपती लकीरें। उन लकीरों के आर-पार मैं ब्लान्शे को देख रहा हूं। ब्लान्शे का पूरा आकार सिहर रहा है, जिस तरह सूखने के लिए डाले गए कपड़े हवा में कांपें···

धुएं की उन कांपती लकीरों ने मुझे अकस्मात् भूतकाल के गर्त में धकेल दिया है। उस रोमांचक गर्त में मैं गिर रहा हूं···गिरता जा रहा हूं···

□

कच—कच—कच—मेरी कैंची चल रही है। मैं मार्टिमर हरगिस की हजामत बना रहा हूं।

मैं नहीं जानता, मार्टिमर हरगिस की सामाजिक या आर्थिक स्थिति क्या है, लेकिन, जाने क्यों, उसे देखते ही महसूस होता है, यह आदमी अब तक मेरा दोस्त क्यों नहीं बना ? आश्चर्य !

यही तो है 'ग्रूप साइकालाजी' ! किसी को देखने मात्र से आप महसूस करते हैं कि यह व्यक्ति आप के ग्रूप में है, कि इस के साथ आप की पट सकती है। इसी तरह, किसी अन्य को देखने मात्र से, अज्ञात प्रेरणावश, आप जान जाते हैं कि यह व्यक्ति आप के ग्रुप में नहीं, कि इस के साथ कभी आप की पट नहीं पाएगी।

मार्टिमर हरगिस को मेरा हाथ बहुत पसन्द है। जब भी हमारे

सैलून में आता है, वह मुझ ही से हजामत बनवाता है। यदि मैं व्यस्त होऊं, तो मेरे खाली होने का इन्तजार करता वह बैठ जाता है। किसी अन्य नाई की कुर्सी में बैठना उसे किसी सूरत मे गवारा नही।

मेरी और मार्टिमर हरगिस की बातो का दायरा अभी बहुत सीमित है। वह आता है, तो मैं बहुत विनम्रता से कहता हूं, "आइए, साहब—" जब वह जाने को होता है, मैं उसी विनम्रता से आग्रह करता हूं, "फिर आइएगा, साहब।"

जिस दौरान वह कुर्सी में सिर झुका कर बैठा होता है और मैं अपनी कैंची चलाता हूं, मेरे और उस के बीच कभी मुहल्ले की लड़कियों की या मौसम के अच्छे या बुरे होने की बातें हो लेती हैं।

□

क्रमशः स्पष्ट हो रहा है कि मार्टिमर हरगिस कितना रसिक व्यक्ति है। मेरी और उस की दोस्ती, पहले की तुलना मे, अब बहुत घनी है।

हर महीने, नियमित रूप से, मेरी ही कुर्सी में बैठ कर हजामत करवाता हरगिस ! उस ने मेरे सामने प्रकट कर दिया है कि वह अपनी आर्थिक स्थिति से सन्तुष्ट नही। यही असन्तोष स्वयं मेरे मन मे भी है, जिसे मैंने भी हरगिस के सामने उजागर कर दिया है।

"बरसों-बरसो से मैं संघर्ष कर रहा हूं।" हरगिस ने कहा, "लाख-लाख अनुभव लिए हैं—जाने कितने क्षेत्रों के अनुभव। हर जगह एक ही बात देखी—मेहनत का कोई अर्थ नहीं। योग्यता की कोई कीमत नही। हर जगह केवल चालबाजी चाहिए।"

"यही दुनिया की रीत है। क्या करें।" मैंने सहमति मे सिर हिलाया।

"सोचता हूं, दुनिया को दुनिया की रीत से ही जवाब दिया जाए।"

"किस तरह, मिस्टर हरगिस ?"

"मनुष्य का स्वभाव अजब है। मैं दावे के साथ कह सकता हूं कि दुनिया का सब से बुद्धिमान प्राणी होते हुए भी मनुष्य बेवकूफ बनने के

लिए तैयार बैठा है। लोगों को बेवकूफ बनाने की कला जिसे आती है, उस के पौ बारह हो जाते हैं।"

मैंने गहरी सांस ली, "नाई का पेशा कितना बुरा है। इस में जनता को बेवकूफ बनाने की कोई गुंजाइश ही नहीं !"

"लेकिन, पीटर !" हरगिस ने मेरी आंखों में तकते हुए कहा, "तुम्हारा पेशा बड़े सांकेतिक ढंग से निरन्तर एक ऐसी सीख देता है, जिस की कीमत नहीं आंकी जा सकती।"

"कौन-सी सीख ?"

"तुम जनता को अपनी कैंची से मूंड़ते हो न ?"

"हां। तो ?"

"क्या तुम्हारी कैंची ने एक बार भी तुम से नहीं कहा कि जनता को कैंची के बिना भी मूंड़ा जा सकता है ?"

मैं देखता रह गया उस की ओर, "मिस्टर हरगिस···आप का इशारा रोमांचक है। मैं नहीं जानता कि जनता को बिना कैंची के मूंड़ना किस तरह शुरू किया जाए, लेकिन इस से असहमत होने का सवाल ही नहीं है कि मूंड़ने के लिए कैंची-उस्तरा कतई ज़रूरी नहीं।"

"ज़बान ! यह आदमी की ज़बान ही है, पीटर, कि जिस के ज़ोर पर वह सारी दुनिया को चुटकियों में मूंड़ सकता है···"

"क्या आप के मन में···कोई योजना है ?"

"बहुत स्पष्ट कोई योजना नहीं है, लेकिन मैं···किसी ऐसे साथी की तलाश में हूं, जिस की आंखें वैसी हों। जैसी तुम्हारी हैं।"

"मैं समझा नहीं।"

"कई दिनों से मैं इस कशमकश में हूं, पीटर, कि तुम्हारी आंखों का मूल्यांकन करने में मुझ से कोई भूल तो नहीं हो रही ? तुम्हारी आंखों में एक विचित्र सम्मोहन शक्ति है। जिस तरह आदमी अपनी ज़बान से बड़े-बड़ों को मूंड लेता है, उसी तरह आदमी अपनी आंखों के तेज से बड़े-बड़ों को झुका सकता है।"

मैं झेंप कर हंसने लगा, "वैसा तेज मेरी आंखों में थोड़े हो सकता

है।"

"तुम जिस पेशे में व्यस्त हो, उस में'''गुंजाइश नहीं है कि अपनी आंखों के तेज पर तुम एक बार भी गौर कर सको, लेकिन '''सच मानो, पीटर, तुम्हारी आंखों में देखने से ही लगता है—तुम मसीहा हो। गुरु हो। स्वामी हो।"

"अरे !" और मुझे हंसी आ गई थी। झेंप और प्रसन्नता की हंसी।

"पीटर, एक बात बताओ।"

"क्या ?"

"यदि मैं कोई ऐसी योजना बनाऊं, जिस में तुम्हें अपना पेशा छोड़ देने की नौबत आ जाए, तो'''ऐसा साहसिक कदम तुम उठा लोगे न ?"

"हरगिस साहब ! इस धन्धे में कौन-सी सोने-चांदी की लूट मची हुई है, जो इसे छोड़ने में मैं हिचकने लगूंगा ? दो जून रोटी मिल रही है। बस। सो, दो जून रोटी तो किसी भी धन्धे में मिल जाएगी।"

"ठीक है, पीटर'''मैं शीघ्र ही कोई योजना तैयार करूंगा।" मार्टिमर हरगिस की स्वप्निल आंखें चमकने लगीं, "ईश्वर ने चाहा तो, बल्कि'''यदि स्वयं हम दोनों ने चाहा तो'''जल्द ही असीम दौलत हमारे चरण चूम रही होगी।"

"ओह ! सच ?"

"मैंने तय कर लिया है, पीटर'''अपनी योग्यता का ज़ोर कभी नहीं आज़माऊंगा। कभी तन-तोड़ परिश्रम की शेखी नहीं बघारूंगा। अब तो मुझे सिर्फ चालबाज़ी करनी है। लोगों के पास बहुत धन है। धन लोगों की तिजोरियों में सड़ रहा है। लोग इतने धनवान हैं कि उन्हें मालूम ही नहीं कि उन के पास कुल कितनी रकम है। इसी लिए, यदि उनकी असीम धन-राशि में से थोड़ा-बहुत हम ले उड़ें, तो उन्हें क्या फर्क पड़ेगा ? फर्क पड़ना तो दूर, उन्हें पता भी न चलेगा। है न रोमांचक बात ? धन में संड़ाध कभी पैदा नहीं होनी चाहिए। यदि होती है, तो इस का दोष दोनों पर है। एक उन पर, जो धन को अपने पास रोकते और सड़ने देते हैं। दूसरे उन पर भी, जो धन के रुकने और सड़ने की अनुमति

"अनुमति ?"

"हां, पीटर। यदि हम रूके हुए और सड़ते जा रहे धन को बाहर नहीं निकालते, तो धन के सड़ने की ज़िम्मेदारी हम पर भी उतनी ही है, जितनी धन को रोकने वाले की। हम उन्हें रोकने क्यों दें ? यदि हम अड़ जाएं कि नहीं रुकने देंगे, तो वे कैसे रोकेंगे ? ऊपर-ऊपर से तो लगेगा कि वे रोक रहे हैं, लेकिन भीतर-भीतर से हम धन को निकालते रहेंगे। कैसे निकालते रहें, केवल यही सोचना है। हमें अनुमति नहीं देनी चाहिए कि धन रुके। धन का धर्म है कि वह घूमता रहे।"

"मैं आप के साथ हूं, मिस्टर हरगिस, किन्तु एक शर्त पर।"

"क्या ?"

"आप को भूल जाना होगा कि मैं कभी नाई रह चुका हूं।"

"मैं हमेशा अपनी बराबरी की इज्जत दूंगा, पीटर।"

"तभी निभ सकेगी।"

"ज़रूर निभेगी।"

"योजना कब तक बन जाएगी ?"

"क्यों न हम अगले हफ्ते मिलें ?"

□

अगले हफ्ते, स्वयं मार्टिमर हरगिस के कमरे में मुलाकात हुई। बढ़िया शेम्पेन का पेग उस ने मेरे सामने रख दिया। मैं सभ्यता से चुस्कियां लेने लगा। हरगिस ने कहा, "सोने की चिड़िया' का नाम सुना है ?" और हरगिस ने भी चुस्की ली।

"हां। भारत को 'सोने की चिड़िया' कहा जाता था। क्यों ?"

"भारत अब भी 'सोने की चिड़िया' है।"

"वह कैसे ? भारत को तो अंग्रेजी शासन में ऐसा लूटा जा चुका है कि उस के पास लुटिया भी नहीं बची है।"

"तब भी...भारत 'सोने की चिड़िया' है...एक विशेष सन्दर्भ में।"

"मसलन ?"

"भारत तान्त्रिकों और योगियों का देश है या नहीं ? भारत की इस विद्या को कोई नही लूट सकता।" और मार्टिमर हरगिस के होंठों पर मुस्कान खेलने लगी।

"मगर इस का हम से क्या ताल्लुक ?"

"हम से, हमारी योजना से, इस का गहरा ताल्लुक है, पीटर।"

"योजना स्पष्ट तो हो !"

"मैंने भारत की इन विद्याग्रो के सम्बन्ध मे, इस बीच, कई पुस्तकें चाट डाली हैं।" क्यो न हम घोषित करें कि हम भारत के तान्त्रिकों और योगियो के प्रतिनिधि हैं ?"

"और फिर ? इस घोषणा के बाद ?"

"फिर क्या ! हमारा व्यवसाय शुरू ! बिना उस्तरे और कंचो के लोगों की मुंडाई शुरू।"

"तुम कहते हो, हरगिस, कि मेरी आखो के तेज में अद्भुत सम्मोहन शक्ति है। मान लो, सचमुच हम इस तरह का व्यवसाय शुरू करते हैं। उस में मेरी आंखों की सम्मोहन शक्ति किस तरह इस्तेमाल होगी ?"

"यह अभी से कैसे कहा जाए ? ज्यों-ज्यों हमारे प्रयोग आगे चलेंगे, त्यों-त्यो हम और ज्यादा सिद्धहस्त होते जाएगे।"

"कानूनी पेचीदगिया ?"

"कानून वालो की हम ऐसी-की-तैसी कर देंगे, क्योकि योग और तन्त्र विद्या क्या है, इसे वे कभी नहीं समझ सकेंगे। स्वयं हम ही उन्हें समझाएंगे, फिर पूछेंगे कि आखिर किस अपराध में आप हमें दण्डित करने आए हैं ? जिसे आप अपराध कह रहे हैं; वह तो, योग और तन्त्र विद्या के अनुसार अपराध है ही नही।"

"खिचडी आगे पकाई जाए।" और मैं कुटिलता से मुस्कराने लगा था। मैं—पीटर कून ! जो इओवा में पैदा हुआ—१८७५ में। विद्यार्थी जीवन मे जो बहुत अच्छा खिलाड़ी रहा। केलिफोर्निया में जिस ने वृक्षों पर से फल तोडने का काम, हास्यास्पद तनख्वाह पर, कई महीनों तक किया। सालमन मछलियों के डिब्बे बन्द करने का काम भी जिस ने

अपमानजनक तनख्वाह पर स्वीकार किया···फिर नाई की दूकान··· कच-कच चलती कैंची···आइए, साहब !···फिर आइएगा, साहब !··· सुनो, पीटर, क्या तुम ने कभी सोचा है कि बिना कैंची चलाए भी जनता का मुण्डन किया जा सकता है ? ह, ह, ह ! आंखों का तेज···ज़बान की शक्ति···

□

सैन फ्रान्सिस्को ! हम ने 'वसन्त अकादमी' की स्थापना की है। अखबारों में आज हमारा पहला विज्ञापन छपा है···

खुशखबरी ! खुशखबरी ! खुशखबरी !

स्वयं को पहचानिए।

आत्मा की खोज करिए।

आत्म-सम्मोहन की कला सीख कर अपनी

अतुल संकल्प-शक्ति का सही उपयोग करिए।

विज्ञापन के नीचे, निदेशकों के रूप में दो नाम···मार्टिमर के हरगिस और डा० पियरे आर्नल्ड बर्नार्ड 'शास्त्री'।

दावा···भारत में अनेक वर्षों तक योग और तन्त्र विद्या के क्षेत्र में अनुसन्धान करने के बाद ही 'वसन्त अकादमी' की स्थापना की गई है। पश्चिमी जगत में अपनी तरह का पहला मौका। तुरन्त सदस्यता ग्रहण कीजिए। पश्चिमी दुनिया की चमचमाती भौतिकता की खोखली सूरत देखने का एकमात्र अवसर···

सब से नीचे—'वसन्त अकादमी' का पूरा पता।

पते के बाद—अन्तिम पंक्ति में, नन्हें-नन्हें व सुन्दर अक्षरों में, 'वसन्त अकादमी' का प्रथम अधिवेशन किस तारीख को होगा, इस का ऐलान !

यह विज्ञापन कई अखबारों में एक-साथ प्रकाशित हुआ है। उन सभी अखबारों की एक-एक प्रति हम ने खरीदी है। रिहायश के लिए जो छोटा कमरा मैंने और हरगिस ने किसी तरह प्राप्त किया है, उस के सोफे पर मैं अधलेटा हूं, चुरुट पी रहा हूं। पूज्य शास्त्री जी चुरुट पी

रहे हैं । आहा !

पास के स्टूल पर हरगिस बैठा है । तल्लीनता से अखबारों को पलट रहा है । 'बसन्त अकादमी' के विज्ञापनों को बार-बार पढ़ता है । सब विज्ञापन एक-जैसे ही हैं, लेकिन उन्हे वह इस तरह पढ़ रहा है, मानो सब मे अलग-अलग दावे किए गए हों, अलग-अलग ऐलान हुए हो ।

मैंने भी उन विज्ञापनों के प्रति इसी तरह का उन्माद अनुभव किया था, किन्तु मैं जल्दी उबर गया हूं । इसी लिए तसल्ली से लेट कर चुरुट पी सक रहा हू । हरगिस अभी तक नही उबर पाया । उबर जाएगा । थोडा आगे-पीछे से क्या फर्क पड़ता है ।

हरगिस को जम्हाई आती है । वह बुदबुदा उठता है, "हरि-ओम'''"

मैं नही जानता कि 'हरि-ओम''' का सही-सही अर्थ क्या है, लेकिन हरि-ओम' के एक हिस्से 'ओम' का अर्थ अवश्य जानता हूं । 'ओम' याने—डा० पियरे आर्नल्ड बर्नार्ड 'शास्त्री' ।

'शास्त्री' की डिग्री देते समय भारतीय तान्त्रिको ने डा० पियरे आर्नल्ड बर्नार्ड से निवेदन किया था कि अब तो आप इतने बड़े तान्त्रिक और योगी हो गए—क्यो न आप अपना नाम बदल लें ? यदि आप का नाम भारतीय शैली का हो जाए, तो सोने मे सुहागा ! लिहाजा, भारतीय तान्त्रिक ने डा० पियरे आर्नल्ड बर्नार्ड का नामकरण किया—'ओमप्रकाश शास्त्री'

इसी लिए 'ओम' याने—मे ! आक्छी !

"क्यों ? क्या हुआ ? छीक कैसे आई ?" हरगिस की निगाहे मेरी ओर उठ गई हैं ।

"यह छीक सचमुच की नही थी ।" मैंने उत्तर दिया है, "योग विद्या के ज़ोर पर इसे सप्रयास आमन्त्रित किया गया था ।"

"क्यो ?"

क्योंकि छीक आना भारतवर्ष मे अशुभ का प्रतीक है ।"

"आज हमारे विज्ञापनो का श्रीगणेश हुआ है । आज का दिन अशुभ कैसे ?"

"हमारे लिए न सही, लेकिन जो देवी-देवता इन विज्ञापनों के शिकंजे में आएंगे, उन के लिए आज का दिन कितना अशुभ है, सोचो।"

"अच्छा, तो तुम्हारी छींक उन के लिए थी ! जरा फिर से !"

"आक्छीं !"

सहसा हम दोनों हंसने लगे हैं—इतने अधिक कि लोटपोट हो गए हैं।

उस समय मुझे गुमान नहीं था कि अवसर हंस पड़ने की मेरी आदत थोड़े अरसे में ही लुप्त हो जाने वाली है। जो बहुत बड़ा गुरु होता है, व बार-बार नहीं हंसता। सचमुच मुझे कल्पना नहीं थी कि थोड़े अरसे में ही मेरा गुरुत्व कितना बढ़ जाने वाला है...

□

रिहायश और 'वसन्त अकादमी' के बीच हम ने काफी फासला रखा है। 'वसन्त अकादमी' तक पहुंचने में हमें देर तो लगती है, किन्तु जब जब कोई पोलम्पोल वाला व्यापार शुरू किया जाए, तो उसे अपनी रिहायश से दूर रखने में ही गनीमत होती है।

मेरा दिल धड़क रहा है। जरूर यही हालत हरगिस की भी है। 'वसन्त अकादमी' का पहला अधिवेशन आज ही तो है। योग और तन्त्र के व्यवहार का जो क-ख-ग भी नहीं जानते, जिन का सारा ज्ञान केवल किताबी रटन्त-विद्या ही है—वे...मैं और हरगिस...आज दो महान् गुरुओं के रूप में अवतरित होने वाले हैं। गुरुओं के दिल नहीं होते क्या ? यदि होते हैं, तो वे धड़क भी सकते हैं। इसी लिए मेरी हरगिस की छाती में धुकधुक मची हुई है।

विज्ञापनों के प्रभाव में इतने ज्यादा आवेदन आए कि स्वयं हम ही ने उतनी आशा नहीं रखी थी पश्चिमी देश भौतिकता की मार के कारण, दरअसल, इतने ज्यादा परेशान हैं कि अ-भौतिकता के नाम पर, आध्यात्म और ईश्वर के नाम पर वह सब कुछ भी धांधली चलाई जा जा सकती है। आध्यात्म और ईश्वर की बाबत, सम्मोहन अथवा योग विद्या की बाबत आप कुछ भी कहिए—यदि आप को कहने का ढंग

आता है, तो कोई इस का परीक्षण नही करने जा रहा कि आप ने जो कहा, उस का आधार भी है या नही । लोग मन्त्र-मुग्ध से सुनते रह जाते हैं ।

इस बात से कोई इन्कार नही कर सकता कि धार्मिक परम्पराएं अब भी यदि सुरक्षित बची हुई हैं, तो पूर्वी देशों में—जिन मे भारत का नाम सबसे आगे है । पश्चिमी जनता भारत को अब भी अनोखा, आध्यात्मिक और जादुई देश मानती है । इसी लिए पश्चिमी जनता के बीच, भारतीय चमत्कारो के नाम पर, आप अपना उल्लू बड़ी आसानी से सीधा कर सकते हैं ।

अपना उल्लू सीधा करने के लिए लोगों को उल्लू बनाना ! जय 'बसन्त अकादमी' !

अनेकानेक आवेदनो मे से हम ने केवल उन्ही नाम-पतो को छांटा, जिन के रंग-ढंग हमें धनवानो जैसे महसूस हुए । धनवानो के तो 'लेटर-हेड' से ही सब जाहिर हो जाता है··· जैसा कि स्वाभाविक था, ईश्वर और आत्मा की खोज के लिए महिलाए ही ज्यादा उत्सुक थी । पुरुषो की तुलना में महिलाओ के आवेदन कम-से कम तीन गुने थे । इसी लिए, हम न चाहते, तब भी···'बसन्त अकादमी' के सदस्यो के बीच महिलाएं ही अधिक दिखाई पडती ।

जब कि हम तो बाकायदा चाहते थे कि महिलाएं ही बड़ी-से बडी संख्या में सदस्यता ग्रहण करें ।

आवेदन के बाद, साक्षात्कार के लिए बुलौवा । साक्षात्कार में पर्याप्त योग्यता प्रमाणित होने के बाद ही विधिवत् सदस्यता····'बसन्त अकादमी' में कोई भी ऐरा-गैरा नत्थू-खैरा दाखिल नही हो सकता था !

कई आवेदन इतने फूहड़ थे कि उन्हें भेजने वालो को प्रथम साक्षात्कार के लिए भी बुलाना आवश्यक नही था । चुनिन्दा व्यक्तियों को तारीख दे दी गई थी, जब वे प्रथम परिचय और साक्षात्कार के लिए अपने-आप को पेश करते । जो थोड़े-बहुत गलत लोग आमन्त्रित हो गए होंगे, वे इस वक्त छन जाएंगे । हमें गरीबों की जरूरत नही । इसी

तरह, हमें चतुर व्यक्तियों की भी ज़रूरत नहीं। चतुर व्यक्ति उन सारी बातों को आसानी से ग्रहण नहीं करेंगे, जो हम बताने या करने जा रहे हैं...

साक्षात्कार के नियत समय से काफी पहले ही मैं और हरगिस 'वसन्त अकादमी' पहुंच गए हैं। एक-दूसरे की ओर हम ने आत्म-विश्वास बढ़ाने वाली मन्द मुस्कानें फेंकी हैं—मानो हम किसी दुश्मन के इलाके में हवाई-छतरी से उतरने वाले हों!

आमन्त्रित व्यक्तियों ने पधारना शुरू कर दिया है। एक अत्यन्त सुन्दर युवती 'वसन्त अकादमी' में सचिव के पद पर नियुक्त की जा चुकी है। वही युवती सब का स्वागत कर रही है, सब को यथा-स्थान बिठा रही है और हरगिस भीतरी कक्ष में है। नेताओं, गुरुओं और देवताओं आदि को अपने भक्तों के सामने कभी-कभी ही प्रकट होना चाहिए—पूर्व-घोषणा करवा कर। तभी उन की सही सम्मान-रक्षा हो पाती है।

सम्मान-रक्षा का दूसरा तरीका है—धन का परदा। यदि दो डाक्टरों में से एक की फीस पांच डालर और दूसरे की पचास डालर है, तो पचास डालर वसूल करने वाला ही बड़ा माना जाएगा—चाहे योग्यता में सचमुच बड़ा हो या न हो। ये नियम अन्य क्षेत्रों में भी बराबर लागू होते हैं। इसी आधार पर 'वसन्त अकादमी' का प्रवेश शुल्क बहुत तगड़ा रखा गया है। प्रवेश के बाद, प्रति मास, जो फी नियमित रूप से देनी होगी, वह अलग से है। वह भी कम तगड़ी नहीं।

धन का यह परदा गरीब (अन्य शब्दों में, फूहड़) जनों को 'वसन्त अकादमी' में घुसने नहीं देगा। दूसरा लाभ—मैं और हरगिस "हरि ओ...हरि ओम..." करते हुए टकसाल चलाएंगे।

जिस भीतर कक्ष में मैं और हरगिस बैठे थे, वहां एक नन्ही-सी खिड़की में एक-तरफा शीशा लगा हुआ था। याने, भीतरी कक्ष में बैठे-बैठे हम नए-नए आने वालों को देख सकते थे, किन्तु वे हमें नहीं।

एक-तरफा शीशा सचमुच हमें रोमांच से भरे दे रहा था। युवतियां, प्रौढ़ाएं, किशोरियां—सब के चेहरों पर कैसा धार्मिक कौतूहल, आहा,

और सब की पोशाकें कितनी कीमती ! "हे भगवान !" हरगिस ने गहरी सांस ली, "इन देवियों के सेण्ट की गन्ध यहां तक आ रही है—दीवारों को भेद कर !"

हरगिस केवल सेण्ट की गन्ध पा रहा था, जबकि मैं तो उन देवियों की शरीर-गन्धी ही पाने लगा था—आदि-गन्ध ! नर को आमन्त्रित करने वाली मादा-गन्ध ! लेकिन, होशियार, ओमप्रकाश जी ! अभी इस मंज़िल तक पहुंचने में बहुत देर है'''वसन्त अकादमी' का आज पहला ही दिन है। समझे, शास्त्री जी ? योगी महोदय ? तान्त्रिक महाराज ? हरि ओम ! आक्छी !

गनीमत कि इस छींक की आवाज़ मैंने रूमाल में ही रोक ली।

युवक बहुत कम थे, किन्तु प्रौढ़ पुरुष काफ़ी सख्या में आए। इन पुरुषों की आंखें बार-बार कहां फिसल रही हैं ? क्या आमन्त्रित महिलाओं पर नहीं ? क्या 'वसन्त अकादमी' की हसीन सेक्रेटरी पर नहीं ?

क्रमशः 'वसन्त अकादमी' को यह स्थापित करना है कि रूप दिखाना या रूप देखना—यह-सब तो एक मधुर कविता की तरह है ! ऐसी कविता, जो मनुष्य की आत्मा को परमात्मा के सान्निध्य का अनुभव देती है।

धनवान घरानों के स्त्री-पुरुषों का चुनाव करने में एक लाभ यह भी है कि ऐसे 'ऊंचे लोग' नर-नारी के आकर्षण के प्रति हमेशा उदार होते हैं। सकोच उन्हें छू नहीं गया होता। अपवाद-स्वरूप यदि किसी में संकोच हो भी, तो उसे दूर करना बहुत मुश्किल नहीं। गरीबों के बीच ऐसी सुविधा नहीं मिलती। इसी लिए 'वसन्त अकादमी' केवल अमीरों के लिए है। परमात्मा से साक्षात्कार के लिए अपनी आत्मा को शरीर के बन्धन से ऊपर उठाने का अधिकार केवल अमीरों को है—समझे आप ? हरि ओम !

सब यथा-स्थान बैठ चुके हैं। 'अकादमी' की सुन्दर सचिव मंच पर आती हुई कह रही है, "जिस शान्ति और व्यवस्था के साथ आप सब विराजमान हो गए हैं, उस के लिए मैं व्यक्तिगत रूप से—और

'अकादमी' की तरफ से भी—हार्दिक आभार मानती हूं। अब यदि अनुमति हो तो···इस कक्ष को मैं भीतर से वन्द कर दूं, ताकि वाहर का कोई तत्व हमें खलल न पहुंचा सके। किसी का भी आना शेष नहीं रह गया है। जितने भी व्यक्तियों को आमन्त्रित किया गया था, सब पधार चुके हैं। मेरा ख्याल है कि अब सिटकनी वन्द करना अनुचित नहीं।"

आमन्त्रित मेहमानों के बीच हकारात्मक फुसफुसाहट उठती है। सचिव अपनी मदमाती चाल से दरवाज़े की ओर आती है। उस ने सिटकनी चढ़ा दी है। उसी मदमाती चाल से वह मंच पर वापस पहुंचती है। कहती है, "देवियों और सज्जनों···अब शीघ्र ही डा० पियरे आर्नल्ड वर्नार्ड—जिन का दूसरा नाम श्री ओमप्रकाश शास्त्री भी है—आप के सम्मुख उपस्थित होंगे और 'वसन्त अकादमी' का प्रारम्भिक परिचय देंगे। परिचय के वाद हर व्यक्ति को अलग कमरे में साक्षात्कार देना होगा। साक्षात्कार के वाद तय हो जाएगा कि कहीं कोई व्यक्ति ऐसा तो नहीं, जिस का प्रवेश-शुल्क यहां स्वीकार ही न किया जाए···'वसन्त अकादमी' अपने सभी सदस्यों का मानसिक स्तर लगभग एक-सा रखना चाहती है, ताकि आत्मा की खोज के सम्बन्ध में, तन्त्र और योग-विद्या के सम्बन्ध में, ईश्वर-स्वर्ग-नर्क और पुनर्जन्म आदि के सम्बन्ध में आत्म-सम्मोहन के भी सम्बन्ध में जब यह 'अकादमी' कुछ कहे या, कुछ करे—तो सदस्यों के बीच एक भी व्यक्ति ऐसा नहीं होना चाहिए, जो अपनी मानसिक अक्षमता के कारण दूसरों से पीछे रह जाए···विश्वास है कि आप हमारी इस नीति से सहमत होंगे, क्योंकि यह नीति सब के सामूहिक कल्याण के लिए है। तो···अब मैं डॉ० पियरे आर्नल्ड वर्नार्ड से निवेदन करूंगी कि वह सामने आएं, 'अकादमी' के सम्भावित सदस्यों को दर्शन दें और उन्हें 'अकादमी' की मोटी रूपरेखा समझाएं···"

सुन्दर सचिव मंच पर से हट गई है। विशेष व्यवस्था के अनुसार पूरे कक्ष में अन्धेरा छाने लगता है। रोशनी केवल मंच पर है। मैं—ओमप्रकाश दि ग्रेट—मंच पर आने वाला हूं न ! पुराने ज़माने में राजा पीछे चलता था, चोबदार आगे। आज के ज़माने में मसीहा पीछे चलता

है, रौशनी आगे···

मैं मंच पर धीर-गम्भीर कदमों से अवतरण कर रहा हूं। जैसा कि आदेश दिया जा चुका है, मेरे दिखाई पड़ते ही 'अकादमी' की सचिव बड़े सम्मान के साथ अपनी कुर्सी छोड़ कर उठ खड़ी है। उस की देखा-देखी, सभी आमन्त्रित मेहमान भी अपनी-अपनी कुर्सियों से उठ गए हैं।

मैं गेरु रंग का एक लम्बा चोगा पहने हुए हूं। मेरे कद्दावर शरीर पर यह चोगा बहुत जंच रहा होगा। मेरी दाढ़ी गुरुओं की तरह बढी हुई है। मच पर रौशनी तो है ही, छत की तरफ से रौशनी का एक और रेला मुझ पर गिर रहा है। मैं बढ रहा हूं, रौशनी का रेला मेरे साथ-साथ बढ रहा है। दिव्य रौशनी ! (पता नहीं, बिजली का बिल कितना आएगा।)

मैं मंच पर पहुंच चुका हू।

रौशनी का रेला अब मेरे पीछे की तरफ से आ रहा है। इस से मैं सामने बैठे व्यक्तियों को ठीक से दिखाई नहीं दे रहा होऊंगा। रौशनी यदि सामने से आ रही होती, तो मेरा चेहरा स्पष्ट नज़र आता, लेकिन रौशनी पीछे से आ रही है। मेरी पीठ जगमग हो रही है, किन्तु आगे का तमाम साचा धुंधला-धुंधला···

और मैंने महात्माओं जैसी भव्य मुद्रा से संकेत किया है—बैठिए।

सब बैठने लगे हैं।

सब बैठ गए हैं।

मैंने बोलना शुरू किया है। विभिन्न पुस्तकों से रटे-रटाए वाक्य··· योग क्या है? तान्त्रिकों की जादुई क्षमताएं किस तरह जागृत होती हैं? आत्म-सम्मोहन···सेल्फ···हिप्नोटिज्म···अपने व्यक्तित्व के विकास में किस तरह अद्भुत सहायता दे सकता है? भारतवर्ष की 'शास्त्री' की डिग्री का अर्थ क्या है? 'बसन्त अकादमी' क्यों बनाई गई है?···जिस दौरान मैं यह सब बोल रहा हू, रौशनी का रेला मेरी पीठ की ओर से क्रमशः सरक कर सामने आ रहा है। इस से, क्रमशः सभी व्यक्तियों के सामने मेरा भव्य चेहरा प्रकट हो रहा है। चेहरा और मंडे।

आंखें। आंखें। आंखें।

लोग मेरी बात सुन रहे हैं, मेरी आंखों में देख रहे हैं। मेरी आंखें उन्हें आदेश दे रही हैं—जो सुन रहे हो, उसे सच मानो—यही सच है···यही सच है···

अन्नत:, अपना वक्तव्य समाप्त करते हुए मैं कहता हूं, "वसन्त अकादमी' के सह-प्राध्यापक मिस्टर मार्टिमर हरगिस भी, अब, आप के सामने दो शब्द कहेंगे। उस के बाद, सब को अलग-अलग बुला कर साक्षात्कार लिया जाएगा। इस साक्षात्कार का उद्देश्य 'अकादमी' की सचिव ने आप के सम्मुख स्पष्ट कर ही दिया है···अस्तु···"

और मैं सिर झुका कर हट रहा हूं। वापिस जा रहा हूं। रोशनी का रेला मेरे साथ-साथ पीछे हट रहा है। मैं जगमग···जगमग···जगमग···

अपने पीछे मैं एक सीत्कार-सा वातावरण छोड़ आया हूं।

हरगिस मंच पर आया है। वह मेरे जितना अच्छा वक्ता नहीं। वह अधिक नहीं बोला है। मैं—अद्‌भुत वक्ता ! मेरा यह पहला ही सम्भाषण था, किन्तु बोलते वक्त ही मैं अहसास पा गया था कि मामला किस कदर जम रहा है। शीशे के सामने खड़े हो कर मैंने देर-देर तक अभ्यास, देवत्वपूर्ण मुद्रा में चलने का अभ्यास जनता को अपनी वेधक आंखों से छील देने का अभ्यास···

मैं स्वयं अपने को बधाई दे रहा हूं। जनता के सामने मेरा प्रथम प्रगटीकरण अनोखा ही नहीं, रहस्यमय और रोमांच भी रहा है।

हरगिस का वक्तव्य समाप्त हो चुका है। वह परदे के पीछे लौट आया है। उस के मस्तक पर पसीने की नमी है। मंच-भय···स्टेज-फ्राइट !···लेकिन वह मुस्करा रहा है। अपनी बात उस ने भी जमा कर कही है।

"बताओ, पीटर !" एकान्त कोने में मुझे ले जाता हुआ वह बुद-बुदाता है, "हम किसे धोखा दे रहे हैं ? दूसरों को या अपने-आप को ?"

मैंने गम्भीरता से उत्तर दिया, "हमें मान कर चलना चाहिए कि हम किसी को भी धोखा नहीं दे रहे। यदि हमारा ही मन कच्चा हुआ,

तो दूसरे भी हम पर सन्देह करने लगेंगे। इसके अलावा'''मेरा नाम *पीटर क्रून नहीं है। मैं डा० पियरे आर्नल्ड बर्नार्ड हूं और मेरा दूसरा* नाम—ज्यादा सही नाम—ओमप्रकाश शास्त्री है।"

"मैं याद रखूंगा।" हरगिस मुस्कराने लगा, "यदि नींद में भी उठा कर पूछा गया कि तुम्हारा नाम क्या है, तो मैं वही कहूंगा, जो तुम चाहते हो।"

"इसी में दोनों की भलाई है।"

□

सच के साक्षात्कार ले कर मैं और हरगिस घर लौट आए हैं। पी रहे हैं। *आज की अद्भुत सफलता का जश्न जरूर मनाया जाना* चाहिए। इसी लिए, हम इतनी ज्यादा पी चुके हैं कि अब और बिल्कुल नहीं पी जा रही। फिर भी पीते जा रहे हैं। दुनिया घूमने लगी है।

आज से हम ने भी दुनिया को घुमाना शुरू किया है। ह, ह, ह''' हिक्'''

"सावधानी से पीयो, ओमप्रकाश !" हरगिस मुझे चैतन्य करना चाहता है, "तुम्हारी दाढ़ी पर इतनी ज्यादा शराब गिर चुकी है कि'''"

"शराब मैं पीऊं और मेरी दाढ़ी न पीए ? असम्भव'''" मेरी आंखें चमक रही हैं। इससे पहले, शराब गफलत में गिरी थी। अब मैं जान-बूझ कर गिरा रहा हूं। भिगो रहा हूं सारे बाल !

पेट में भभाका उठने लगा है। मह भभाका दिमाग तक चढ़ रहा है'''मुझे इतनी ज्यादा नहीं पीनी चाहिए, किन्तु'''हरगिस मुझे अब भी पिलाए जा रहा है। दाढ़ी भिगोने के बहाने मैंने काफी शराब अपने पेट में जाने से रोक दी है, किन्तु हरगिस यों हारने वाला नहीं। उसने नए-नए पेग ढाले हैं। अपने लिए। मेरे लिए।

"बस, अब नहीं।" मैं कहता हूं। जबान काबू में नहीं है। जो मैंने *कहना चाहा, कह पाया कि नहीं ? यदि सचमुच कह पाया, फिर मेरी* बात सुनी क्यों नहीं जा रही ? मेरे इन्कार के बावजूद हरगिस क्यों फिर .

से पेग ढाल रहा है ? शायद मैं 'बस, अब नहीं' बोला ही नहीं। ये शब्द मैंने सिर्फ सोचे हैं। शराब के गहरे नशे में ऐसा नहीं होता क्या ? यह असम्भव तो नहीं कि उतने नशे में जब आप बोलना चाहें, तो केवल सोच कर रह जाएं ! असलियत चाहे जो हो, हरगिस ने फिर से मेरा जाम भर दिया है और मैं गटक रहा हूं…

सन्न…सन्न…

प्रत्येक घूंट ने आग के नए-नए शोले भड़काए हैं, सारा बदन सनसना गया है—राख में बदल रहा है। हिक्…

"हरगिस ! आज मज़ा आ गया। क्या एक-से-एक खूबसूरत लड़कियां आई थीं हमारी 'अकादमी' में। और वे महिलाएं—घाट-घाट का पानी पी चुकी महिलाएं ! उनकी चाल-ढाल…उनका राग-रंग…उनकी खाऊ निगाहें…हिक्…हरगिस, मेरे रोम-रोम में आग लगी हुई है।" मैं बक रहा हूं।

सहसा जिस तरह बिजली का फ्यूज़ उड़े, उसी तरह मेरा फ्यूज़ उड़ गया है। बैठा नहीं रह सका हूं। गिर कर लोट गया हूं। आहा, मज़ा आ गया। हरगिस मेरे चेहरे पर झुक रहा है, "और पीनी है ?"

मैं मस्ती में हूं। कहना चाहता हूं, "नहीं।" कहता हूं, "लाओ। दो।" वह लाता है। देता है। मैं अपने रोम-रोम में फिर एक नई आग सुलगाने लगता हूं। अब इस नशे में लग रहा है, मेरा अंग-अंग जुदा होकर कमरे के बीच उतराने लगा…

"आग…सारे बदन में आग लग गई, हरगिस प्यारे…कोई इन्तज़ाम करो…प्लीज़…वरना मर जाऊंगा।"

"इन्तज़ाम ?"

"हां। यहीं। इसी कमरे में। मेरी हालत…ब…ब…बाहर जाने की नहीं।"

किरररर…किरररर…हरगिस डायल घुमा रहा है। मैं उसकी 'हैलो' सुनता हूं। किसे फोन कर रहा है वह ? उंह, किसी को भी ! 'उस' का नाम क्या है, रंग क्या है, ऊंचाई क्या है, उम्र क्या है—मुझे

सरोकार नहीं। कोई भी आ जाए। मुझे आज कोई भी चाहिए। भूख''' भूख'''आग'''शराब का भंवर'''

सहसा इस भंवर में डूब गया।

कुछ होश नही, कहा हूं, क्यों हूं, कब से हूं। यह भी याद नही कि हरगिस ने 'किसी' को फोन किया है'''हरगिस के पास कई फोन-नम्बर हैं। हरगिस की बडी जान-पहचान है इस क्षेत्र में'''कोई आती होगी''' आग बुझाने वाली कोई आती होगी। जशन! जशन! आज की सफलता का जशन! जो भी आएगी, जिन्दा नही लौटेगी। चीथ डालूगा, सच! मगर मैं कहा हूं? लगता है, मैं हूं ही नही। जब हूं ही नही, चीथूगा कैसे? मुझे आशा रखनी चाहिए कि जब तक वह आएगी, मैं भी आ जाऊंगा। इस वक्त मैं कहीं गया हुआ हू। चाहे जहां भी गया हुआ होऊं; जब तक वह आएगी, मैं आ ही जाऊंगा। नही आ सकूंगा क्या? आ सकूगा, आ सकूगा'''

कितना समय बीत गया है?

जाने कितना!

जिस तरह जुगनू जल-जल कर बुझता है, उसी तरह मेरी चेतना जल-जलकर बुझती रही है। एक बार बुझने के बाद वह फिर से कितनी देर बाद जली—कोई अन्दाजा नही। इसी लिए'''कितना समय बीत गया है? जाने कितना!

हरगिस कहां है? हरगिस शायद इस कमरे में नही है। अरे वाह, है कैसे नही! वह रहा—वह जो छाया हिल-डुल रही है, क्या वह हरगिस नही? जरूर वह हरगिस है। मैं उस छाया को आंखें सिकोड़ कर देखना चाहता हू। नशे के मारे आखें सिकोड़ भी नही पा रहा। आंखें जैसी हैं, वैसी-की-वैसी पड़ी हैं। शायद विस्फारित हो हैं'''चाहे जो हो, वह छाया हरगिस की है, इस में सन्देह नही।

किन्तु वह छाया अकेली नही। कोई और भी छाया है, जो हरगिस की छाया के साथ गडमड है। कौन है वह? वे दोनों उलट-पुलट रहे हैं। अपने सिर को झटका देता हूं। समझना चाहता हूं। समझ गया हूं वह आ

गई है। मैं बेहोश रहा होऊंगा। इसीलिए न जान पाया, वह कब पधारी। हरगिस उसे चीथ रहा है। हरगिस से पहले मुझे मौका मिलना चाहिए। मेरे ही प्रस्ताव पर वह बुलाई गई। मुझे वह पहले मिलनी चाहिए, हरगिस को बाद में। हरगिस ने इन्तजार क्यों न किया—मेरे होश में आने का इन्तज़ार ? मसीहा मैं हूं, हरगिस नहीं। अगुवा मैं हूं, हरगिस नहीं। वेधक आंखें मेरी हैं, हरगिस की नहीं। उसने 'वसन्त अकादमी' की केवल नींव डाली है। सारी इमारत तो मुझे तैयार करनी है—तैयार कर रहा हूं। इस नाते, हर चीज़ पहले मुझे और हरगिस को बाद में मिलनी चाहिए।

सहसा अपने-आप को समेट कर उठ पड़ा हूं। पशुओं की तरह चार हाथ-पैरों पर चलता हुआ मैं उन हिलती-डुलती छायाओं के पास पहुंच गया हूं। और पहुंचने के साथ ही—

उन्हें जुदा कर देने के लिए राक्षसी जुनून के साथ मैं टूट पड़ा हूं। बक रहा हूं, "पहले मैं···पहले मैं···"

बारीक आवाज में वह चीख पड़ती है।

मैं और अधिक जुनून में उन्हें जुदा करने लगता हूं। मज़ा आ गया ! सहसा मेरे सिर पर एक वार होता है। मेरी आंखें निकल-सी आई हैं। पलकें कस कर मूंद लेता हूं, ताकि आंखों को एकदम निकल गिरने से रोक सकूं। पलकें खोलता हूं। भांपना चाहता हूं—वार किसने किया। गौर करता हूं—मेक-अप से आच्छादित एक नारी-चेहरा··· फैली हुई आंखें···बहुत खूब ! आंखें केवल मेरी नहीं निकल आई थीं, आंखें इस नारी की भी निकली हुई हैं। क्या इस नारी के सिर पर भी किसी ने वार किया है ? जिस तरह कि मुझ पर किया गया ? नहीं, नहीं, नारी पर वार भला कैसे होगा ? क्योंकि स्वयं नारी ही वार कर रही है। मैं ध्यान देता हूं, उस धुंधली नारी के हाथ में कुछ है—न जाने क्या है, लेकिन···कुछ ऐसा अवश्य है कि जिससे वार किया जा सके—भरपूर वार···

हरगिस कहां है ? वह रहा···हरगिस किस कोशिश में है ?

'बचो, ओमप्रकाश !' मैं अपने-आप को सावधान करता हूं।

हरगिस वह रहा—और हरगिस के हाथ में भी कुछ है, जिससे वह मुझ पर वार करना चाहता है। वार करने की ही मुद्रा में उसके हाथ उठे हुए हैं न ? कुछ शक-सा है मुझे। नहीं, नहीं, हरगिस वार नहीं कर रहा। वार तो यह नारी करने वाली है—फिर से वार करने के लिए नारी ने हाथ उठा लिया है, लेकिन क्या हरगिस ने उसका हाथ दबोच नहीं लिया ? शाब्बाश, हरगिस !

हरगिस उसे समझा रहा है, "क्या करती हो ? इतनी जोर से वार करते हैं ? ठहरो। होश में आओ।"

मैं भी अपने-आप को आदेश दे रहा हूं, 'ठहरो, होश में आओ।'

"आय'म सॉरी, ओम ! लेकिन तुम भी तो हम दोनों पर बिल्कुल जंगलियों की तरह टूट पड़े।" हरगिस का स्वर, "यह कहां की सभ्यता है ? क्या तुम मेरे बाद नहीं आ सकते थे ? लड़की ने जब दरवाज़ा खटखटाया, तुम होश में नहीं थे। तुम्हारे होश में आने तक लड़की बैठी-बैठी क्या करती ? हमने उसे बोर होने के लिए नहीं बुलाया है—समझे ? इसीलिए पहले मैंने छुट्टी लेनी चाही।"

"पहले तुम क्यों ? पहले मैं ! तुम्हें मुझे होश में लाना चाहिए था।" मैं गुर्राया हूं।

"यह नियम भला कब बना कि हमेशा तुम्हीं पहले रहोगे ?" हरगिस की आंखों में अब क्रोध उत्तर आया है, "हम दोनों के अधिकार बराबर हैं। कभी मैं पहले। कभी तुम पहले।"

"नहीं···" मैं दांत पीसने लगा हूं, "मैं यह नियम नहीं मानूंगा।"

"मैं जा रही हूं। आप दोनों झगड़ते रहिए।" मैं नारी स्वर सुनता हूं। पलट कर देखता हूं। वह कपड़े पहन चुकी है। दरवाज़े से निकलने ही वाली है। "ठहरो।" मैं ज़ोर से चिल्लाता हूं।

वह शेरनी की तरह पलट कर देखती है, "कल्पना भी नहीं थी कि मुझे जानवरों ने बुलाया है। न पीने की तमीज़, न कुछ करने की।"

"मार डालूंगा, अगर जाने की कोशिश की।" मेरी मुट्ठियां भिंच गई हैं। शराब का भंवर···सन्न···सन्न···तमाम बदन में सनसनाहट···

आग'''भूख'''वह सामने ही खड़ी है। भोजन सामने है। मैं फिर टूट पड़ा हूं।

वार। सिर पर। उसी चीज से। उसी शक्ति से।

ढह गया हूं। लुप्त हो गया हूं। कितनी देर तक लुप्त रहा ? जाने कितनी देर तक। लेकिन जब वापस आया हूं, कमरे में अकेला हूं। हरगिस नहीं है। 'वह' भी जा चुकी है। क्या हरगिस के साथ ? या अकेली ही ?

अकेली गई हो, चाहे हरगिस के साथ गई हो—इस वक्त यहां मैं अकेला हूं'''मैं जानवर'''मैं जानवर'''मैंने कैसा फूहड़ व्यवहार किया ! '''मुझे उतनी ज्यादा पीने की ज़रूरत ही क्या थी ? हरगिस ने पिलाई, ठीक है, लेकिन यदि मैं पीता ही नहीं—वह ज़बरन कैसे पिला देता ?

वह नारी स्वर मेरे कानों में गर्म सीसे की तरह उबल रहा है, 'कल्पना भी नहीं थी कि मुझे जानवरों ने'''

मैं जानवर। मैं जानवर। शराब पी कर मैं'''लानत है ! न। कभी नहीं। अब कभी नहीं पीऊंगा। मन में एक निश्चय हिमालय की तरह अडिग होता जा रहा है। महान् योगी, अद्‌भुत तान्त्रिक, अनोखा डाक्टर—ओमप्रकाश शास्त्री ! आइन्दा यह शख्स कभी शराब को छूएगा भी नहीं'''

उठा हूं। फ्रिज के पास पहुंचा हूं। आश्चर्य—कि फ्रिज के पास पहुंच सका हूं। कदम अब भी इतने लड़खड़ा रहे हैं कि बीच-राह में ही मुझे फर्श पर गिर जाना चाहिए। आंतें कट-सी गई हैं। आंखें डूब रही हैं। कान पिघलने लगे हैं। पेट भभक रहा है। किसी तरह फ्रिज तक पहुंच ही गया हूं। फ्रिज का दरवाज़ा खोलना चाहा है। खुल नहीं रहा। ज़ोर लगाता हूं। दरवाज़ा अचानक खुल जाता है। ज़ोर इतना अधिक लगाया है कि ज्यों ही दरवाज़ा खुला है, झटका खा कर मैं फर्श पर गिर गया हूं। उठा हूं। खुले हुए फ्रिज में से कुछ चीज़ें निकाल कर खाने लगा हूं। पेट में यदि कुछ जा सके, तो शायद राहत मिले'''

अचानक—

ओक्...

भभकते पेट ने कुछ भी स्वीकार नहीं किया है। मैं दौड़ कर बाथ-रूम में पहुंचा हूं, वाश-बेसिन पर झुक कर जितना खाया था, सब उलट रहा हूं। कितना घिनौना—छीः ! निगाह उठती है। शीशे में अपने चेहरे का बिम्ब देखता हूं ? क्या यह मैं ही हूं? इतना त्रस्त ? पीड़ित ? मेरी आखों का तेज कहां है ? ये मुर्दा आखें मेरी तो नहीं ! फिर ये मेरे चेहरे पर क्यों हैं ? जरूर ये मेरी ही आंखें हैं।

फिर से वही निश्चय मेरे मन में हिमालय की अडिगता के साथ उभर रहा है—न। कभी नहीं। ओमप्रकाश शास्त्री आइन्दा कभी शराब नामक इस कमीनी चीज़ को छूएगा भी नहीं।

सिर पर दो-दो बार वार हुए थे न ? वार की जगह पर दोनों हथेलियों से टटोलता हूं। वह जगह फूल आई है। घृणा का कफ ! अपने-आप से घृणा ! महान् योगी, चिकित्सक और तान्त्रिक ओमप्रकाश शास्त्री पर वह चालू छोकरी वार कर गई ?

नहीं। उसने ओमप्रकाश शास्त्री पर वार नहीं किया। उसने तो ओमप्रकाश की शराब पर वार किया...छोकरी, तेरा धन्यवाद ! तूने मुझे एक ऐसी सीख दी है, जिसे जीवन में कभी न भूल सकूंगा। मैं महान् सन्त हूं। महान सन्त तो उनसे भी सीख ले लेते हैं, जो पैर की धूल के बराबर भी न हों। मैंने तुझ से न केवल सीख ली, तुझे धन्यवाद भी दिया है। कैसी अद्भुत, अविश्वासनीय महानता ! है न ? छप-छप... चेहरे पर छींटे दे रहा हूं...गहरी सांसें...

मार्टिमर हरगिस को मनाना होगा। खुशामद करनी होगी उसकी। शराब के नशे में मैंने उससे जाने क्या-क्या कह दिया। शराब में धुत होने के बाद भी मुझे नहीं भूलना चाहिए कि वह और मैं बराबर हैं—मैं उससे ऊपर नहीं हूं। वास्तव में, यह तो हरगिस की चमत्कारिक महानता है कि उसने मुझे अपनी बराबरी तक पहुंचने दिया। मैं—अदना नाई ! हरगिस ने मुझे कहां पहुंचा देने का बीड़ा उठाया है। ठीक है, मेरी तरक्की के साथ उसका अपना स्वार्थ भी जुड़ा है, लेकिन

स्वार्थ किसका किसके साथ नहीं जुड़ा हुआ ? सभी का स्वार्थ कहीं-न-कहीं जुड़ा होता है। इसमें बुराई भी क्या है ? यह बहुत सहज, स्वाभाविक, मानवीय स्थिति है...स्वार्थ की दुहाई देकर मुझे हरगिस की उदारता को नकारने का प्रयास नहीं करना चाहिए। मुझे इसका कोई सचमुच अधिकार नहीं कि उससे कहूं, 'मैं तुमसे पहले रहूंगा।'

हरगिस ने आज तक कभी नहीं कहा कि मैं तुम से पहले रहूंगा। हरगिस ने हमेशा केवल यह कहा है, 'हम दोनों बराबर हैं। कभी तुम पहले। कभी मैं पहले। हमेशा मैं पहले, या हमेशा तुम पहले—यह असम्भव है।'

छप-छप...छींटे...सांसें...

शराब के ही कारण मैंने हरगिस जैसे भलेमानस के साथ कितना बुरा व्यवहार किया। शराब, तुझ पर थू ! मैंने वाश-बेसिन में थूक दिया है। चेहरा—सारा चेहरा—अब भी तपा हुआ है। छप-छप...छपाक्...

□

"मित्रों !" मैं 'बसन्त अकादमी' में भाषण दे रहा हूं, "मुझे प्रसन्नता है कि हम परस्पर बहुत घनिष्ट हो चुके हैं। हमारा रिश्ता पढ़ने वालों और पढ़ाने वालों का नहीं, बल्कि मित्रों का है। योगासनों के अनेक प्रयोग, आप ही लोगों के सहयोग से, 'अकादमी' ने किए हैं। इस सहयोग के लिए, ऐसी रुचि के लिए, 'अकादमी' आप सब की अत्यन्त आभारी है। ये योगासन तन और मन को तो पुष्ट करते ही हैं, आत्मा और परमात्मा के बीच भी सेतु जैसा काम करते हैं। परमात्मा से साक्षात्कार का वह अनुभव, योगासनों एवं तान्त्रिक अनुष्ठानों की एक लम्बी शृंखला के बाद प्राप्त होगा। यह बाद की बात है। उस से पहले की एक नाजुक बात, आज, आप के सामने रखना चाहता हूं।"

यहां मैं जरा रुका हूं। अपनी सर्प-आंखों से मैंने 'अकादमी' के सभी सदस्यों को देख लिया है...कुछ इस तरह कि वे मुग्ध-से हो गए हैं। सन्नाटा...

मैंने आगे चलाया है, "क्या यह बताने की जरूरत है कि नर-नारी का देह-सम्बन्ध अत्यन्त पवित्र है ? मनुष्य को परमात्मा का प्रतिरूप कहा गया है । नर-नारी के देह सम्बन्ध से मनुष्य—याने, स्वयं परमात्मा पैदा होता है । इसी देह सम्बन्ध को समाज ने जिस ढग से गोपनीय बना दिया है, वह हास्यास्पद और दुख है । बचपन से ही नर-नारी सम्बन्धो के प्रति हमारे मन में ऐसी जुगुप्सा भर दी जाती है कि वयस्क होने के बाद भी उन सम्बन्धो को लेकर हम सहज नही हो पाते । सच्चा योगी कभी ऐसे छलावे मे नही आता । सच्चा तान्त्रिक इन सम्बन्धों को हमेशा गहरे सम्मान की दृष्टि से देखता है । 'बसन्त अकादमी' का उद्देश्य है योग और तान्त्रिक विद्याओ को जन-साधारण तक पहुचाना, इन विद्याओं से जन-साधारण को संस्कारित करना । इस नाते···'अकादमी' के सदस्य होने के नाते—आप सब का धर्म है कि यौन-सम्बन्धो को किसी कविता की तरह मानें—पवित्र, धार्मिक कविता, जो हमे ईश्वर से साक्षात्कार का अनुभव दे सकती है । भारत के योगियो ने यौन-सम्बन्धों को एक शक्ति के रूप में देखा है । भारतीय योगियो ने 'ईश्वर' नामक शक्ति की तुलना उसी शक्ति से की है और कहा है कि मानव के बूते में यौन सम्बन्धों की शक्ति ही वह योग्यतम साधन है, जिसके जरिए वह ईश्वर के सामने पहुंच सकता है, या ईश्वर को अपने आगे प्रकट होने के लिए मजबूर कर सकता है···'

पुन: मैं जरा थम गया हूं । मेरी सर्प-आखें, चुप-चुप, आदेश दे रही है···जो कहा जा रहा है, वही सच है,···वही सच है···

सन्नाटा···

पुन: मेरा स्वर, "यौन-सम्बन्धों के प्रति सहजता, मन में पहले, व्यक्ति के मन में पैदा होनी चाहिए । मन की सहजता के बिना तन की सहजता असम्भव । दूसरी ओर, मन की सहजता भी तब तक असम्भव है, जब तक हमने अपने तन को वस्त्रों से ढांक रखा है । वस्त्र ईश्वर की खोज नहीं हैं । वस्त्र तो मनुष्य की खोज हैं । इसी लिए ईश्वर से साक्षात्कार करने के लिए—अन्य शब्दों में, यौन-सम्बन्धों के प्रति सहज

स्वार्थ किसका किसके साथ नहीं जुड़ा हुआ ? सभी का स्वार्थ कहीं-न-कहीं जुड़ा होता है। इसमें बुराई भी क्या है ? यह वहुत सहज, स्वाभाविक, मानवीय स्थिति है···स्वार्थ की दुहाई देकर मुझे हरगिस की उदारता को नकारने का प्रयास नहीं करना चाहिए। मुझे इसका कोई सचमुच अधिकार नहीं कि उससे कहूं, 'मैं तुमसे पहले रहूंगा।'

हरगिस ने आज तक कभी नहीं कहा कि मैं तुम से पहले रहूंगा। हरगिस ने हमेशा केवल यह कहा है, 'हम दोनों वरावर हैं। कभी तुम पहले। कभी मैं पहले। हमेशा मैं पहले, या हमेशा तुम पहले—यह असम्भव है।'

छप-छप···छींटे···सांसें···

शराव के ही कारण मैंने हरगिस जैसे भलेमानस के साथ कितना वुरा व्यवहार किया। शराव, तुझ पर थू ! मैंने वाश-वेसिन में थूक दिया है। चेहरा—सारा चेहरा—अव भी तपा हुआ है। छप-छप···छपाक्···

□

"मित्रों !" मैं 'वसन्त अकादमी' में भाषण दे रहा हूं, "मुझे प्रसन्नता है कि हम परस्पर वहुत घनिष्ट हो चुके हैं। हमारा रिश्ता पढ़ने वालों और पढ़ाने वालों का नहीं, वल्कि मित्रों का है। योगासनों के अनेक प्रयोग, आप ही लोगों के सहयोग से, 'अकादमी' ने किए हैं। इस सहयोग के लिए, ऐसी रुचि के लिए, 'अकादमी' आप सव की अत्यन्त आभारी है। ये योगासन तन और मन को तो पुष्ट करते ही हैं, आत्मा और परमात्मा के वीच भी सेतु जैसा काम करते हैं। परमात्मा से साक्षात्कार का वह अनुभव, योगासनों एवं तान्त्रिक अनुष्ठानों की एक लम्वी शृंखला के वाद प्राप्त होगा। यह वाद की वात है। उस से पहले की एक नाजुक वात, आज, आप के सामने रखना चाहता हूं।"

यहां मैं जरा रुका हूं। अपनी सर्प-आंखों से मैंने 'अकादमी' के सभी सदस्यों को देख लिया है···कुछ इस तरह कि वे मुग्ध-से हो गए हैं। सन्नाटा···

मैंने आगे चलाया है, "क्या यह बताने की जरूरत है कि नर-नारी का देह-सम्बन्ध अत्यन्त पवित्र है ? मनुष्य को परमात्मा का प्रतिरूप कहा गया है। नर-नारी के देह सम्बन्ध से मनुष्य—याने, स्वयं परमात्मा पैदा होता है। इसी देह सम्बन्ध को समाज ने जिस ढंग से गोपनीय बना दिया है, वह हास्यास्पद और दुख है। बचपन से ही नर-नारी सम्बन्धों के प्रति हमारे मन मे ऐसी जुगुप्सा भर दी जाती है कि वयस्क होने के बाद भी उन सम्बन्धों को लेकर हम सहज नही हो पाते। सच्चा योगी कभी ऐसे छलावे में नही आता। सच्चा तान्त्रिक इन सम्बन्धों को हमेशा गहरे सम्मान की दृष्टि से देखता है। 'बसन्त अकादमी' का उद्देश्य है योग और तान्त्रिक विद्याओं को जन-साधारण तक पहुंचाना, इन विद्याओं से जन-साधारण को संस्कारित करना। इस नाते'''अकादमी' के सदस्य होने के नाते—आप सब का धर्म है कि यौन-सम्बन्धों को किसी कविता की तरह मानें—पवित्र, धार्मिक कविता, जो हमे ईश्वर से साक्षात्कार का अनुभव दे सकती है। भारत के योगियों ने यौन-सम्बन्धों को एक शक्ति के रूप में देखा है। भारतीय योगियों ने 'ईश्वर' नामक शक्ति की तुलना उसी शक्ति से की है और कहा है कि मानव के बूते में यौन सम्बन्धों की शक्ति ही वह योग्यतम साधन है, जिसके जरिए वह ईश्वर के सामने पहुंच सकता है, या ईश्वर को अपने आगे प्रकट होने के लिए मजबूर कर सकता है'''

पुनः मैं जरा थम गया हूं। मेरी सर्प-आंखें, चुप-चुप, आदेश दे रही हैं'''जो कहा जा रहा है, वही सच है,'''वही सच है'''

सन्नाटा'''

पुनः मेरा स्वर, "यौन-सम्बन्धों के प्रति सहजता, सब से पहले, व्यक्ति के मन में पैदा होनी चाहिए। मन की सहजता के बिना तन की सहजता असम्भव। दूसरी ओर, मन की सहजता भी तब तक असम्भव है, जब तक हमने अपने तन को वस्त्रों से ढांक रखा है। वस्त्र ईश्वर की खोज नहीं हैं। वस्त्र तो मनुष्य की खोज हैं। इसी लिए ईश्वर से साक्षात्कार करने के लिए—अन्य शब्दों में, यौन-सम्बन्धों के प्रति सहज

होने के लिए—वस्त्रों का परित्याग पहला कदम है। ऊपरी तौर पर यह बात तेज़ झटका देने वाली है, यह मैं जानता हूं, लेकिन तान्त्रिक और योग विद्याएं प्रकृति की विद्याएं हैं, जबकि वस्त्र प्राकृतिक नहीं हैं। वे अप्राकृतिक हैं—निश्चित रूप से अप्राकृतिक। पहले तो हम यह स्वीकार करें कि वे अप्राकृतिक हैं। इस के बाद ही हम उन्हें त्यागने के बारे में सोच सकेंगे। जब तक हम उन्हें त्यागेंगे नहीं, मानव के शरीर को हम छिपाने योग्य वस्तु ही मानते रहेंगे—और जिसे हम छिपाने योग्य मानते हैं, उस के प्रति हम कदापि सहज नहीं होते। मेरा निश्चित मत है कि जब तक स्वयं अपने शरीर को हम सहजता से ग्रहण नहीं करते, तब तक सच्चे अर्थ में योगी नहीं बन सकते—"

□

कई मास बीत गये हैं। 'वसन्त अकादमी' का काम ज़ोरों पर है। इस के सदस्यों की संख्या हम ने ५० पर स्थिर कर दी है, क्योंकि ज्यादा जोगियों से मठ उजड़ता है। ५० में से ३५ के लगभग तो सुन्दर युवतियां हैं, जो अपने अस्तित्व से परेशान हैं। उन्हें समझ में नहीं आता कि आखिर वे क्यों पैदा हो गईं, और जब वे पैदा हो गई हैं, तो अब वे क्या करें, कैसे करें, कब करें, किस के नेतृत्व में करें ? जो भी करें, क्या करें ? किस के लिए करें ? किस के नाम पर करें ? आदि-आदि। 'वसन्त अकादमी' ने उन्हें तरह-तरह से समझाया है, तरह-तरह से राहत दी है।

उन ३५ सुन्दरियों के अलावा, शेष जो सदस्य हैं, उन में ५-७ नवयुवक हैं, कुछेक प्रौढ़-प्रौढ़ाएं हैं। सब की समस्या एक-सी है—जीवन की सार्थकता की खोज।

५० सदस्यों की संख्या कम लगती है न ?"

लेकिन इन में से प्रत्येक ५०० के बराबर है। मेरा मतलब—'अकादमी' का हर सदस्य इतना अमीर है कि ५०० की बराबरी करे। समझे आप ? इसीलिए 'अकादमी' को न केवल मोटी फी हर मास मिलती है, विभिन्न प्रयोगों और अनुष्ठानों के नाम पर तगड़ी रकमें भी दान

में मिल जाती हैं। दान ! जिस का कोई हिसाब-किताब नहीं। सब ऊपर-ही-ऊपर फुक जाता है।

भारत के खजुराहो मन्दिरों का परिचय, सुन्दर-सजीले फोटोग्राफों के माध्यम से अपने सदस्यों को देने के लिए 'अकादमी' ने अपना एक खास फोटोग्राफर भारत रवाना किया है···

खजुराहो की मिथुन-मूर्तिया ! दैहिक प्रेम की काव्य-ग्राराधना !

मैंने 'अकादमी' के सदस्यों से कहा है, "जब खजुराहो के मन्दिर बने, तब छपाई की मशीनें किसी देश मे नहीं थी। यदि होती, तो मिथुन-मूर्तिया शायद बनती ही नही। मूर्तियां की बजाए चित्र बनाए जाते, फोटो खीचे जाते—देह की आराधना के दिव्य, पवित्र फोटो ! दुनिया के आम ग्रादमी के लिए कामोत्तेजक फोटो, लेकिन सच्चे योगी या तान्त्रिक लिए पूज्य फोटो···क्योंकि यह योगी ही है, जो जानता है कि नर-नारी के सम्बन्धों का वास्तविक रहस्य क्या है, किस तरह ये सम्बन्ध मनुष्य को ईश्वर की ऊंचाई तक ले जा सकते हैं—मुझ से कोई असहमत तो नही ?"

सामने बैठे पचासों सदस्य मुझ से सहमत हैं। मैं फिर दोहराता हू, "यदि कोई ग्रसहमत हो, तो अपने मन की आशंका उसे मेरे सामने अवश्य रखनी चाहिए; क्योंकि जब तक आशंका सामने नही रखी जाएगी समधान कैसे होगा ?"

किन्तु मेरी वेधक आंखों ने पचासों भक्तों को बींध कर आदेश दे दिया है, 'गुरुदेव ओम ने जो कहा है सच कहा है—यही सच है। यही सच है।'

कोई चू नही कर रहा। मैंने उन्हें सामूहिक सम्मोहन से बांध दिया है। मुझ में यह शक्ति जन्मजात है। स्वय मैं इस शक्ति से अपरिचित था। तभी तो सैलून मे कच-कच कैंची चला रहा था। अब ? कैंची चलाए बिना ही कच-कच···भाई मार्टिमर हरगिस जी। मेरी शक्ति का मुझ में ही आविष्कार करने के लिए हज़ार-हज़ार धन्यवाद।

'वसन्त अकादमी' में हरगिस ने सब से ऊंचा पद मुझे दिया है। स्वयं को उस ने दूसरे नम्बर पर रखा है। यदि मुझ जैसी आंखें उस के

पास होतीं, तो अवश्य वह मेरी बराबरी पर आ जाता, किन्तु वैसी आंखें कहां हैं उस के पास ? किन्तु, धन के बटवारे के सन्दर्भ में, आपसी व्यवहार के सन्दर्भ में— बिल्कुल बराबर ! मुझ में और उस में बिल्कुल फर्क नहीं। वास्तव में, मैं कभी भूल नहीं सकता कि यह हरगिस ही है, जिस ने मुझे इस ऊंचाई पर आने के लिए आमन्त्रित किया। अपनी योग्यता के कारण ही मैं ऊंचाई प्राप्त कर सका हूं, इस से इन्कार नहीं, किन्तु आमन्त्रण के अभाव में मैंने ऐसी उड़ान भरी ही न होती।

चूंकि मुझ से कोई असहमत नही है, मैं आगे चलाता हूं, "यदि हम खजुराहो की प्राचीन मिथुन-मूर्तियों का सम्मान करने की औकात रखते हैं, तब तो हमें आधुनिक मिथुन-फोटोग्राफों का भी सम्मान करने मे नहीं हिचकना चाहिए—क्योंकि, समय बदलने के अनुसार, अभिव्यक्ति का केवल माध्यम ही बदला है। भावना एक ही है। फोटो या मूर्ति, दोनों में केवल महान शक्ति के विस्फोट का अवतरण है, जिस से मानव पैदा होता है—स्वयं ईश्वर का अंश पैदा होता है…"

सब मुझ से सहमत हैं। क्यों न हों ! मैं इन की रग-रग जानता हूं। ये बहुत अमीर हैं—इतने ज्यादा कि ये मारे अमीरी के परेशान हैं। इसी लिए ये तथाकथित आत्मा की खोज में निकले हैं, जब कि इन के मूल संस्कार पूंजीपतियों के हैं—त्यागियों के नहीं। इसी लिए ये इतने सज-धजकर, इत्र-फुलेल लगा कर योग-साधना करने आते हैं ! इन्हें बहाना चाहिए—मिथुन-मूर्तियों के दर्शन करने का बहाना। मिथुन-मूर्तियों को, ऐसे फोटोग्राफों को घूर-घूर कर ये स्वयं अपने भीतर छिपी उस शक्ति का विस्फोट करेंगे, जिस से भगवान पैदा होता है ! क्या कहने ! मानो ऐसा दार्शनिक ज्ञान जिन्हें नहीं होता, वे 'भगवान' पैदा कर ही नहीं सकते।

'बसन्त अकादमी' और 'नाइट-क्लबों' में क्या अन्तर है ? मगर 'नाइट-क्लब' में जा कर इन अमीरों को लगता है, ये फिर से अमीरी के जाल में फंस गए। वहां जाने से बेहतर ये यही समझते हैं कि 'बसन्त अकादमी' में चले आएं। यहां धार्मिक वातावरण है, योग और तन्त्र की

बातें हैं—और यहां भी नंगे होने का अवसर है। 'नाइट-क्लबों' में नर्तकी नग्न नृत्य करती है—'बसन्त अकादमी' में ये स्वयं नंगे हो जाते हैं। मेरे सिर्फ एक इशारे पर ! 'नाइट-क्लबों' की नर्तकियों से लाख-लाख गुना खूबसूरत युवतियां—भले ही उन के साथ प्रौढ़ और प्रौढ़ाएं भी हों—जब ईश्वर से सान्निध्य के नाम पर, प्रकृति से साक्षात्कार के नाम पर अपने वस्त्र त्यागती हैं, तो गुरुओं की मुद्रा में बैठे मैं और हरगिस फूले नहीं समाते। मेरी और हरगिस की खाल बहुत मोटी है। हमारे मनोभाव चेहरे पर आते ही नहीं। चेहरों से तो हमारी गम्भीरता भगवान बुद्ध को भी मात कर रही होती है।

सभी सदस्य राज़ी हैं—क्रमशः राज़ी कर लिए गए हैं कि'''दुनिया भर में खोज-खोज कर नर-नारी देह-पूजा के फोटोग्राफ इकट्ठे किए जाएं। 'बसन्त अकादमी' के पास पूरा रिकार्ड होना चाहिए कि दुनिया के लोग—अनजाने में ही—किस-किस तरह उस शक्ति की आराधना करते हैं, जिस से भगवान पैदा होता है। अनजाने में की गई आराधनाओं के रिकार्ड में अन्य अनेक सम्भावनाएं हैं। मसलन—केवल फोटोग्राफों तक क्यों रुका जाए ? इस श्रेणी की पाठन-सामग्री, रेखा-चित्रों, कार्टूनों आदि का भी सकलन क्यों न किया जाए ? केवल इतना ही क्यों ? 'बसन्त अकादमी' के सदस्य यदि चाहें, तो ईश्वर से साक्षात्कार के नाम पर आपस में ही मनचाहे प्रयोग'' धीरे-धीरे मैं इन्हें पूरा अवसर देना चाहता हूं। मैं इन का गुरु हूं। युवतियां अपने-आप चाहेंगी कि वे अपने गुरु के संग प्रयोग कर के ईश्वर का साक्षात्कार करें'''मैंने इन युवतियों को सिखा दिया है कि गुरु का सम्मान करने की भारतीय पद्धति क्या है। ये तीन बार मेरी परिक्रमा करती हैं। फिर मेरे चरण-कमल छू कर उंगलियां अपनी आंखों पर लगाती हैं, सिर पर फेर लेती हैं—प्रौढ़-प्रौढ़ाएं भी यही करते हैं, लेकिन प्रौढ़-प्रौढ़ाओं की ऐसी-की-तैसी !

'बसन्त अकादमी' को किसी भी शुभ कार्य के लिए अनुदानों की कमी कभी नहीं रही'''भांति-भांति की पुस्तकों इत्यादि से आल्मारियां भरी जा रही हैं। एक आल्मारी। दूसरी। तीसरी। कई—

□

आलमारियों से खींच-खींच कर, पुस्तकों का मैंने फर्श पर ढेर लगा दिया है। ढेर में आग लगा चुका हूं। पुस्तकों की टेकरी ने गन्धाना शुरू कर दिया है।

"'पतित पावन' साहित्य को भस्म करने का समारोह !

ब्लान्शे और मेरे बीच धुएं की लकीरें हैं—गर्म, कांपती लकीरें। उन लकीरों के आर-पार मैं ब्लान्शे को देख रहा हूं। ब्लान्शे का पूरा आकार सिहर रहा है, जिस तरह सूखने के लिए डाले गए कपड़े हवा में कांपें...

□

किरिरिरिरि...सुबह-सुबह किसने आ कर काल-बेल बजाई? मार्टिमर हरगिस नींद के खुमार में है। मुझे ही उठना पड़ा है। स्लीपरों में पैर डाल कर दरवाजे तक पहुंचता हूं। दरवाजा खोलता हूं। सामने—

पुलिस।

मैं चौंकता हूं। अगले ही क्षण सम्भल जाता हूं। मेरी आंखें पुलिस के जवानों को बींधने लगती हैं। कुल चार जवान आए हैं। क्यों आए हैं? चाहे जिस करण से आए हों, मुझ जैसे धर्म-गुरु से पुलिस का क्या सरोकार?

"कहिए?" मैंने शुष्कता से पूछा है।

"आप कौन हैं?" एक जवान ने कहा है, "श्री ओमप्रकाश शास्त्री या मिस्टर मार्टिमर हरगिस?"

"ओमप्रकाश शास्त्री।"

"मिस्टर हरगिस कहां हैं?"

"भीतर हैं। सो रहे हैं। कहिए, क्या बात है?"

"'वसन्त अकादमी' का संचालन आप दोनों ही करते हैं?"

"कोई एतराज?' मैंने घूरते हुए पूछा है। मेरे पूछने पर यह जवान स्तब्ध रह गया है। दो पल कुछ बोल नहीं पाया है। फिर कहता है, "जी...दरअसल..."

"क्या दरमल ?'

"थानेदार साहब ने आप दोनों को याद किया है।"

"क्यों ?"

"कुछ पूछताछ करना चाहते हैं।"

"हम कहीं आते-जाते नहीं। उन्हें हमारे पास आना चाहिए। वह भी, समय ले कर।" मैंने दो-टूक जवाब दिया है।

'लेकिन'''उन्होंने कहा है कि'''"

"चाहे जो कहा हो! जो मैंने कहा, आप ने सुन लिया कि नहीं? अब आप जा सकते हैं।"—मेरी सर्प आंखों का आदेश!

चारों जवान पलट कर चले गए हैं। मैंने दरवाज़ा बन्द किया है। हरगिस के पलंग के पास आया हू उस के कन्धे को बेतावी से हिलाता हू, "हरगिस'''हरगिस'''उठो'''हमारी गतिविधियों की खबर, किसी तरह, पुलिस तक पहुंच चुकी है। सुना तुम ने?"

"पुलिस ?" हरगिस तापक से उठ बैठा है।

"अभी केवल अनौपचारिक रूप से बुलौवा आया था। आगे कभी भी'''बाकायदा वारण्ट आ सकता है।"

"लेकिन · लेकिन यह असम्भव है। हमारी गतिविधिया इतने कम लोगों के बीच, इतने चुनिन्दा लोगों के बीच चलती हैं कि'''और हमारे सदस्य इतने सन्तुष्ट हैं कि'''पुलिस तक शिकायत पहुचाने का काम आखिर कौन कर सकता है?"

"असम्भव कुछ नहीं है, प्यारे।" मैं मन्द-मद मुस्करा रहा हूं, "हमारी अकादमी ने अनेक असम्भव कार्य सम्भव कर दिखाए हैं या नहीं? अब आगे जो कानूनी उलझनें आने वाली हैं, उन का सामना किस तरह करें—सोचो।"

☐

सब से अच्छा हमें यही लगा था कि पुलिस से टक्कर ले ही नहीं। 'वसन्त अकादमी' को हम ने चलती-फिरती संस्था बना दिया। केवल

सदस्यों को पता होता कि अगला 'अधिवेशन' कहां होगा, अगले भाषण की योजना कहां है, योगासनों का अभ्यास अगली बार कहां किया जाएगा···

जब तक पुलिस को नए अड्डे की भनक मिलती, जब तक वह छापा मारती—हम खिसक चुके होते।

हमें अपना निवास-स्थान भी तत्काल छोड़ देना पड़ा। 'वसन्त अकादमी' खानाबदोश क्या हुई, हम सब खानाबदोश हो गए।

किन्तु इस में कितना सुख था ! पुलिस के साथ आंखमिचौनी खेलने में 'अकादमी' के पूंजीपति सदस्यों ने सचमुच अनुभव किया !

लेकिन आखिर कब तक आंखमिचौनी खेली जा सकेगी ? सैन-फ्रान्सिस्को की पुलिस इतनी चुस्त है कि···

इस के अलावा, पुलिस तक खबर पहुंचाने वाला कौन है, यह हम नहीं ही भांप सके थे। क्या हमारे सदस्यों के बीच कोई भेदिया आ पहुंचा है ? नहीं, यह असम्भव लगता है, क्योंकि यदि कोई भेदिया हमारे ही बीच होता, तो पुलिस हमेशा हमारे खिसक जाने के बाद ही क्यों छापा मारती ?

फिर ? पुलिस किस तरह हमारे हर नए अड्डे की जानकारी पा लेती है ?

भागम्भाग कब तक ? क्या 'अकादमी' को किसी और शहर में चले जाना चाहिए ? इस के सभी सदस्यों के पास कारें हैं। ये किसी भी कोने में पहुंच सकते हैं।

किस शहर का चुनाव किया जाए ?

इस समस्या पर हम अधिक सोच सकते, इस से पहले ही प्रकृति ने वार किया। मैं उस तारीख को कभी नहीं भूलूंगा। १८ अप्रैल, १९०६।

□

योगासनों का हर प्रयोग पहले स्वयं मैं और हरगिस कर लेते। पुस्तकों में देख कर कैसा आसन जमाते। उस आसन की खूबियों आदि का विस्तार कण्ठस्थ कर लेते। फिर, उस 'अकादमी' के सामने पेश करने की तैयारियां···पेश किए जाने के बाद, प्रत्येक सदस्य से करवाया जाता

अभ्यास···

उन दिनों मैं और हरगिस शीर्षासन का अध्ययन कर रहे थे। तकिए पर सिर रखकर, दीवार के सहारे उल्टे खड़े हो जाना—यह न मेरे लिए सम्भव था, न हरगिस के लिए। हम धड़ाम-धड़ाम गिरते रहते। कभी हंसते। कभी खीझते। भारतीयों को कोसते कि यह भी क्या बन्दरपन है—सिर के बल खड़े हो जाओ ! हुंह !

शुरू में तो दीवार का सहारा लेकर खड़े होओ, लेकिन ज्यों-ज्यों अभ्यास होता जाए, दीवार का सहारा लेना छोड़ दो। कहीं भी, बिना किसी सहारे के, एकाएक सिर के बल खड़े हो गए—शीर्षासन शुरू !

किन्तु जब दीवार के सहारे भी उल्टे खड़े होना सम्भव नहीं लग रहा, तब बिना सहारे के शीर्षासन करने की बात सपने जैसी थी। दूसरी ओर, मैं और हरगिस यह भी जानते थे कि जिस दिन शीर्षासन सम्भव होगा, 'अकादमी' के सदस्यों को हम स्तब्ध कर देंगे। भारतीयों के लिए शीर्षासन यदि आम बात है, तो होती रहे। सैन-फ्रान्सिस्को में यह आसन एक चमत्कार ही माना जाएगा, जो 'वसन्त अकादमी' की शोहरत में चार चांद लगा देगा।

सिर के बल खड़े होने में उस दिन मैं पहली बार सफल हुआ। दीवार के सहारे अभी मैं उल्टा हुआ ही था कि—सिर के नीचे, किसी रहस्यमय गहराई में, अजीब-सी गड़गड़ाहट हुई—जैसे भूगर्भ में कोई शिला लुढ़क रही हो।

क्या शीर्षासन करने पर, हर बार, ऐसी ही डरावनी आवाज़ सुनाई पड़ती है ? किसी भी पुस्तक में ऐसा उल्लेख तो मिला नहीं !

दीवार के सहारे उलटते ही बदन का सारा खून मानो सिर में जमा हो रहा था। अपना सिर मुझे बहुत बड़ा महसूस होने लगा···और मैं गिर पड़ा। जल्दी से उठा—पैरों के बल खड़ा हुआ और सामने मौजूद हरगिस की ओर देखने लगा।

हरगिस बेहद गम्भीर था। फर्श की ओर देख रहा था वह।

"क्या तुम मुझे बधाई नहीं दोगे ?" मैंने उस का ध्यान अपनी ओर

आकर्षित करना चाहा, "अभी मैंने शीर्षासन करने में पहली सफलता पाई ।"

हरगिस चुप रहा। उस की निगाहें फर्श की ओर ही टिकी रहीं। चेहरा गम्भीर। सारा वदन स्थिर हो गया था उस का। कारण ?

"सुना, हरगिस ? शीर्षासन करने के साथ ही ऐसा लगा, मानो सिर के नीचे, किसी विचित्र गहराई में चट्टान लुढ़कने जैसी आवाज़ हो रही है···डरावनी-सी आवाज़···" मैं वोला ।

हरगिस का वदन अव हिला। उस की आंखें मुझ पर ठहर गईं। उस का चेहरा फक था। निगाह मिलते ही हरगिस ने पूछा, "ओम ! क्या तुम्हें भी वैसी आवाज़ सुनाई पड़ी ?"

"क्या मतलव ?" मैं सावधान हुआ, "क्या वैसी आवाज़ तुम ने भी सुनी ? लेकिन तुम तो शीर्षासन नहीं कर रहे थे।"

"ओम, उस आवाज़ का सम्वन्ध शीर्षासन से नहीं है।"

"फिर ?"

"मुझे तो ऐसा लगा, मानो भूगर्भ में अभी-अभी कोई उथल-पुथल हुई। फर्श कांपने-सा लगा था। मेरा दिल धड़क रहा है, ओम !"

"कहीं वह आवाज़ भूचाल की तो नहीं थी ?" मेरी आवाज़ सिहर गई, "भूगर्भ में आवाज़ होना और फर्श का कांपना···हरगिस ! ज़रूर अभी भूचाल आया था।"

"मुझे भूचाल से वहुत डर लगता है।"

"लेकिन वह आ कर जा चुका।"

"अगर फिर से आए ?" हरगिस ने पूछा। मैं कुछ न वोल सका। शीर्षासन के कारण अपना जो सिर मुझे फूला-फूला लग रहा था, वही सिर अव तेज़ी से सिकुड़ने लगा था।

सहसा, वाहर की सड़कों और गलियों से आवाज़ें उठने लगीं, "भूचाल ! भूचाल आया था।"

"फिर से आएगा। ज़रूर आएगा।" हरगिस वुदवुदाया। उस ने मेरा हाथ पकड़ लिया। हम दोनों सिर पर पैर रख

कर भागने लगे ।

इमारत से बाहर निकले ही थे कि वही गड़गड़ाहट ! मानो धरती के पेट में शिलाएं उछल रही हों । कैसी बीभत्स, डरावनी, प्रेतीली आवाज़ । आवाज़ के साथ ही पैरों के पास जमीन ऊपर-नीचे-सी हुई । "बाप रे !" हरगिस चिल्ला उठा । मैं और हरगिस दौडते हुए उस इमारत से बहुत दूर, एक खुले पार्क में जाने लगे, ताकि यदि इमारत गिरे, तो हम मलबे में न दब जाए ।

हर तरफ से लोग भागते आ रहे थे । अजब चिल्ल-पौ मची हुई थी । जब तक हम पार्क मे पहुचे, वहा खडे रहने की जगह भी मुश्किल से मिली । सब की आखें विस्फारित, चेहरे तपे हुए । सब के मुह से एक ही बुदबुदाहट, "भूचाल···"

तभी, धरती के अन्दर, ज़ोर की गर्जना हुई । मैं लुढक गया । मेरे पैरो के नीचे जमीन उछल चुकी थी । पता न चला, हरगिस कहां गया । पार्क के आसपास की प्राय· हर इमारत कडकडाहट के साथ गिरने लगी थी । औरतो और बच्चो के चीखने का शोर इमारतें गिरने से भी ज्यादा तेज था । सब क्षण-मात्र मे हो गया । कितनी दानवी शक्ति होती है भूचाल मे ! आप पलक झपकाते है, झपकाने से पहले देखते हैं कि दुनिया सही-सलामत है—और ज्यो ही आपने झपकी हुई पलकें उठाईं, पाया कि सब-कुछ मलबा बन चुका है !

गिरते-गिरते मुझे लगा—सारी दुनिया शीर्षासन कर रही है !

☐

भूचाल की वह तारीख—१८ अप्रैल, १९०६—केवल सैन फ्रान्सिस्को शहर में दरारें पड़ने की तारीख नही थी । उस दिन 'बसन्त अकादमी' मे भी दरार पड़ गई । भूचाल के प्रभाव में लोग ऐसे हड़बडाए कि योग-वोग सब भूल गए । पता ही न चला, सदस्यो का क्या हुआ । 'अकादमी' और उन के बीच मुख्य सम्पर्क था टेलीफोन—भूचाल ने प्राय. हर टेलीफोन चौपट कर दिया था । 'अकादमी' के अपने फोन का सवाल

ही कहां था, क्योंकि 'अकादमी' का कोई ठौर-ठिकाना था ही नहीं। कभी यहां, कभी वहां। 'अकादमी' की सचिव—वह सुन्दरी टेलिफोन के जरिये सभी सदस्यों को एकताके सूत्र में बांधकर रखती थी। ये टेलिफोन पब्लिक-बूथों से किए जाते। 'अकादमी' की सुन्दर सचिव भूचाल में शायद कहीं दब-दबा गई। वह दिन है और आज का दिन है—उस की कोई खबर नहीं मिली। वह नदारद क्या हुई, 'अकादमी' स्वयं ही नदारद हो गई। मेरी और हरगिस की मानसिकता, भूचाल के कारण, हचमचाई हुई थी कि 'अकादमी' के सदस्यों को फिर से अपने सम्पर्क में कसना—हमें यह हिमालय हटाने जैसा दुष्कर लगा।

"हरगिस !" मैंने कहा, 'वसन्त अकादमी' बना कर हम ने सिद्ध कर दिया कि भारत के योगियों और तान्त्रिकों के नाम पर पश्चिमी देशों में कुछ भी धांधली चलाई जा सकती है। अब मेरी इच्छा है कि"'हम इस शहर को छोड़ दें। यहां के लोगों का पुराना उत्साह लौटते बरसों लगेंगे। हमें किसी ऐसे शहर की शरण लेनी चाहिए, जहां इस भूचाल का कोई असर न हुआ हो। आखिर यह भूचाल सारे देश में नहीं, केवल सैन-फ्रान्सिस्को में आया था। अनेक शहर हैं, जो अब भी पुरानी शान से खड़े हैं। वे हमारा स्वागत कर सकते हैं।"

"हां, तुम्हारा कहना सही है। बोलो, कहां डेरा डालें ?"

"न्यूयार्क कैसा रहेगा ?"

"आजमाया जा सकता है। हमारे पास धन की कमी नहीं। इस के जोर पर न्यूयार्क में हमें कोई ऐसी रूपरेखा बनानी होगी, जिस में"' पुलिस से बच-बच कर रहने की मजबूरी सामने न आए।"

"कुछ सोचा है ?"

"नहीं।" हरगिस ने कहा।

मैं बोला, "मैंने सोचा है।"

'क्या ?"

"यही कि हमें अपनी बेईमानी में थोड़ी ईमानदारी भी शामिल करनी चाहिए।"

"किस तरह ?"

"भारत के योगियों और तान्त्रिकों की बाबत हमारा ज्ञान बहुत अधकचरा है ।" मैंने उत्तर दिया, "क्यों न पहले हम अपना ज्ञान बढ़ाएं ? यदि सम्भव हो, तो भारत में कुछ वर्ष भी बिता आने चाहिए। पूरी तरह लैस हो कर हम कोई ऐसी संस्था खोलें, जो धोखे की संस्था न हो। ठीक है, वह अपने सदस्यों से मोटी फी वसूल करे, लेकिन'''फी के बदले में सदस्यों को जो मिले, वह केवल धोखा न हो ।"

"हूं'''" हरगिस गम्भीर हो गया, "तो तुम इस दिशा में सोचने लगे !"

"मेरा ख्याल है, हरगिस, कि यदि सचमुच ज्ञानी होने के बाद ही हम अपना काम शुरू करें, तो पुलिस से बच-बच कर रहने की मजबूरी न होगी। हम किसी को धोखा नहीं देंगे। हम किसी के साथ चालें नहीं खेलेंगे। हम तो केवल मोटी फी वसूल करेंगे—और किसी भी व्यक्ति या संस्था को केवल इस आधार पर कानून की चपेट में नहीं लिया जा सकता कि उस की फी बहुत तगड़ी है ।"

हरगिस के होंठों पर व्यंग्य-बुझी मुस्कान फैल गई। बोला, "ओम ! खेद है कि मैं तुम से सहमत नहीं ।"

"क्यों ?"

"सौ चूहे खाने के बाद बिल्ली को हज करने नहीं निकलना चाहिए ।"

"हरगिस ! भूल सुधारने के लिए कोई भी अवसर देरी का नहीं होता ।"

"हम ने भूल की ही नहीं है। हम ने केवल वह किया है, जो किया जाना चाहिए ।"

"आखिर तुम्हें एतराज क्या है, यदि हम सचमुच ज्ञानी बन जाएं ?" मैंने भौंहें उठाईं।

"मैंने शुरू में ही कहा था कि लोगों की हजामत अदृश्य कैंची से बनानी चाहिए। ईमानदारी के नाम पर तुम चाहते हो कि हम फिर से

सचमुच की कैंची हाथ में ले लें। अन्तर केवल इतना रहे कि कैंची लोहे की न हो कर सोने की हो—और केवल इसी आधार पर हम कहें कि एक हजामत के दो डालर नहीं, बल्कि दो सौ डालर लिए जाएंगे।"

"नहीं, मेरा आशय यह नहीं है। केवल पुलिस से बचने का स्थायी और ठोस तरीका सुझा रहा हूं।" मैंने आग्रह-भरे स्वर में उत्तर दिया।

"मुझे विश्वास है कि यदि तुम फिर से सोचोगे, तो अपना निर्णय बदलने की ज़रूरत महसूस करोगे।"

"दरअसल···यह निर्णय नहीं, बल्कि राय है।" मैंने टोका।

"मैं तुम्हारे लहजे से भांप सकता हूं, ओम, कि यह केवल राय नहीं, निर्णय है।"

"मान लो, सचमुच निर्णय ही हो। फिर ?"

"सोच लो। फिर बताऊंगा।"

दो-तीन दिनों के सोच के बाद मैंने उस से कह दिया, "मेरा विचार है कि सब से पहले ज्ञानी बन जाना ही बेहतर रहेगा।"

"तो···मेरी और तुम्हारी राहें आज से अलग-अलग हैं।"

"हरगिस !"

"हां, ओम···"

□

टूट पड़ा हूं पुस्तकों पर। सैकड़ों पुस्तकें खरीद डाली हैं। जिन्हें नहीं खरीदा जा सकता, उन्हें पुस्तकालयों में बैठकें लगा-लगा कर पढ़ लिया है। मार्टिमर हरगिस, मुझ से विदा लेकर, अपने हिस्से के धन के साथ कहां चला गया—नहीं मालूम। कहीं भी हो, मैं जानता हूं कि वह अपनी अदृश्य कैंची से···

किन्तु···सैन फ्रान्सिस्को के भूचाल ने मेरी शठना को तहस-नहस कर दिया है। ईमानदारी का वह उबाल मेरे भीतर सहसा कैसे आ गया, मुझे ही आश्चर्य है—किन्तु इस उबाल को मैं नकार नहीं सकता। उबाल का सब से बड़ा प्रमाण यही है कि इस के ही कारण मेरी और

हरगिस की भागीदारी टूट गई।

मन के किसी कोने में आवाज़ उठती है, 'चलो, अच्छा हुआ। एक म्यान में दो तलवारें वैसे ही नही रह सकती। म्यान मे से एक तलवार अपने-आप बाहर निकल गई, बेहतर रहा। उस दिन, शराब के नशे में, मेरे और हरगिस के बीच, "पहले कौन" का संघर्ष हुआ था न? वैसा ही संघर्ष बाद मे भी छिड़ सकता था ··समय की लम्बी दौड़ को देखते हुए हरगिस का हट जाना उचित और सुखद रहा। प्रिय हरगिस! मेरी शुभ-कामनाएं तुम्हारे साथ है। जहां रहो, सुख-चैन मे रहो।'

□

चार साल बीत चुके हैं। कही भी ढग से मेरे पैर जम नही पा रहे। 'वसन्त अकादमी' जैसी सफलता नज़दीक आने को भी तैयार नही। मार्टिमर हरगिस शायद सच ही कहता था। मैंने ईमानदारी का यह चक्कर व्यर्थ ही चलाया।

भारत में कुछ वर्ष गुज़ार आने की इच्छा मर गई है।

शादी अब तक नही कर पाया। इधर, ये अमेरिकन लड़कियां हैं कि दिनोंदिन और-और खूबसूरत होती जा रही हैं। उनकी ओर देखा तक नही जाता। मेरा मन कितना कच्चा हो गया है!

शीशे मे अपनी आंखो को देखता हू। क्या अब भी ये आखें सर्प-आखें हैं? भांप नही पाता। क्या अब भी मैं इन वेधक आंखो से घूर कर लोगो को स्तब्ध कर सकता हू? उन्हें सामूहिक सम्मोहन के जाल में बांध सकता हूं?

विश्वास नही होता कि कभी ऐसा सचमुच किया था मैंने।

भारत मे कुछ वर्ष बिता आने के लिए मैं भले ही नही गया, किन्तु, ओह, कितनी पुस्तकें मैंने रट डाली हैं। मेरा अनुमान है, अब यदि मैं सचमुच 'शास्त्री' के इम्तहान मे बैठूं, तो प्रथम श्रेणी मे उत्तीर्ण होऊं।

□

सन् १६१० । मई । न्यूयार्क में मैंने 'पूरव का तीर्थ' की स्थापना कर ली हैं। पूरव में—खास कर भारत में—जो-कुछ भी ऐसा है, जिसे पश्चिमी जनता श्रद्धा की दृष्टि से देख सके, वह-सब 'पूरव का तीर्थ' में है । यह एक स्थायी प्रदर्शिनी और अध्ययन-कक्ष है । योग के अध्ययन के लिए यहां भांति-भांति के प्रयोग चलते हैं । यदि हरगिस यहां प्रकट हो जाए, तो मुझ पर व्यंग्य किए बिना न चूके, "आ गए न पुरानी लाइन पर ?"

क्या करूं ! आदमखोर से आप हिरन खाने के लिए नहीं कह सकते ।

□

"अरे ! आप दोनों यहां कहां घूम रही हैं ?" मैंने तपाक से कहा है ।

दोनों युवतियां पलट कर मुझे देखने लगी हैं । निगाह मिलते ही वे थम गई हैं । सैन फ्रान्सिस्को में ये दोनों 'वसन्त अकादमी' की सदस्याएं थीं । शायद अब इनकी शादी हो गई है और ये न्यूयार्क चली आई हैं । एक का नाम है जेला हाप्प । दूसरी का जरट्रड लियो । किन्तु, अब इन के सरनेम बदल गए होंगे ।

"ओह, गुरुदेव !" दोनों के मुंह से श्रद्धा-भरे शब्द फूट पड़ते हैं, "प्रणाम !" और वे सड़क पर ही, मेरी परिक्रमा करने लगी हैं । तीन परिक्रमाएं । फिर उन्होंने मेरे चरण छू कर उंगलियां आंखों से लगाई हैं । मैंने उन्हें आशीर्वाद दिया है । दोनों उठ पड़ी हैं, "आप यहां कैसे गुरुदेव ?"

"अपने जीवन का तो एक ही उद्देश्य है—जनता को योग और तान्त्रिक विद्याओं से संस्कारित करना । उसी में लगा हुआ हूं । सैन फ्रान्सिस्को में, उस भूचाल के बाद, सभी-कुछ अस्त-व्यस्त हो गया था । लिहाजा, न्यूयार्क चला आया । यहां 'पूरव का तीर्थ' की स्थापना की है ।"

" 'पूरव का तीर्थ' ? यह क्या है ?" जेला की निहायत खूबसूरत

आंखें झप रही हैं।

"लगभग वही, जो 'वसन्त अकादमी' थी। कहां जा रही हैं आप दोनों ? समय हो तो चलिए न, 'पूरव का तीर्थ' यहां से ज्यादा दूर नहीं।" मैंने कहा है। मैंने आदेश दिया है।

"क्यों नहीं।" दोनों मचल गई हैं, "चलिए।"

"आप दोनों सैन फ्रान्सिस्को छोड़ कर क्या हमेशा के लिए न्यूयार्क चली आई है ? शादी-वादी कर ली क्या ?"

"नहीं, गुरुदेव।" जरट्रड बोली है, "मैं अपने एक रिश्तेदार के यहां आई हूं। जेला मेरे संग घूमने चली आई। बस।"

"मैंने सोचा, अपनी दो पुरानी शिष्याओं को मैंने फिर से पा लिया।"

"हम आप ही की हैं, गुरुदेव।"

"सैन फ्रान्सिस्को से मेरे चले जाने के बाद—आप लोगों ने···योग आदि के अपने प्रयोग आगे चलाए या नहीं ?" मैंने जिज्ञासा की है।

"आप के जाने के बाद इस सब से हम बिल्कुल कट गए। भूचाल के बाद बहुत पता लगाना चाहा कि आप कहां हैं, किन्तु सफलता न मिली। अब, संयोग देखिए कि यहां, दूसरे शहर में राह-चलते मुलाकात हो गई !" जेला की आखें मस्ती से चमक रही हैं।

"भूचाल में···आप के घर में सब सुरक्षित तो बच गए न ? जान-माल की कोई हानि तो न हुई ?"

"बस समझिए कि बच ही गए। मकान में बड़ी-बड़ी दरारें आ गई थीं, सो ठीक करा ली हैं। भूचाल का सब से बड़ा नुकसान यह रहा कि 'वसन्त अकादमी' अस्त-व्यस्त हो गई।"

"आप लोग सैन फ्रान्सिस्को वापस कब जा रही हैं ?"

"कल सुबह ही।"

सुन कर मैं उदास होने लगा हूं। यह उदासी मेरे चेहरे पर जरा भी नहीं छन रही। पुरानी शिष्याओं को सामने पा कर मेरा पुराना गुरुपना जागृत हो गया है। रोम-रोम में आग-सी महसूस हो रही ... ये दोनों कल सुबह चली जाएंगी।

मेरे मन में अनुगूंज-सी उठती है, 'अच्छा अवसर है। अपनी आंखों की वेधकता की जांच करने का यह वढ़िया अवसर है। आंखों-ही-आंखों में इन दोनों को वींध कर न्यूयार्क में रुक जाने का आदेश दो, ओम ! इन से कहो कि आओ, हम तीनों मिल कर कविता करें—देह-सम्बन्ध की शक्ति-पूजा ! न्यूयार्क की कई नई-नवेलियां "पूरव का तीर्थ" में आती हैं, किन्तु अभी वे पूर्णतया निःसंकोची नहीं हुईं। ये दोनों तो पुरानी घाघ हैं। इन्हें मत जाने दो। इन के साथ कविता किए विना छोड़ो मत। जांचो—अपनी आंखों की वेधकता को जांच लो···सुना, ओमप्रकाश ?'

"क्या सोच रहे हैं, गुरुदेव ?"

"यही कि···'वसन्त अकादमी' के दिन भी क्या दिन थे। याद आते हैं, तो रोम-रोम में विजली-सा स्फुरण···" मैं वुदवुदाया हूं।

"आप सच कहते हैं। गुरुदेव, यकीन मानिए, हम दोनों सहेलियां आप को प्रायः रोज़ याद करती रहीं।"

"'पूरव का तीर्थ' में 'वसन्त अकादमी' की यादें और ताज़ा हो जाएंगी।" मैंने कहा है। इस के साथ ही मैंने ज़ेला और जरट्रूड के पूरे वदन को उड़ती निगाह से देख लिया है। ये दोनों अव पहले से ज्यादा भरी-पूरी हैं। मेरा सौभाग्य !

'पूरव का तीर्थ' में पहुंच कर मैंने उन दोनों को वीसेक मिनट के लिए अकेली छोड़ दिया है। 'एक आवश्यक कार्य' से मैं अपने निजी कमरे में चला गया हूं। उन्हे केवल इस उद्देश्य से अकेली छोड़ा कि कहीं वे यह न सोच लें, 'गुरुदेव चिपकू स्वभाव के हो गए हैं।" ये वीसेक मिनट उन्होंने 'पूरव का तीर्थ' में प्रदर्शित विभिन्न वस्तुओं के निरीक्षण में गुज़ारे हैं। फिर विदा लेने के लिए वे वेधड़क मेरे निजी कमरे में चली आई हैं।

मैं कुछ पढ़ने में लीन हूं।

वे कहती हैं, "जाने की अनुमति देंगे, गुरुदेव ? घर पर हमारा इन्त-ज़ार हो रहा होगा।"

मैं आंखें उठाता हूं। दोनों को घूरता हूं। दोनों जड़वत् हो गई हैं।

हूं···तो मेरी आंखों की देश-शक्ति, इतने बरसों के अन्तराल के बाद भी, इन पर पहले जैसा ही असर रखती है।

"जाओगी ?" मैं घूरता-घूरता पूछता हूं। मेरी आंखें उन्हें हुक्म दे रही हैं, 'बोलो, "नहीं।"

वे बोलती हैं, "नहीं।"

"यहीं रहना है न—गुरुदेव के सान्निध्य में ? अपनी इच्छा से ?" मैंने फिर घूरते-घूरते पूछा है। मेरी आंखों ने उन्हें समझाया है, कह दो, "हां"

उन्होंने निगाहें झुका कर कह दिया है, "हां·· गुरुदेव के पास ही रहना है। अपनी इच्छा से।"

"आओ। दोनों भीतर आ जाओ।" मैं एक ओर अन्दरूनी दरवाज़े की ओर इशारा करता हूं। दोनों मन्त्र-मुग्ध-सी चली आ रही हैं।

☐

तीन दिन बाद के कुछ अखबार मेरी गोद में रखे हैं। इन समाचारों को मैंने लापरवाही से पढ़ा है··

सैन फ्रान्सिस्को से आई हुई दो युवतियां गायब !

जेना हाप्प और जरट्रूड लियो नामक दो युवतियां, जो सैर-सपाटे के लिए सैन फ्रान्सिस्को से न्यूयार्क आई थीं, पिछले तीन दिनों से लापता हैं। पुलिस बड़ी सरगर्मी से उन की खोज कर रही है···वे बहुत अमीर घरानों की हैं।

"हुंह ! खोज !" मैं बुदबुदाता हूं। चुरुट बुझ गया है। जलाता हूं। कान लगा कर सुनता हूं—स्नानागार में वे दोनों साथ-साथ नहाती हुई कुछ गुनगुना रही हैं। नहीं। ये अखबार उन की निगाहों में नहीं आने चाहिए। मैंने सब अखबार चीर कर नष्ट कर दिए हैं। फिर उन की गुनगुनाहट के साथ स्वर मिला कर स्वयं भी गुनगुनाने लगा हूं।

☐

ज़ेला हाप्प और जरट्रूड लियो ने 'पूरब की तीर्थ' से एकाएक पलायन किया था। वे सीधे पुलिस में रिपोर्ट लिखाने पहुंची थी—कि उन्हें तथाकथित गुरुदेव ने अपने यहां जबरन कैदी बना कर रखा। न केवल इतना, बल्कि उन के साथ जबरन···

इसी लिए मसीहा जेल में।

केस अदालत मे जाए, इस से पहले डिस्ट्रिक्ट-अटार्नी के सामने प्रारम्भिक सुनवाई होनी है। जब तक यह सुनवाई नही हो जाती, मुझे सीखचों के पीछे ही रहना होगा। चलो, कोई बात नही। जीवन में सब मीठा-ही-मीठा नही, कुछ नमकीन भी होना चाहिए।

मैं जानता हू—मामला प्रारम्भिक सुनवाई से आगे बढेगा ही नहीं। लेकिन···कही ऐसा तो नही कि मेरा आत्म-विश्वास इस बार झूठा निकले ? ज़ेला हाप्प और जरट्रूड लियो यदि 'पूरब का तीर्थ' से पलायन कर सकती हैं, तो यह आवश्यक तो नहीं कि मेरी आखों का तेज—प्रारम्भिक सुनवाई के समय—उन्हें फिर से स्तब्ध कर दे।

और यदि वे स्तब्ध नहीं होतीं, मेरा सारा आत्म-विश्वास धरा रह जाएगा।

एक ओर, मन यदि आश्वस्त है, तो दूसरी ओर, यही मन आशंकित भी है।

सुनवाई शुरू हुई है डिस्ट्रिक्ट-अटार्नी ने अपने कमरे मे सिर्फ मुझे बुलाया है। भीतर जाने के साथ ही मेरी आंखों ने ज़ेला और जरट्रूड की खोज करनी चाही है, लेकिन वे अनुपस्थित हैं। शायद, उन के विशेष निवेदन के कारण, उन्हें मेरे सामने आने से बचाया जा रहा है। जरूर यही बात है, वरना, प्रारम्भिक सुनवाई के समय उन्हें भी मौजूद होना चाहिए। मौजूद तो अवश्य होंगी, लेकिन किसी और कमरे मे बैठी होंगी। वे मेरी आंखों से डर रही हैं। यह तो बडा शुभ लक्षण है।

मैंने क्षण-मात्र में अनुमान लगा लिया है कि वे दोनों किसी ऐसे कमरे मे बैठी हुई हैं, जो कहीं अगल-बगल ही है। यदि मैं अपनी आवाज धीमी न रखू, तो जरूर वे मेरे शब्दों को सुन लेंगी। मेरी आखों का

तेज उन पर जो सम्मोहक असर रखेगा, वैसा ही असर मेरी आवाज़ भी रखेगी। बेचारियों को नहीं मालूम कि यदि उन्हें मुझ से पूरी तरह छुटकारा पाना है, तो मेरी आवाज़ से भी उन्हें बच कर रहना चाहिए।

"आप का ही नाम ओमप्रकाश शास्त्री है ?" डिस्ट्रिक्ट अटार्नी का प्रश्न।

'जी।"

"आप पर कुमारी ज़ेला हाप्प और कुमारी जरट्रूड लियो ने आरोप लगाया है कि उन दोनों को आप ने उन की मर्ज़ी के खिलाफ..."

मैंने उन की मर्ज़ी के खिलाफ कुछ नही किया।"

"याने, वे दोनों, आप के कार्यालय में, स्वयं अपनी मर्ज़ी से रहीं—लगातार इतने दिनों तक ?"

"जी हां।"

"फिर उन्हें एकाएक भाग कर यहां रिपोर्ट लिखाने की ज़रूरत क्यों पड़ी ?"

"यह आप उन से पूछिए। मुझ से नहीं। वे कहां हैं ?"

"कहीं भी हों, आप हमारे प्रश्नों के उत्तर दीजिए।"

"कानून की थोड़ी-बहुत जानकारी मुझे भी है। प्रारम्भिक सुनवाई, इस तरह, एकतरफा ढंग से नहीं हो सकती। उन्हें मेरे आमने-सामने बुलाइए। उन्होंने मुझ पर झूठे आरोप लगाए हैं। मुमकिन है, मेरे किसी दुश्मन ने उन्हें बहकाया हो। मुझे पूरा यकीन है कि यदि वे एक बार मेरे सामने आ जाएं, तो अपना झूठ वे स्वीकार कर लेंगी।"

"उन्होंने विशेष निवेदन किया है कि आप के सामने उन्हें न बुलाया जाए।"

"आखिर कब तक वे मेरे सामने नहीं आएंगी ? मामला जब अदालत में पहुंचेगा—यदि पहुंचता है—क्या उस वक्त भी वे मेरे सामने आने से बच सकेंगी ?"

"दोनों युवतियों को भय है कि आप के सामने वे..."

"—सच बोल जाएंगी ! यही न ?"

"नही । वे आप से डरती हैं ।"

"यह झूठ है । वे मेरे यहा अपनी इच्छा से रही हैं । मेरे और उन के बीच जो सम्बन्ध रहे, वे पूर्णतया उन की मर्ज़ी के अनुसार थे । मुझे जरूरत ही क्या है उन्हें अपने यहा जबरन रोके रहने की ? मैं योगी हूं । शायद आप को अनुमान न लग सके कि 'योगी' का अर्थ क्या होता है । संक्षेप में इतना याद रखिए कि योगियों के मन मे लड़किया या औरतो के प्रति कोई लालच नहीं होता । योगी वह है, जो हर तरफ से तटस्थ हो ।"

"क्या आप बताने की कृपा करेंगे कि आप का नाम भारतीय शैली का क्यों है ?"

"अभी की समस्या से इस का दूर का भी नाता नही । बहुत आभारी रहूंगा, यदि आप व्यर्थ ही मेरा समय नष्ट न करें । दोनों युवतियों को सामने बुलाइए । यदि वे मेरे सामने अपने आरोप को दुहरा सकें तो लोहा मान जाऊ ।" मैंने ऊचे स्वर मे कहा है । याने, अगल-बगल के किसी कमरे मे बैठी दोनों पुतलियों को मैंने साफ-साफ चुनौती दे दी है । चुनौती ने उन के होश फाख्ता कर दिए होंगे । मेरी आवाज़ का जादू !

"वें आप के सामने नही आएगी ।"

"तो मैं इस प्रारम्भिक सुनवाई को कानूनी मानने से ही इन्कार कर दूंगा ।"

"क्या आप अपनी योग-साधना अथवा तन्त्र-विद्या के जोर पर किसी को इतना सम्मोहित कर सकते हैं कि वह स्वय का सारा विवेक ताक पर रख कर, आप की मर्ज़ी के अनुसार ही आचरण करे ?"

"इस सीमा तक सम्मोहित केवल उन्हीं को किया जा सकता है, जिन का मनोबल कमज़ोर हो ।" मैंने धीमे स्वर में उत्तर दिया है । धीमे स्वर मे इस लिए कि मैं नही चाहता, मेरे ये शब्द अगल-बगल के किसी कमरे में बैठी वे दोनो पुतलिया सुन लें । मेरा उत्तर जारी रहता है, "इस के अलावा, यदि नज़रें न मिलाई जाएं, तो कमजोर मनोबल वाले व्यक्ति को भी सम्मोहित नही किया जा सकता ।

यदि आप को सन्देह है कि मेरे सामने आते ही दोनों युवतियां सम्मोहित हो कर आरोप वापस ले लेंगी, तो मैं यही कहूंगा कि यह सन्देह निराधार है। मेरे सामने लाने से पहले आप उन्हें आदेश दे सकते हैं कि वे भूल कर भी मेरी आंखों में न देखें। आंखों में देखे बिना, किन्तु मेरे आमने-सामने आ कर, यदि वे अपने आरोपों को दोहरा देती हैं, तो मैं चुप रह जाऊंगा। जो सजा आप देंगे, स्वीकार कर लूंगा।"

"हूं···" डिस्ट्रिक्ट अटार्नी ने गम्भीरता से घुटने हिलाए हैं और नीचे, अपनी गोद में देखा है। स्पष्ट है कि मैंने उसे प्रभावित कर लिया है।

डिस्ट्रिक्ट-अटार्नी को नहीं मालूम कि मेरी आंखों में न देखने के बावजूद वे युवतियां मेरे प्रभाव से बच नहीं सकतीं। यदि वे सिर्फ आमने-सामने आ जाती हैं, तो उन्हें मेरी आवाज साफ-साफ सुनाई देगी—और इतना पर्याप्त रहेगा।

बल्कि, यदि मेरे आमने-सामने न आएं तब भी—याने' मेरी आवाज़ उन्हें धुंधली-धुंधली सुनाई पड़े, तब भी—वे मेरे प्रभाव के बोझ से दब जाएंगी।

यदि वे बहुत दूरदर्शी हैं, तो इस वक्त वे अगल-बगल के किसी भी कमरे में मौजूद नहीं होंगी—कि जहां मेरी आवाज़ पहुंच सकती हो।

किन्तु मैं नहीं सोचता कि वे इस सीमा तक दूरदर्शी होंगी। जरूर वे अगल-बगल के ही किसी कमरे में न केवल मौजूद हैं, बल्कि मेरे शब्दों को ध्यान से सुन भी रही हैं।

इसी लिए, मानो उन्हे सुनाना चाहता होऊं, इस तरह मैंने ऊंचे स्वर में कहा है, "उन दोनों को आदेश दीजिए किया तो वे मेरे सामने आ कर आरोप दोहराएं, या फिर—इस शहर से ही अपना मुंह काला करें। फौरन ! इसी वक्त !"

डिस्ट्रिक्ट-अटार्नी को सपने में भी गुमान नहीं हो सकता कि मैंने दोनों पुतलियों को आदेश दे दिया है—भाग जाओ, इस शहर से भाग जाओ, इसी वक्त भागो···भागो···

डिस्ट्रिक्ट-अटार्नी ने दो पल मौन रह कर सोचा है, फिर अपने सहयोगी को आदेश दिया है, "मिस हाप्प और मिस लियो से कहिए कि वे सामने हाजिर हों, ताकि शास्त्री जी पर लगाए गए आरोप दोहरा सकें, लेकिन उन्हें सावधान कर दें कि वे भूल कर भी शास्त्री जी की आखों में न देखें !"

"जी।" और सहयोगी बाहर निकल गया है। डिस्ट्रिक्ट-अटार्नी का अनुमान यही था कि दोनों युवतियों को साथ लिए हुए वह जल्दी लौट आएगा, किन्तु ऐसा न हुआ। वापस आने में उसे खासी देर लगी।

और जब वह वापस आया, उस के चेहरे पर खिसियाहट थी।

वह अकेला ही वापस आया था।

"क्यों ?" डिस्ट्रिक्ट-अटार्नी ने पूछा, "दोनों युवतिया कहां हैं ?"

इस के जवाब में उस ने दो कागज आगे बढ़ा दिए। डिस्ट्रिक्ट-अटार्नी ने कागज लिए, पढ़े। उस के चेहरे पर उलझन तैरने लगी।

"क्या बात है ?" मैंने पूछा

डिस्ट्रिक्ट-अटार्नी मेरी आखों में देखने लगा, "जिन कमरे में उन दोनों को बिठाया गया था, वहां वे नहीं हैं। वे जा चुकी हैं।'

"जा चुकी हैं ?" मैंने ऊपरी आश्चर्य में कहा।

"हां। जाते-जाते दोनों ने लिखित रूप में आवेदन किया है कि उन्हें ''अब'''श्री ओमप्रकाश शास्त्री से कोई शिकायत नहीं ''वे आरोप वापस ले रही हैं'''"

"मैंने कहा न, जरूर उन्हें किसी ने भड़काया होगा। मेरे दुश्मनों की कमी नहीं है। इसी लिए, जो मेरे दोस्त हैं, उन्हें भी मेरे दुश्मनों का रूप देने के लिए हमेशा प्रयास होते रहते हैं।" मैंने हुलस कर कहा है, "जो भी हैं'''मुझे खुशी है कि एक अप्रिय प्रसंग होते-होते रह गया।"

"आरोप वापस लेने हों, चाहे न लेने हों, उन्हें सामने तो आना ही चाहिए था।"

"मुझे भी यह अखर गया कि वे सामने न आईं।" मैंने उत्तर दिया है।

कई क्षणों का मौन···

फिर मैं पूछता हूं, "अब···क्या मुझे जाने की इजाज़त मिल सकती है ? क्या मैं स्वयं को निर्दोष मान सकता हूं ?"

ज़ाहिर है कि डिस्ट्रिक्ट-अटार्नी ने क्या उत्तर दिया होगा।

□

'न्यूयार्क संस्कृत कालेज'!

'पूरब का तीर्थ' का नया नामकरण मैंने यही किया है। न्यूयार्क की वेस्ट ७४ स्ट्रीट मैंने छोड़ दी है, जहां 'पूरब का तीर्थ' ने जन्म पाया था। मिस हाप्प और मिस लियो की उस घटना के बाद मेरा मन वहां से उखड़ गया। अब मैंने अपर ब्राडवे में नई, आलीशान जगह ले ली है।

'न्यूयार्क संस्कृत कालेज' में संस्कृत भाषा पढ़ाई जाती हो, सो नहीं। संस्कृत भाषा पढ़ना-एक टेढ़ा काम है। इस में न मेरी रुचि है, न न्यूयार्क की जनता की।

'पतित पावन' साहित्य ! आलमारियों की कतारें···नए सदस्यों को तो नहीं, किन्तु पुराने सदस्यों को क्रमशः इन आलमारियों का परिचय दिया जाता है। बताया जाता है कि भारत में देह-कविता कितनी सम्मानित है, कि सच्चे योगियों और तान्त्रिकों को इस कविता का रसास्वादन करना आना ही चाहिए—केवल पढ़ कर या देख कर नहीं, बल्कि स्वयं प्रयोग कर के भी ! 'न्यूयार्क संस्कृत कालेज' में ये सारी सुविधाएं, पुराने सदस्यों को, जुटा दी जाती हैं। प्रयोग कर-कर के, वे गद्‌गद् हैं।

मैं ने दावा किया है—कि मेरे शरीर में दिव्य विद्युत है। कांच के गोले को यदि मैं स्पर्श कर दूं, तो स्पर्श-मात्र से वह जगमगाने लगता है। नए-पुराने सदस्यों के सम्मुख मैंने यह प्रयोग कई बार दिखाया है।

मेज़ पर दूधिए कांच का, फुटबाल जितना बड़ा एक गोला रखा रहता है। मैं आता हूं, उसे छूता हूं। छूते ही वह जगमग जगमग !

मैं हाथ उठा लेता हूं । वह बुझ जाता है । लोग चकित ।

ओहो, लोगों को कितनी आसानी से चकित किया जा सकता है ! मैं उन्हें मन-ही-मन धन्यवाद देता हूं कि वे चकित हो रहे हैं । काश, कोई माई का लाल सामने आता और उस मेज की सूक्ष्मता से जांच करता, जिस पर दूधिए कांच का गोला रखा जाता है । जासूसी ढंग से खोज करने पर उन गुप्त तारों का भेद पा जाना मुश्किल नहीं, जो घर की बिजली के साथ जुड़े हुए हैं ।

थोड़े दिनों बाद मैंने इस प्रयोग को तिलांजलि दे दी । दो कारण थे । यह प्रयोग विशेष मौलिक या सनसनीखेज़ नहीं रह गया था, क्योंकि शहर के दूसरे भी कई तान्त्रिकों' ने मेरी देखा-देखी ऐसे प्रयोग अपने भक्तों को दिखाने शुरू कर दिए थे । दूसरा कारण यह कि ऐन मौके पर यदि घर की बिजली फेल हो जाए, तो ? फ्यूज़ उड़ जाए, तो ?

□

कोट-पतलून, टाई, हैट, चमचमाते बूट'''इस तेजस्वी युवक को मेरी आंखें बींध नहीं पा रहीं । यह पुलिस का गुप्तचर है । दरवाज़ा खुलवा कर जब उसने अपना परिचय-कार्ड मुझे दिखाते हुए कहा था कि आप से कुछ जरूरी वार्ता करनी है, तो मैं इन्कार न कर सका था । अब वह, पन्द्रह-बीस मिनटों से मुझे लगातार बोर कर रहा था ।

"अफवाह है कि इस कालेज में आप संस्कृत भाषा नहीं पढ़ाते ।"

"यह अफवाह नहीं, सच्चाई है ।" मैंने स्वीकार कर लिया ।

"फिर आपने इसका नाम 'न्यूयार्क संस्कृत कालेज' क्यों रखा है ?"

" 'संस्कृत' का अर्थ आप समझते भी हैं ? कभी भारत गए भी हैं, जो 'संस्कृत' का अर्थ समझ सकें ? 'संस्कृत' का अर्थ केवल संस्कृत भाषा नहीं है ।"

"तो ?"

"इसमें भारतीय संस्कृति का सब-कुछ समाहित है ।"

"जैसे ?"

"योग-विद्या। तान्त्रिक अनुष्ठान। भांति-भांति की कसरतें।"

"कसरतें भी ?" तेजस्वी युवक ने आश्चर्य से पूछा है।

"जी हां। योग का अर्थ केवल आसन लगाना या पूजा करना नहीं है। योग का अर्थ भांति-भांति की ऐसी कसरतें करना भी है, जो मन के साथ-साथ तन को भी स्वस्थ कर दें, क्योंकि—सारी दुनिया में यह कहावत मशहूर है कि···स्वस्थ्य मन स्वस्थ तन में ही रह सकता है।"

"याने···'न्यूयार्क संस्कृत कालेज' कसरतों का अड्डा है।"

"जी नहीं। यह अड्डा नहीं, केन्द्र है। सांस्कृतिक केन्द्र।"

"हमें भनक मिली है कि योगासनों आदि के समय—या···आप ही के शब्दों में—कसरतो के समय···यहां आने वाली महिलाएं इतने कम कपड़े पहनती हैं कि···

"कपड़े हमेशा अवसर के अनुरूप ही पहने जाते हैं। क्या समुद्र-स्नान के समय महिलाएं सरे-आम छोटे-छोटे कपड़े पहन कर बाहर नहीं निकलतीं ? कभी सुना है आपने कि कसरत करते समय पूरे-पूरे कपड़े पहने गए ? यहां हम स्त्री और पुरुष में भेद नहीं मानते। यदि पुरुष कम कपड़े पहन कर कसरत कर सकते हैं, स्त्रियां क्यों नहीं ? यहां हर व्यक्ति एक जीव है, प्राणी है—स्त्री या पुरुष नहीं।"

"याने···प्रकारान्तर से आप स्वीकार कर रहे हैं कि··"

"मैं कुछ भी स्वीकार नहीं कर रहा। स्वीकार तो अपराधों या पापों को किया जाता है, तथ्यों को नहीं। तथ्य केवल सूचित किए जाते हैं, सामने रखे जाते हैं, बताए जाते हैं। मैं कुछ भी स्वीकार नहीं कर रहा, मैं सिर्फ बता रहा हूं। क्या मैं आशा रखूं कि आप इन दोनों के बीच अन्तर समझते हैं ?" मैंने अपनी तेज-भरी आंखों से उसे देखने की कोशिश की है, " 'बताना' और 'स्वीकार करना,' क्या ये दो अलग-अलग बातें नहीं ?"

"मैं आपसे असहमत नहीं हूं, ओम जी, किन्तु···खैर···दरअसल··· हमें अनेक सूत्रों से खबर मिली है कि यहां, शैक्षणिक वातावरण की ओट में, यौन-सम्बन्धी चर्चाएं और प्रयोग···"

"आप बहुत संकुचित विचार-धारा के हैं।" मैंने घोषणा के स्वर में कहा है, "खेद है कि अब आगे मैं आप से बात नहीं कर सकूंगा; बेहतर हो, यदि आप अपनी बजाए किसी और को भेज सकें—यदि भेजना जरूरी ही हो।" और मैं उठ पड़ता हूं, "वैसे"'यह समझना मेरे लिए एकदम मुश्किल है कि आप लोग क्यों मेरे पीछे पड़े हुए हैं। यहां कोई अनैतिक गतिविधि नहीं चलती। यदि इस केन्द्र पर जासूसी करनी ही है, तो शौक से करिए, लेकिन हासिल कुछ नहीं होगा। यहां 'वैसा' कुछ नहीं है, "जैसा' आप लोग पा लेना चाहते हैं। आप अपना बेश-कीमती समय और धन व्यर्थ ही'"

☐

तंग आ गया हूं। रोज-रोज की पूछताछ'''दरअसल मुझे 'न्यूयार्क सम्मृन कालेज' खोलने के लिए अपर ब्राडवे जैसी जगह का चुनाव करना ही नहीं चाहिए था, जहां पुलिस इतनी चतुर और चौकन्नी है कि'''

अपर ब्राडवे का चुनाव मैंने इस चक्कर में कर लिया कि प्रसिद्ध और सम्मानित जगह है—लोगों पर इसका रौब पड़ेगा।

किन्तु इसकी इतनी बड़ी कीमत चुकानी पड़ रही है कि क्या कहूं। दिन को चैन, न रात को नींद।

'पतित पावन' साहित्य को छिपाने के लिए गुप्त आल्मारियां तैयार करवानी पड़ी हैं। पुलिस ने अब तक केवल पूछताछ ही की है—छापा नहीं मारा। और छापे के समय तो गुप्त आल्मारियां भी उजागर हो जाती हैं'''

गुप्त आल्मारियां बनवाने में खर्च कितना हुआ है, ओह! लेकिन'''' इसके बावजूद मुझे चैन की नींद नसीब नहीं हो रही। शक का कीड़ा हमेशा मेरे मन को कुरेदता रहता है'''क्या करूं? कैसे करूं?

सिवा इसके कुछ और सूझ नहीं रहा कि अड्डा फिर से बदल लूं।

अड्डा या केन्द्र?

केन्द्र। केन्द्र।

उस कम्बख्त गुप्तचर ने 'केन्द्र' की बजाए 'अड्डा' शब्द इस्तेमाल किया था न ? तब से, जाने-अनजाने में, मैं भी यही शब्द...

लेकिन नहीं। अड्डा नहीं। केन्द्र। केन्द्र।

□

वेस्ट एण्ड एवेन्यू !

'न्यूयार्क संस्कृत कालेज' यहां स्थानान्तरित हो गया है। यदि इसे ध्रुव-प्रदेश में ले जाया जाए, तब भी...जो इस के स्थायी सदस्य हैं, वे वहां भी पहुंच जाएंगे। श्रद्धा की बात है, और क्या !

रहा इस का सवाल कि वेस्ट एण्ड एवेन्यू में नए-नए सदस्यों को फांसा जा सकता है या नहीं, सो इस बारे में यही कहूंगा कि मनुष्य का स्वभाव सब जगह एक-सा है—चाहे अपर ब्राडवे में चले जाइए या वेस्ट एण्ड एवेन्यू में घूमिए...

संयुक्त-राज्य-अमेरिका ने प्रथम विश्वयुद्ध में प्रवेश कर लिया है। इस 'शुभ अवसर' पर 'न्यूयार्क संस्कृत कालेज' ने जनता की सेवा के लिए एक नया आयाम उद्घाटित किया है।

□

खुशखबरी ! खुशखबरी ! प्रेमिकाओं, पत्नियों, माताओं और बहनों के लिए अनोखी खुशखबरी !

क्या आपका कोई प्रिय-जन सक्रिय युद्ध में भाग लेने के लिए मोरचे पर गया हुआ है ? तब तो आपको 'न्यूयार्क संस्कृत कालेज' की सेवाओं का लाभ अवश्य लेना चाहिए।

आइए, आइए, अपने प्रिय-जनों को देखिए, उनसे बात करिए, उनके हालचाल पूछिए। मोरचे पर लड़ रहे बहादुर जवानों से साक्षात्कार करिए। अपने प्रेमी से, अपने पति से, अपने बेटे से, अपने भाई से—जिस से चाहें, उससे साक्षात्कार करिए। बातें भी करिए।

कोई धोखा नहीं। कोई फरेब नहीं। 'सोने की चिड़िया' उर्फ

भारतवर्ष मे अनेक वर्षों तक योग तान्त्रिक विद्याओं का अध्ययन कर के 'शास्त्री' की डिग्री पाने वाले डा० पियरे आर्नल्ड बर्नार्ड का आत्मिक चमत्कार ! डा० बर्नार्ड—जो ओमप्रकाश शास्त्री के नाम से ज्यादा जाने जाते हैं—केवल पचास डालर प्रति व्यक्ति फी ले कर प्रिय-जन से साक्षात्कार करा देते है। वास्तव मे, यह फी सचमुच नगण्य हैं, क्योंकि सैकड़ो-हजारों मील दूर लड रहे सेनानी मे न्यूयार्क मे ही बैठे-बैठे साक्षात्कार कराने के लिए जो नाजुक तान्त्रिक प्रयोग करने होते है, जो लम्बे अनुष्ठान आयोजित करने पड़ते हैं, उनमे ऐसी अनेक चीजें इस्तेमाल होती है, जो सीधे भारत से मंगवाई जाती हैं। उन चीजों का खर्च ही इतना है कि प्रति व्यक्ति पचास डालर लेकर भी श्री ओमप्रकाश शास्त्री अपनी जेब से ही कुछ-न-कुछ खोते हैं।

किस लिए ?

सिर्फ जनता की सेवा के लिए।

ओमप्रकाश शास्त्री को जनता से प्यार है। जनता को भी चाहिए कि ओमप्रकाश शास्त्री को प्यार करे—'न्यूयार्क सस्कृत कालेज' की सेवाए लेकर।

जिस भी प्रिय-जन से साक्षात्कार करना हो, उसका फोटो—पूरी फी के साथ—एक दिन पहले जमा कराए। साक्षात्कार अगले दिन···

□

मुझसे कइयो ने पूछा है—फोटो की आवश्यकता क्यो ? मैंने मुस्करा कर उत्तर दिया है—

मोरचे पर लड रहे लाख-लाख फौजियो के बीच आप के प्रिय-जन को आखिर किस आधार पर खोजा जाए ? आध्यात्मिक शक्तियो को भी, ऐसी खोज के लिए, एक भौतिक आधार चाहिए।

महिलाए····महिलाए· महिलाए····विभिन्न अखबारों मे छपे विज्ञापनों ने ढेरमढेर महिलाए 'न्यूयार्क सस्कृत कालेज' के दरवाजे पर ला खडी की हैं। उत्सुक महिलाए, धनी महिलाए, सुन्दर महिलाएं,

मूर्ख महिलाएं।

जो फोटो उनकी ओर से जमा करवाया जाता है, रातों रात उसका एन्लार्जमेण्ट हम तैयार करते हैं—ठीक उतना बड़ा एन्लार्जमेन्ट, जितना बड़ा कोई वास्तविक चेहरा हो। वह फोटोग्राफ एक सहयोगी के चेहरे पर नकाब की तरह लगा दिया जाता है। फोटोग्राफ का मुंह चीर कर वहां सहयोगी के होंठ पिरो दिए जाते हैं। पलकें भी सहयोगी की पलकों पर चालाकी से चढ़ा दी जाती हैं। यही नाक के साथ भी किया जाता है।

लेकिन, इतना सब करके भी, क्या यह एक निगाह में नहीं भापा जा सकता कि फोटोग्राफ के एन्लार्जमेण्ट का नकाब पहनाया गया है ?

वाह, ऐसे कैसे पहचान लेंगे आप !

वह सहयोगी आपके अापने-सामने थोड़े आता है।

काजल-लगे शीशों का सिलसिला…विशिष्ट व्यवस्था में लगे आईने…अगरबत्तियों से उठती धुएं की लकीरें…उन लकीरों का कांपता हुआ जाल…प्रेत अहसास देने वाला अजब-सा संगीत…और अन्धेरा… अन्धेरा अन्धेरा…दूर कहीं ज़रा-ज़रा टिमटिमाती रोशनी…

इस सारे जंजाल में फंस कर आप स्तब्ध रह जाते हैं…सहयोगी को एक गुप्त आईने के सामने खड़ा किया जाता है। आईने का बिम्ब दूसरे आइने में। दूसरे का बिम्ब तीसरे में। तीसरे का चौथे में। यों एक लम्बा क्रम…बीच-बीच में अगरबत्तियों के धुएं की घुमड़ती लकीरें… काजल-लगे शीशों के रहस्य-सने परदे…जो आप देखते हैं, वह केवल एक धुंधला बिम्ब होता है—प्रिय-जन के फोटोग्राफ पर आधारित आकार ! विकृत, अस्पष्ट, अजीब-अजीब-सा—किन्तु आप पहचान लेते हैं कि वह कौन है। आखिर क्यों न पहचानें। वह आप का प्रिय-जन जो ठहरा ! प्रेत-अहसास देने वाला संगीत आप को डुबाने-सा लगता है। आप प्रिय-जन से पूछते हैं, "कैसे हो, फिलिप ?" या "कैसे हो, रिचर्ड ?"

गुप्त आईने के सामने खड़ा सहयोगी, एक विशेष व्यवस्था के अनुसार, आपका प्रश्न सुन लेता है। तब, जैसा जी में आता है, वैसा उत्तर

वह फौरन देता है। "अच्छा हूं।" "किसी तरह जी रहा हूं।" "थोड़ा घायल हो गया हू, लेकिन चिन्ता की कोई बात नही है।" "घर की याद बहुत आती है।" "जाने हमारा मिलन कब होगा।" "डैडी की तबीयत कैसी है ? उनसे कहना, मैं बड़ी वीरता से लड़ रहा हूं।"

सहयोगी बोलता है, फोटोग्राफ के मुंह मे पिरोए गए उसके होंठ हिलते हैं। सहयोगी पलकें झपकाता है। फोटोग्राफ की पलकें झपकती हैं। सहयोगी का स्वर फोटोग्राफ के मुह से फूटता महसूस होता है। सहयोगी आवाज़ बदल कर, अजब-अजब स्वरो मे बोलता है।

मेरा स्पष्टीकरण—आवाज़ हजारो-लाखो मील दूर से आ रही है। बदल न जाएगी ?

प्रिय-जन का बिम्ब धुधला, विकृत और नकली-सा···

मेरा स्पष्टीकरण—जिन्दा तस्वीर हजारों-लाखो मील दूर से आ रही है। रास्ते में जगह-जगह मौसम खराब होगा। युद्ध-भूमि मे वैसे ही गोला-बारूद वगैरह मे हवा काली और अपारदर्शी हो जाती है। तस्वीर यहा तक पहुच गई, इसी को गनीमत समझिए ! कई बार तो, युद्ध-भूमि में इतनी कालिमा होती है, या—रास्ते का मौसम इतना बिगड़ा रहता है कि···तस्वीर आती ही नहीं।

प्रिय-जन की तस्वीर 'कालेज' मे जमा करते समय ही भावुक महिलाओ को एक फार्म पर दस्तखत करने पड़ते हैं—कि यदि बुरे मौसम या युद्ध-भूमि की किसी विडम्बना मे तस्वीर ठीक से यहा तक न आ सकी, अथवा यदि बिल्कुल ही न आ सकी—तो इसकी जिम्मेदारी 'न्यूयार्क सम्कृत कालेज' की नही होगी···

मगर आज तक तो एक किस्सा भी ऐसा हुआ नही, जब तस्वीर बिल्कुल न आ सकी हो।

"पटल पर तस्वीर, कभी-कभी, इसलिए भी नही उभरती कि जिस प्रिय-जन को आप देखने आए होते हैं, वह सचमुच आप का प्रिय-जन नही होता। दुनिया के सामने केवल दिखावे के लिए आप कहते फिरते हैं कि वह आपका प्रिय-जन है, जबकि मन-ही-मन उसके लिए आपके मन म कोई

मुहब्बत नहीं होती। ऐसी सूरत में तस्वीर या तो बेहद धुंधली आती है, या आती ही नहीं। इसकी भी जिम्मेदारी 'न्यूयार्क संस्कृत कालेज' की नहीं।"—यह वक्तव्य मैं प्रत्येक 'शो' के समय दिया करता हूं।

अब ज़रा इस मनोवैज्ञानिक असर पर गौर करिए।

अब तक तो कोई महिला ऐसी नहीं आई, जो किसी फौजी को केवल दिखावे के लिए अपना प्रिय-जन घोषित कर रही हो। जितनी महिलाएं आई हैं, वे सचमुच अपने किसी प्रिय-जन से ही मिलने आई हैं। दिखावा उन्हें छू नहीं गया होता इसी लिए जब वे अपने प्रिय-जन के बिम्ब को धुंधला, विकृत या नकली-सा देखती हैं, तब भी मुझ से शिकायत करने का साहस नहीं कर पातीं। यदि शिकायत करें, तो मेरा दो-टूक उत्तर यही हो—जिसे आप प्रिय-जन कह रही हैं, क्या सचमुच वह आप का प्रिय-जन है ? है भी ?

अनेकानेक महिलाओं की उपस्थिति में यदि ऐसा पूछा जाए, तो, क्या गत बने ? इसी लिए कोई भी महिला हमारे यहां से 'असन्तुष्ट' हो कर नहीं जाती। सब से वह यही कहती है, "मैंने इतनी साफ-साफ तस्वीर देखी और आवाज़ भी इतनी साफ सुनी कि लगा, वह मेरे सामने ही खड़ा है।"

भूले-भटके, कभी-कभार, पुरुष भी आ जाते हैं अपने किसी प्रिय-जन से मिलने। तब बहुत सावधानी बरतनी होती है। महिलाओं जैसी भावुकता के अभाव के कारण पुरुषों को आसानी से बेवकूफ नहीं बनाया जा सकता।

आसानी से न सही, किन्तु अब तक पुरुष भी बेवकूफ बनते रहे हैं।

□

प्रथम विश्व-युद्ध समाप्त होने को है। फौजी वापस आने लगे हैं। मैंने बहुत धन कमाया है इन फौजियों से साक्षात्कार करवाने के नाम पर। किन्तु अब···

फौजी सशरीर लौट रहे हैं। साक्षात्कार का यह धन्धा मुझे अब

समेट लेना होगा। न समेटू, तब भी यह अपने-आप सिमट जाएगा। अब ? आगे की योजना ?

सहसा मुझे मार्टिमर हरगिस की याद आ गई। योजनाएं बनाने में वह बड़ा तेज था। पता नहीं, इन दिनों कहां है, क्या कर रहा है। मुझे सैन फ्रान्सिस्को लौट कर, कभी, उस की खैर-खबर पूछनी चाहिए। अनुमान है, वह सैन फ्रान्सिस्को में ही होगा।

सोच रहा हूं'''सोच रहा हूं—कि अब कौन-सा नया करिश्मा दिखाऊं।

अच्छा, हां, ठीक है। फौजी लौट रहे हैं। जब तक वे लड़ रहे थे, मैंने उनके जोर पर धन कमाया। अब, क्या उन के लौटने की स्थिति को ले कर, धन कमाने की कोई योजना नहीं बन सकती ?

वे अपनी प्रियतमाओं के पास, अपनी पत्नियों के पास लौट रहे हैं। प्रियतमाएं और पत्नियां ! इतने लम्बे अरसे तक विछोह की आग में जलने के बाद वे अपने पुरुषों से मिलेंगी। ज़ाहिर है कि देश भर में अब देह-कविता खूब की जाएगी। क्या प्रियतमाओं और पत्नियों की इस उमंग का कोई लाभ मुझे नहीं मिलेगा ?

□

खुशखबरी ! खुशखबरी ! खुशखबरी ! इतने लम्बे अरसे बाद अपने पति या प्रेमी से मिलने वाली नवयौवनाओं को खुशखबरी !

रिवरसाइड ड्राइव पर एक नई संस्था खुली है—डा० पियरे आर्नल्ड बर्नार्ड का 'फिज़ियालाजिकल इन्स्टीट्यूट'। यहां पधारिए। अपनी जांच करवाइए। यह इन्स्टीट्यूट आप के यौवन में नई आब भर देगा। अपने प्रियतम के दिलोदिमाग पर छा जाने के लिए बेहद जरूरी है कि आप उन कुछेक शिकायतों से अवश्य मुक्त रहें, जो शिकायतें आज दुनिया की हर दूसरी या तीसरी स्त्री को अपने शिकंजे में कसे हुए हैं। क्या आप को श्वेत प्रदर है ? क्या प्रति मास आपके 'कष्टकर दिन' इतने ज्यादा कष्टकर होते हैं कि आप पलंग से उठना भी न चाहें ?

प्रेम करते समय क्या आप बहुत जल्दी पस्त हो जाती हैं, मैदान छोड़ देती हैं ? यदि हां, तो निश्चित रूप से आप के शरीर को एक नई यौवन-शक्ति की आवश्यकता है—ऐसी यौवन-शक्ति, जो केवल डा० बर्नार्ड से ही मिल सकती है।

होशियार, खबरदार ! यहां यह भी याद दिला दें कि डा० बर्नार्ड का ही दूसरा नाम श्री ओमप्रकाश शास्त्री है, जो भारतवर्ष में कई वर्ष गुज़ार कर बहुत बड़े योगी और तान्त्रिक बन कर लौटे हैं। सैन फ्रान्सिस्को और न्यूयार्क में इन के तान्त्रिक प्रयोगों ने धूम मचा दी थी।

सामाजिक उथल-पुथल की वर्तमान स्थिति को देखते हुए, डा० बर्नार्ड कुछ दिनों के लिए, अपने तान्त्रिक प्रयोग स्थगित कर रहे हैं, ताकि 'फ़िज़ियालाजिकल इन्स्टीट्यूट' को योग्य समय दे सकें।

जल्दी करिए—इस से पहले कि डा० बर्नार्ड फिर से अपनी योग और तान्त्रिक विद्या की दुनिया में गुम हो जाएं, उन की अद्भुत क्षमताओं का पूरा लाभ उठा लीजिए।

□

मज़े आ गए। चाल काम कर गई। रिवरसाइड ड्राइव की मेरी यह संस्था रातों-रात ऐसी चल निकली है कि उस का संचालन मैं अकेला ही किसी सूरत में नहीं कर सकता। मुझे अपने सहयोगियों के रूप में अनेक नर्सों और डाक्टरों की नियुक्ति करनी पड़ी है। कैसी मजेदार बात है कि स्वयं जिस के पास डाक्टरी की कोई डिग्री नहीं, उसी को अपने सहयोगियों के रूप में अनेक डाक्टरों-नर्सों की नियुक्ति करनी पड़ जाए !

किन्तु मुझे अच्छी तरह मालूम है कि इस संस्था का जीवन लम्बा नहीं हो सकता। जिन 'नारी-सुलभ शिकायतों' को दूर करने का दम हम भरते हैं, यदि वे सचमुच दूर हो सकतीं, तो आज दुनिया की हर दूसरी-तीसरी औरत इन्हीं शिकायतों से घिरी हुई क्यों नज़र आती ? ये 'नारी-शिकायतें' तो राज-रोग की तरह हैं। एक बार लगीं, हमेशा के लिए लगीं।

इसी लिए इस संस्था में स्वस्थ होने वाली महिलाएं नहीं के बराबर होंगी। मेरा यह धन्धा तभी तक चल पाएगा, जब तक नई-नई महिलाएं अपनी किस्मत आजमाने के लिए आती रहेंगी। फिर, कुछ दिनों में अफवाह फैल ही जाएगी कि संस्था बोगस है। नई-नई महिलाओं का आना रुक जाएगा। संस्था छू !

इसी लिए, अभी से आगे की कोई ऐसी चाल सोच लेनी चाहिए, जिस पर इस संस्था के छू होने की बदनामी कोई प्रभाव न डाले।

किन्तु, आहा, टकसालों में भी उस तेजी से सिक्के न ढलते होंगे, जिस तेजी से मेरी यह नई संस्था धन कमा रही है। धन्यवाद मेरे दिमाग को···

□

लेकिन आगे क्या होने जा रहा है ?

सुन्दरी सचिव ने मेरे कमरे में आते हुए कहा है, "एक देवी जी आप से मिलना चाहती हैं, हालांकि उन्हें किसी भी तरह का मर्ज नहीं है। उन का दावा है कि उन के पास कुछ अत्यन्त उपयोगी व्यावसायिक सुझाव है।"

"व्यावसायिक सुझाव?" मैंने भौंहें उठाई हैं,"एक देवी जी के पास ?"

"जी।"

"आने दो।"

उस ने प्रवेश किया है और मैं देखता रह गया हूं। इतनी छरहरी, किन्तु योग्य स्थानों पर इतनी अधिक पुष्ट कि मैं···कि मैं···

वह मुस्करा रही है। जवाब में मुझे भी मुस्कराना चाहिए। नहीं मुस्करा पा रहा। उसे निहारने में ही ऐसा तल्लीन हो गया हूं कि···

अरे, ओ, ओमप्रकाश ! होश में आ।

होश में आ गया हूं। मुस्कान के जवाब में मैंने भी मुस्कान प्रदर्शित कर दी है। सामने की कुर्सी की ओर संकेत किया है। वह बैठ गई है।

"तो···जैसा कि मेरी सचिव ने बताया, आप के पास कुछ सुझाव

हैं।" मैंने शुरू किया, "व्यावसायिक सुझाव···"

"जी हां।"

"मैं जानने के लिए उत्सुक हूं।"

वह निर्भीकता से मेरी आंखों में ताक रही है। चुप है। आज तक मैंने कोई युवती ऐसी नहीं देखी, जो इतनी निर्भीकता से मेरी आंखों में ताक सकती हो। अचानक अहसास मिलता है—उस की निर्भीकता का अवश्य कोई गहरा अर्थ है···

मुझे याद आ जाता है कि मैं योगी हूं, तान्त्रिक हूं। यदि चाहूं तो अपनी आंखों के तेज से इस युवती की निर्भीकता को क्षण-मात्र में गला सकता हूं।

गलाने का प्रयास मैं करने लगा हूं। असफलता ! अरे !

सचमुच उस युवती पर मेरी आंखों की वेधकता का कोई असर नहीं हो रहा। इस का राज ?

"आप ने कुछ कहा नहीं। आप चुप हैं।" मैंने याद दिलाया कि उसे कुछ-न-कुछ अवश्य बोलना चाहिए।

वह बोली है, "आप बिल्कुल वैसे हैं, जैसा कि मैंने सुना था···" और वह गहन-गहन मुस्कान अपने होंठों पर उभार रही है।"

मैं सावधान हुआ हूं, "जी ?"

"सचमुच देखने में आप बिल्कुल वैसे हैं, जैसा कि गुरुओं को होना चाहिए, योगियों और तान्त्रिकों को होना चाहिए।"

"जी, लेकिन आप तो व्यावसायिक सुझाव ले कर आई हैं न ?"

"ये सुझाव मैं केवल उसी के सामने रख सकती हूं, जो गुरुओं, योगियों और तान्त्रिकों जैसा नज़र आता हो।"

"आप रोमांचक भूमिकाएं बांधने में बहुत दक्ष मालूम पड़ती हैं।"

"धन्यवाद !" मेरी इस बात से वह ज़रा झेंपी है। पहली बार उस ने मेरी आंखों पर से निगाह हटाई है।

"क्या मैं आप का शुभ नाम जान सकता हूं ?"

"जाते-जाते बता दूंगी—यदि योग्य लगा।" उस ने कहा है। एक

ऐसा उत्तर, जो मेरे लिए अप्रत्याशित है।

"देखिए, मैं एक व्यस्त व्यक्ति हूं। नही चाहूंगा कि आप मेरा समय व्यर्थ···" मैंने रुतबे के साथ कहा है।

वह बोल पड़ी है, "सब से पहले मैं आप को अपना परिचय दूं। संक्षेप मे।"

"हूं···"

"जब मैं अपना नाम बताऊंगी, आप को वह परिचित-सा लगेगा, क्योंकि वह कई बार अखबारों में छप चुका है।"

"जी।"

"मैं एक जानी-मानी नर्तकी हू। न्यूयार्क मे मेरे नृत्यों के कार्यक्रम कई बार आयोजित हुए हैं।"

"बड़ी खुशी की बात है।"

"और मैं भारत मे कई वर्ष बिता चुकी हू।" ज्यों ही वह यह बोली है, मेरे कान खड़े हो गए हैं।

"भारत मे कई वर्ष ?" मेरी भौंहें सिकुड़ी हैं।

"जी हा।"

"किस सिलसिले में ?"

"मैंने वहां योग का अध्ययन किया है।"

"ओह !" मेरे होंठों पर मुस्कान आ जाती है। जिस तरह स्वय मैं भारत में 'रह कर' शास्त्री की डिग्री 'हासिल' कर आया हूं, बडा भारी योगी और तान्त्रिक बन गया हूं, उसी तरह शायद यह युवती भी भारत में रह कर योगिनी···

"शायद आप मेरे शब्दों पर विश्वास नहीं कर रहे।" मेरी मुस्कान का व्यंग्य समझ लेते हुए उस ने कहा है, "मेरे पास कई प्रमाण है, जिन से सिद्ध किया जा सकता है कि मै झूठी नहीं हू।"

"आगे कहिए।"

"मैं यह जानने आई हूं कि भारत में रह कर जब आप ने योग और तान्त्रिक विद्याओ का अध्ययन किया, तो किन-किन गुरुओं के सम्पर्क में

आए ? मुमकिन है, कुछेक गुरु आप के और मेरे एक-समान निकल आएं।"

"क्या आप मेरी 'शास्त्री' की डिग्री का परीक्षण करने आई हैं ?"

"नहीं···लेकिन सहज कौतूहल के नाते मैं भारतवर्ष में आप के सम्पर्कों की जानकारी पाना चाहती हूं।"

"खेद है, देवी जी, मैं अपने सम्पर्क एकाएक प्रकट नहीं कर सकता।"

"यदि ऐसा ही है, तो एक अनुमति आप को देनी होगी।"

"क्या ?"

"मेरे साथ शास्त्रार्थ करिए। मैं देखना चाहती हूं कि आप मेरी बराबरी तक पहुंचते हैं या नहीं।"

"यदि न पहुंचा ?" मैं व्यंग्य से हंस दिया हूं।

"तो शायद मुझे सोचना पड़े कि व्यावसायिक प्रस्ताव आप के सामने रखूं या नहीं।"

"ओह ! और मुझे अभी तक नहीं मालूम कि वह प्रस्ताव है किस तरह का।" मैंने गम्भीरता से कहा है, "आप की बातें पहेलियां जैसी हैं। पहेलियां बुझाने में मेरी रुचि नहीं।"

"मुद्दे की बात पर आऊं ?" उस की सुन्दर आंखें मेरी वेधक आंखों में ठहरने लगी हैं, "किन्तु भय है, कहीं आप बुरा न मान जाएं।"

"नहीं मानूंगा। कहिए।"

"मुझे सन्देह है कि आप शायद···भारतवर्ष कभी गए ही नहीं।"

"सन्देह का आधार, देवी जी ?" बुरा न मानने का वचन देने के बावजूद मुझे बुरा लगा है। चेहरे पर तमतमाहट···

"आधार बहुत ठोस है।" उस ने उत्तर दिया है, "अखबारों में आप जो विज्ञापन छपवाते हैं, वे हर बार ऐलान करते है कि आप भारतवर्ष कभी नहीं गए।"

"आप ने फिर पहेली बुझाने की कोशिश की। जो कहना है, साफ-साफ क्यों नहीं कहतीं ?"

"विज्ञापनों में आप स्वयं को 'शास्त्री' कहते हैं। इस डिग्री का कोई

सम्बन्ध न तो योग के साथ है, न तान्त्रिक विद्याओं के साथ। यदि मैं चाहूं, तो इसी आधार पर आप को अदालत में घसीट ले जा सकती हूं।"

सुन कर मैं सन्नाटे में आ गया हूं। यदि सचमुच यह युवती भारतवर्ष में रह चुकी है, तो अदालत में चुनौती मिलने पर इस के सामने मेरी हार सुनिश्चित है। क्षण-मात्र मे समझ गया हूं कि जिस पानी में रहता हूं, उस पानी का मगरमच्छ पहली बार सामने आया है। यदि इस मगरमच्छ के साथ मैंने बैर मोल लिया···

"बातचीत करने मे बहुत सुविधा रहेगी, देवी जी, यदि आप मुझे अपना नाम अभी बता दें। नाम की जानकारी के बिना क्या हमारे संवाद रुखे-से नही लग रहे ?"

"ब्लान्शे।"

"क्या अधूरा नाम ही बताएंगी ?"

"मिस ब्लान्शे द ब्रोस।"

"आप का नाम सुना हुआ तो नही, पढा हुआ अवश्य लगता है। मेरा ख्याल है, आप के नृत्य के फोटो-वोटो भी मैंने कहीं देखे हैं।"

"असम्भव नही।"

"जहां तक मुझे याद है, अखबारों में आप की आलोचना कभी नही हुई···हमेशा प्रशंसा ही छपी है।"

"वह इस लिए कि मैं ढोंगी नही हूं।"

"जी ?" मैंने नाराजगी से देखा है उस की ओर। मुझ पर उस ने कितना करारा व्यंग किया ! उसे यह अधिकार किस ने दिया ?

"मैं एक सच्ची कलाकार हूं। जब मैं भारत की नृत्य-पद्धितिया पेश करती हूं, तो वे सचमुच भारत की ही नृत्य-पद्धतियां होती हैं। मेरे कार्यक्रमों मे कही कुछ भी झूठा नही होता।"

"सच और भूठ का फैसला क्या इतना आसान है, मिस ब्लान्शे द ब्रोस ?" मैंने अत्यन्त गम्भीरता के साथ उत्तर दिया है, "ऐसी कोई कसौटी नही, जिस से अन्तिम रूप से पता चल जाए कि भूठ क्या और सच क्या। एक भूठ को आप सौ बार दोहराइए—वह सच बन जाता

है। इसी तरह, मेरे लिए जो झूठ है, वही आप के लिए सच हो सकता है। और···जो आप के लिए झूठ है, वही मेरे लिए···"

"मैं इस तरह के दार्शनिक शब्द-जाल में उलझना नहीं चाहती।" ···न्शे ने टोक दिया है, "मेरे अनुसार, सच सच होता है और झूठ झूठ।"

"जो भी है, मैं आप का व्यावयायिक प्रस्ताव सुनने को उत्सुक हूं।"

"तो···क्या मैं यह मानकर चलूं कि आप की 'शास्त्री' की डिग्री झूठी है?"

"आप और क्या-क्या मानना चाहती हैं?" मैं गहराई से मुस्करा दिया हूं।

"न आप 'शास्त्री' हैं; न योग अथवा तान्त्रिक-विद्याओं का ही कोई व्यवस्थित ज्ञान आप को है। इस के बावजूद आप ने अपने झण्डे गाड़ रखे हैं, क्योंकि···आप को देखने ही से लगता है···आप गुरु हैं, योगी हैं, तान्त्रिक हैं···आप का सारा खेल केवल आप के व्यक्तित्व का है। मैं मान कर चलना चाहती हूं कि आप के पास सिवा इस अद्भुत व्यक्तित्व के और कुछ नहीं है।"

"यदि आप ऐसा माने बिना अपना प्रस्ताव सामने रखने को राजी नहीं, तो···आप ऐसा मान कर चल सकती हैं।" मैंने राजनीतिक शैली का जवाब लौटाया है।

उस ने मेरे जवाब की शैली पहचान ली है। मुस्करा दी है वह। बोली है, "व्यक्तित्व मेरे पास भी है, किन्तु दूसरे ढंग का। लोग मुझे देख कर मोहित हो जाते हैं, जबकि आप को देखते ही वे सन्नाटे में आ जाते हैं। नर्तकी बनने के लिए मेरा व्यक्तित्व बढ़िया है, किन्तु···जिस तरह के शास्त्रीय नृत्य मैं पेश करती हूं, उस में लोगों की विशेष रुचि नहीं है। अखबारों में प्रशंसा छप जाती है, तस्वीरें भी प्रकाशित हो जाती हैं, लेकिन···जहां तक अर्थ-लाभ का प्रश्न है; मैं अभी तक सुबह कमाओ, शाम को खाओ वाली स्थिति में हूं। मैं धन कमाना चाहती हूं···बहुत ऐश्वर्य चाहती हूं मैं! इसी लिए मैं किसी ऐसे व्यक्ति की खोज में हूं,

जो गुरुओं जैसा भव्य हो, तान्त्रिकों जैसा रहस्यमय और योगियों जैसा रोमांचक हो।"

"याने—मैं ?"

"आप के व्यक्तित्व की चर्चा मैंने कइयों से सुनी। आप की डिग्री के रूप मे 'शास्त्री' शब्द देख कर ही मैं जान गई कि आप···पोला ढोल बजा रहे हैं।"

"ढोल हमेशा पोला ही होता है।"

"सही बात है। दरअसल···आप के पास ढोल है, जबकि मेरे पास है ही नही। यदि मेरे पास भी ढोल हो, तो वह पोला ही होगा।"

"आप से बातें करना आनन्ददायक अनुभव है, मिस ब्लान्शे द ब्रौस··· किन्तु···आप मेरे धीरज की परीक्षा ले रही हैं। अभी तक आप ने नही बताया कि जो व्यावसायिक प्रस्ताव आप मेरे सामने रखने को इच्छुक हैं···"

"सच पूछें, तो प्रस्ताव मैं रख चुकी हूं।"

"याने···आप चाहती हैं कि मेरे वेधक व्यक्तित्व और आप की कला के मेल से कोई नई खिचड़ी पकाई जाए।"

"जी हां···लेकिन बहुत ज्यादा बेईमानी कर के नही। आधार तो ईमानदारी का ही हो; बेल-बूटों के लिए कही-कहीं बेईमानी का स्पर्श··· बस।"

"जबकि···आप के अनुसार, अब तक मैं जो करता रहा हूं, उस में आधार ही बेईमानी का है। यही आशय है न आप का ?" मैंने पूछा है। ब्लान्शे बोली है, "जी हां, फिलहाल मेरा आशय यही है।"

"आप क्यों चाहती हैं कि नीव मे बेईमानी नही, बल्कि ईमानदारी हो···और बेईमानी को केवल सजावट के लिए कहीं-कहीं···"

"क्योंकि भारतीयों ने कहा है···अति सर्वत्र वर्जयेत !"

"क्या मतलब ?"

"याने अति किसी भी क्षेत्र में अच्छी नही होती।" ब्लान्शे ने मतलब बताया है, "आप ने यह अस्पताल खोला है [illegible] का उदा-

हरण दूं। मैं जानती हूं कि जिन बीमारियों को, जिन शारीरिक शिकायतों को दूर करने का दम आप भरते हैं, वे कभी दूर नहीं हो सकतीं। इसी लिए···नींव में ही बेईमानी होने के कारण—यह अस्पताल थोड़े दिनों में या तो यहां से उठ जाएगा, या बन्द हो जाएगा। इस की बजाए···यदि नींव में ईमानदारी रखी जाती; दुनियादारी के लिए बेईमानी को सिर्फ कहीं-कहीं स्वीकारा जाता, तो···इस अस्पताल की रूपरेखा कुछ और होती। निश्चित ही उस रूपरेखा में यह अस्पताल ज्यादा दिनों तक ज़िन्दा रह सकता। मैंने विभिन्न अखबारों की पुरानी फाइलें टटोल कर आप के द्वारा छपवाए गए विज्ञापनों की जांच कर ली है। मैंने पाया है कि बार-बार आप को अपनी कम्पनियों के नाम बदलने पड़े हैं। पते भी बार-बार बदले गए हैं। ऐसा शायद इसी लिए कि जहां भी आपने डेरा डाला, पुलिस ने आ कर उखाड़ दिया। खानाबदोशों की तरह भटकने की यह नौबत कभी न आती, यदि अपनी योजनाओं की नींव में आप ने बेईमानी की बजाए ईमानदारी को तरजीह दी होती।"

"भाषण बहुत हो चुका।" सहसा मैं अकुला कर बोल पड़ा हूं, "आप के सारे अनुमान गलत हैं। 'शास्त्री' की मेरी डिग्री नकली नहीं। यदि आप सोचती हैं कि मैं झूठा योगी और झूठा तान्त्रिक हूं, तो भयानक गलती कर रही हैं। अब आप जा सकती हैं।"

"आप बिल्कुल बुरा नहीं मानेंगे, ऐसा मैंने नहीं सोचा था।" उठते-उठते वह बोली है, "जैसा आप का आदेश। अभी मैं जा रही हूं। फिर मिलेंगे।"

"कोई ज़रूरत नहीं।"

"इस का फैसला बाद में ही करेंगे।" और वह आत्म-विश्वासी कदमों से बाहर निकल गई है।

बाहर से उस ने दरवाज़ा धीमे से उढ़काया है। मैं उस दरवाज़े की ओर तकता रह गया हूं। ब्लान्शे ने मुझे हचमचा दिया है, इस से इन्कार कैसे करूं? जीवन में बहुत कम अवसर ऐसे आए हैं, जब मैं किसी की

चुनौतियों को सह न पाया होऊं। हर चुनौती मैंने घोंट कर पी ली है। आज ?

ब्लान्शे ने, वास्तव में, मेरे सामने केवल सन्धि-प्रस्ताव नही रखा है। उस ने तो चुनौती ही दी है। धमका कर सन्धि करवाने का यह प्रयास मैं सहन नही करूंगा।

किन्तु''यह युवती इतनी सुन्दर क्यों थी ? जाते-जाते कह गई है, "फिर मिलेंगे।"

☐

अगला ही दिन।

डाकिए ने ढेर-ढेर चिट्ठियां मेरी मेज पर रखी हैं। ये सब रजिस्टर्ड चिट्ठियां हैं। जो रजिस्टर्ड नही होतीं, वे तो बाहर के लेटर-बक्स में ही डाल दी जाती हैं। मैं दस्तखत कर-कर के सब रजिस्टर्ड चिट्ठियों को लेता जा रहा हू।

डाकिया चला गया है। मैं चिट्ठियां खोल रहा हू। अकस्मात् सावधान होने लगता हू। किसी वकील ने मुझे रजिस्टर्ड नोटिस दिया है।

नोटिस !

न्यूयार्क की 'मेडिकल सोसायटी' की ओर से अपने नोटिस मे वकील कहता है—"यह 'मेडिकल सोसायटी', जो जनता के स्वास्थ्य की रक्षा के लिए मिशनरी भावना से काम करती है, बहुत खेद के साथ आप को सूचित करती है कि महिलाओ की जिन शारीरिक शिकायतो को दूर करने का दावा आप के 'फिजियालाजिकल इन्स्टीट्यूट' द्वारा किया जा रहा है, वह भ्रामक है। न केवल भ्रामक, बल्कि इस मे धोखेबाजी भी है। न्यूयार्क की अनेक प्रतिष्ठित महिलाओ ने हमारे पास लिखित शिकायत भेजी है कि उन्होने तगड़ी फी दे कर आप के 'इन्स्टीट्यूट' मे इलाज करवाया और उन्हें रंच-मात्र भी लाभ न हुआ। विश्वस्त सूत्रों से हमें यह भी ज्ञात हुआ है कि आप अपने नाम के आगे 'डाक्टर' शब्द का इस्तेमाल करने के हकदार नही हैं। डाक्टरी की डिग्री तो दूर, आप के

पास इस क्षेत्र की उतनी जानकारी भी नहीं, जो घाव पर पट्टी बांधने वाले एक मामूली-से-मामूली कम्पाउण्डर के पास होती है।

"लिहाजा आप को चेतावनी दी जाती है कि इस पत्र के पाते ही अपना तथाकथित 'फिजियालाजिकल इन्स्टीट्यूट' बन्द कर दें। ऐसा न करने पर, जनता के स्वास्थय के साथ खिलवाड़ जारी रखने पर, गम्भीर परिणाम भुगतने पड़ सकते हैं। हम आप को स्पष्ट बताना चाहते हैं कि आप चुटकी बजाते जेल में ठूंस दिए जाएंगे···"

नोटिस फाड़ कर मैंने रद्दी की टोकरी में डाल दिया है।

लेकिन क्यों ऐसा लग रहा है कि रद्दी की टोकरी में आग लगी हुई है?

□

धन्यवाद···धन्यवाद···आप सब का धन्यवाद···

और क्षमा-याचना भी - उन सब से क्षमा-याचना, जो अब तक हमारे 'फिजियालाजिकल इन्स्टीट्यूट' की सेवाएं लेने की सोचते ही रह गए!

यह 'इन्स्टीट्यूट हमेशा के लिए बन्द किया जा रहा है—इस लिए नहीं कि इसे धन की या मरीजों की कमी पड़ गई, बल्कि इस लिए कि इस के संचालक श्री ओमप्रकाश शास्त्री, उर्फ डाक्टर पियरे आर्नल्ड बर्नार्ड, मूलतः एक योगी और तान्त्रिक हैं। 'इन्स्टीट्यूट' की स्थापना के समय ही घोषित हो गया था कि श्री ओमप्रकाश शास्त्री, कभी भी, योग और तान्त्रिक विद्याओं की अपनी दुनिया में वापस चले जाने का फैसला कर सकते हैं। इसी लिए हम ने शुरू से स्पष्ट रखा कि जिन्हें लाभान्वित होना हो, वे शीघ्रता करें।

जिन्होंने शीघ्रता नहीं की, जिन्होंने सोच लिया कि इतने जोरों से चलने वाला इन्स्टीट्यूट अब कभी बन्द नहीं होने वाला—उन सब से क्षमायाचना कर लेने के सिवा हमारे पास दूसरा कोई चारा नहीं।

कारण—श्री ओमप्रकाश शास्त्री, अपने योग और तान्त्रिक अनुष्ठानों के विकास के लिए, बड़े-से-बड़ा त्याग भी करने को तैयार हैं। शास्त्री जी के लिए धन का कोई अर्थ नहीं···

शास्त्री जी केवल जनता की सेवा करना जानते हैं। 'इन्स्टीट्यूट' भी जनता की सेवा ही कर रहा था, किन्तु उसे बन्द केवल इस दृष्टि से किया जा रहा है कि शास्त्री जी—प्रथम श्रेणी के डाक्टर होने के बावजूद—स्वयं को मूलतः एक योगी और तान्त्रिक मानते हैं।

इसी क्षेत्र में वह ज्यादा न्याय कर सकते हैं।

इसी लिए वह अपने 'न्यूयार्क संस्कृत कालेज' के संचालन के लिए वापस-जा रहे हैं।

'न्यूयार्क संस्कृत कालेज' का नया सत्र कब और किस जगह शुरू होगा, इस का ऐलान शीघ्र किया जाएगा।

धन्यवाद'''धन्यवाद'''

क्षमायाचना'''क्षमायाचना'''

□

बड़े-बड़े अखबारों में छपे विज्ञापन ! नोटिस दिया गया था न कि मैं अपने नाम के आगे 'डाक्टर' शब्द न लगाऊं ? विज्ञापनों में, किन्तु धड़ल्ले से मैंने अपने-आप को 'डाक्टर' लिखा है। मुझे विश्वास है कि आदेश का उल्लघन होने के बावजूद 'मेडिकल सोसायटी' इस बारे में अब टांग नहीं अड़ाएगी। उस का मूल उद्देश्य था 'फिजियालाजिकल इन्स्टीट्यूट' बन्द करवा देना। इस आदेश का पालन मेरी ओर से हो ही चुका। अब, 'मेडिकल सोसायटी' अपनी दुनिया में और मैं अपनी दुनिया में।

किन्तु'''मुझे हारना पड़ा। मन कितना खट्टा है !

याद आ रही है मिस ब्लान्शे द ब्रीस। उस ने भविष्यवाणी कर दी थी कि'''हुंह, भविष्यवाणी की ऐसी-की-तैसी ! भविष्यवाणी के बिना ही, काफी पहले ही, मैंने सोच-समझ लिया था कि 'इन्स्टीट्यूट' कोई अमर संस्था नहीं है।

किन्तु ब्लान्शे जैसी योग्य सुन्दरी की मैंने जिस तरह उपेक्षा की'''

मुझे ऐसा नहीं करना चाहिए था।

चुरुट पी रहा हूं।

क्या 'न्यूयार्क संस्कृत कालेज' को फिर से जीवित करूं?—जैसा कि मैंने विज्ञापनों में वादा किया है? या…किसी नए स्थान पर कोई नई संस्था?"

यदि कालेज को जीवित न करूं, तो भी…मुझे गाली कोई नहीं देगा। लोगों को याद ही नहीं रहेगा कि मैंने कैसा वादा किया था। लोगों की याददाश्त बहुत छोटी होती है। बड़ी-बड़ी बातें भी वे रातों-रात भूल जाते हैं। यहां तक कि वे महान् योगी और तान्त्रिक श्रोम-प्रकाश शास्त्री को भी भूल जाएंगे—यदि कोई-न-कोई शिगूफा तुरन्त न छोड़ा गया।

किरिरिरि…काल-बेल बज रही है। उठ पड़ता हूं। एक हाथ में चुरुट। दूसरे हाथ से दरवाजा खोलता हूं।

सामने ब्लान्शे खड़ी है।

"हैलो!" मैं गद्गद।

"हैलो, तान्त्रिक!" वह हंसती है, "हाऊ आर यू?"

"आइए न, भीतर आ जाइए।" मैं कहता हूं। वह भीतर आ जाती है। बैठती नहीं। "बैठिए।" मैं सोफे की ओर इशारा करता हूं। वह बैठ जाती है—सावधान मुद्रा में। मेरी और उस की निगाहें मिलती हैं। आज मैं अपनी आंखों के तेज से बींधने का प्रयास नहीं कर रहा।

निगाहें मिला कर, मानो खामोशी से वह मुझ से कह रही है, "इन्स्टीट्यूट" हो गया न बन्द? मैंने भविष्यवाणी की थी न कि बन्द हो जाएगा? अब आगे क्या योजना है?'

निगाहें मिलाकर, अब वह विजयिनी मुस्कान मुस्करा रही है। मैं उसे मुस्कराने देता हूं। स्वयं भी मुस्कराना चाहता हूं। स्वयं भी मुस्कराने लगता हूं। मेरी मुस्कान उस की मुस्कान को और गहन कर देती है। तब मैं खिसिया कर हंस पड़ता हूं।

वह कहती है, "मुझे शक था, शायद आप पहचानेंगे नहीं।"

"न पहचानता, तो उस का अर्थ यही होता कि पहचान कर भी

"नहीं ।" मैं हंस देता हूं ।

"श्रेय मुझे नहीं ? तो किसे ?"

"स्वयं मुझी को ।"

"अरे !"

"दरअसल···ब्लान्शे जी···मेरे भीतर दो व्यक्ति हैं । एक अच्छा । एक बुरा । अच्छे व्यक्ति के साथ दिक्कत यह है कि वह अवसर खोता रहता है । बहुत पहले मेरा एक भागीदार था—मार्टिमर हरगिस । उस से अलग मैं इसी आधार पर हुआ । वह कहता था···जड़ से फुनगी तक बेईमानी का खेल खेलो । मैंने विरोध किया कि नहीं, जड़ में तो ईमानदारी ही होनी चाहिए । हरगिस से अलग तो मैं हो गया, किन्तु···फिर स्वयं मैंने ही ऐसे खेल शुरू कर दिए, जिन में जड़ से फुनगी तक बेईमानी हो, सिर्फ बेईमानी ! मेरे भीतर का अच्छा आदमी चादर ओढ़ कर सो गया । बुरा आदमी जागता रहा ।"

"हूं ।"

"इसी लिए कहता हूं कि मेरे अच्छे आदमी को जगाने का श्रेय आपको नहीं है । स्वयं मेरा ही अवचेतन मन उसे जगाता रहा है—निरन्तर !"

"आप ने श्रेय मुझे न लेने दिया···मेरे लिए यह निराशा की बात है ।" ब्लान्शे की आंखें चमक रही हैं !

वास्तव में, यदि ब्लान्शे की आंखें उतनी न चमक रही होतीं, तो उस के वाक्य का अर्थ मैं यही लगाता कि उसे बुरा लगा है । किन्तु··· उस की आंखों की चमक ने प्रमाणित कर दिया कि यह मुझ से दूसरी बार मिलकर खुश हो गई है—इतनी खुश कि नाराज कर देने वाली बातों को भी आसानी से पचा सकती है ।

"लेकिन मैं आप की निराशा दूर करने के लिए प्रस्तुत हूं ।" मैंने जल्दी से कहा है, "यदि आप के साथ मिल कर कोई जोरदार योजना बनाई जा सके··· सच बताऊं ? पहली मुलाकात में मैंने आप के साथ दुर्व्यवहार ही किया था । बाद में बहुत पछताया ।"

"छोड़िए। आगे की सुध लीजिए।"

"आप की क्या राय है? 'न्यूयार्क संस्कृत कालेज' को ही पुनर्जीवित किया जाए?"

"मैं हां नही कहूंगी।"

"वजह ?"

"यह नाम ही गलत है। इस देश में पहले ही हजारों कालेज हैं। उनके बीच एक कालेज और खोल कर अपना व्यक्तित्व अलग कैसे किया जा सकता है?"

"यह कालेज नाम का ही कालेज होगा। असलियत मे तो…"

"फिर वही बात ? जड़ में ही बेईमानी वाली ?"

"अच्छा, ठीक है। यह नाम खारिज।"

"केवल नाम की बात नहीं। मैं कालेज के आइडिया से ही असहमत हूं।"

"क्या आप ने कोई और योजना बनाई हुई है ?"

"नही, क्योंकि आप मेरे साथ सहयोग करेंगे, यह बात अभी-अभी ही तो तय हुई। जब तक यही स्पष्ट नही था, मैं क्या योजना बनाती? लेकिन…अभी जब हम दोनो मिल कर सोच रहे हैं…कुछ ऐसा सोचा जाना चाहिए, जिस मे दोनो की योग्यताओ का अधिकतम उपयोग हो।"

"आप ने सही कहा।"

"उस दिन मैंने आप को अपनी अधिकाश योग्यताओ के बारे मे बता दिया था।" ब्लान्दो की गम्भीरता बढ रही है, "केवल दो योग्यताएं रह गई थी।"

"दो और योग्यताएं ?"

"एक तो यह कि मैं केवल अच्छी नर्तकी नही, बल्कि मुझे रंग-सज्जा का भी गहरा ज्ञान है। हमारे मन पर रंगों का इतना गहरा असर पड़ता है, जिस की शायद किसी को कल्पना ही न हो। अध्ययन-कक्ष का केवल रंग बदल कर ही विद्यार्थी की क्षमताओं मे आश्चर्यजनक परिवर्तन लाए जा सकते हैं। रंग-सज्जा में रोशनी के रंग भी शामिल हैं, केवल दीवार

के रंग नहीं। मसलन—गलत ढंग की रोशनी में खेला गया अच्छे-से-अच्छा नाटक भी पिट सकता है। दूसरी ओर, सही रोशनी में साधारण नाटक भी असाधारण का आभास दे सकता है।" ब्लान्शे कह रही है, "कालेज-वालेज पर मेरी इस योग्यता का समुचित उपयोग हो सकेगा या नहीं, मैं संशय में हूं।"

"ठीक बात है। कालेज में हद-से-हद यह होगा कि आप एकाध लेक्चर दे लेंगी। बस।"

"अब मैं दूसरी योग्यता पर आती हूं। गौर से सुनिएगा, क्योंकि··· यह योग्यता शुरू में योग्यता ही नहीं लगेगी।"

मैं गौर से सुनने लगा हूं। पहले भी गौर से ही सुन रहा था। अब और ज्यादा गौर से। ब्लान्शे खिसक कर सोफे के एकदम किनारे आ गई है। यह उस के अधैर्य का सूचक है। उस का स्वर धीमा हो गया है।

"ओम जी···" उस ने शुरू किया है, "शास्त्रीय श्रेणी की नर्तकी होने के कारण मुझे आम जनता के बीच लोकप्रियता नहीं मिली—इसी लिए धन भी नहीं मिला—किन्तु एक बढ़िया कलाकार के रूप में मुझे जो शोहरत मिली, उस का लाभ यह रहा कि मैं न्यूयार्क के अनेक ऊंचे घरानों में आने-जाने लगी हूं। सांस्कृतिक गतिविधियों का संचालन हमेशा ऊंचे घराने ही तो करते हैं। यदि आप आम जनता के बीच नहीं, किन्तु ऊंचे घरानों के बीच लोकप्रिय हो जाएं, तो···थोड़ी समझदारी बरतने पर···आप की जेब खूब गर्म हो सकती है।"

"हां, ब्लान्शे जी, किन्तु इन ऊंचे घरानों से मांगने की भी एक कला है। सीधे-सीधे मांगने पर कुछ नहीं मिलता। ऊपर से इज्जत भी कम होती है।"

"हां, ओम जी ! मेरे सामने भी यह स्पष्ट है। मेरी हालत खस्ता इसी लिए तो है कि मैंने ऊंचे घरानों में कभी हाथ नहीं फैलाया। आती जाती हूं, दोस्ती करती हूं, लेकिन कभी नहीं कहती कि मुझे धन की जरूरत है। मांगने पर एक बार मिलेगा, दो बार मिलेगा—क्योंकि, अन्ततः तो वह दान ही होगा—और दान बार-बार नहीं मिला करता।

इस की बजाए, कोई ऐसा तरीका सोचना चाहिए—हम दोनों को मिल कर—जिस से हमारी नियमित आय का साधन तैयार हो।"

"आप की इस दूसरी योग्यता में सचमुच अनेक सम्भावनाएं हैं।" मैंने सिर हिलाया है, "ऊंचे घरानों के बीच उठना-बैठना, मेरे लिए, अभी तक सम्भव नहीं हुआ। उस क्षेत्र में मेरे विशेष सम्पर्क नहीं। आप के हैं। इस का लाभ उठाना चाहिए। दूसरी ओर, आप के पास गुरुओं जैसा वेधक व्यक्तित्व नहीं है। वह मेरे पास है। इस का लाभ आप को उठाना चाहिए।"

"आप के वेधक व्यक्तित्व को मैं और वेधक बना सकती हूं, ओम जी, क्योंकि योग और तान्त्रिक विद्याओं का आप का ज्ञान, अब तक, केवल पुस्तकों के अध्ययन तक सीमित रहा है। आप इसे स्वीकार करते हैं या नहीं?"

"हां।"

"जबकि मैं स्वयं भारत में अनेक वर्ष गुजार चुकी हूं। जितना आप जानते हैं, उस से ज्यादा मैं जानती हूं। परदे के पीछे, आप के गुरु जैसा उत्तरदायित्व तो मैं ही सम्भालूंगी। आप के ज्ञान के व्यावहारिक पहलू में जो कमजोरी है, सारी मैं दूर कर दूंगी। सोचिए, इस से आप का आत्म-विश्वास, जो पहले ही से इतना बढ़ा हुआ है, तब और कितना बढ़ जाएगा। ठीक है न ?"

"ठीक है।"

"याने...हम दोनों को मिल कर योगियों और तान्त्रिकों की कोई संस्था खोलनी चाहिए, जो भारत के साथ सीधा सम्बन्ध रखती हो—याने, रखने की घोषणा करती हो। तान्त्रिक अनुष्ठानों का विचित्र वातावरण तैयार करते समय मंच-सज्जा और रंग-सज्जा का मेरा ज्ञान उपयोगी रहेगा। इस देश के ऊंचे घरानों को भारत की रहस्यमय प्रणालियों में गहरी दिलचस्पी है। उन घरानों के खास-खास लोगों को पटा कर अपनी नई संस्था के सदस्य बना लेने की जिम्मेदारी मैं सम्भाल लूंगी।"

"हुं...लेकिन, ब्लान्शे जी...आप एक अच्छी नर्तकी भी तो हैं। इस क्षमता का उपयोग ?"

"तान्त्रिक अनुष्ठानों के समय क्या सांस्कृतिक कार्यक्रम भी पेश नहीं किए जा सकते ? मैं ऐसे नृत्यों की रूपरेखा बना सकती हूं—पूर्णतया मौलिक रूपरेखा—जो योगासनों से सीधा सम्बन्ध रखते हों। नृत्यों के माध्यम से बताया जाए कि किस योगासन का क्या मतलब है, उपयोगिता क्या है, इत्यादि।"

"न्यूयार्क संस्कृत कालेज' और इस तान्त्रिक संस्था में मूल अन्तर क्या होगा ?"

"मूल अन्तर तो नहीं, लेकिन कुछ-न-कुछ अन्तर अवश्य होगा। पहला अन्तर, हम संस्कृत भाषा नहीं पढ़ाएंगे।"

" 'न्यूयार्क संस्कृत कालेज' में ही कौन-सी संस्कृत भाषा पढ़ाई जाती थी।"

"नहीं पढ़ाई जाती थी ?" ब्लान्शे ने अचरज से कहा, "किन्तु नाम से तो ऐसा लगता है कि..."

"नहीं। संस्कृत नहीं पढ़ाई जाती थी।"

"दूसरा अन्तर यह होगा कि हम इस तान्त्रिक संस्था को न्यूयार्क में नहीं, बल्कि नजदीक के किसी गांव में स्थापित करेंगे।"

"गांव में ? क्यों ?"

"क्योंकि तान्त्रिक संस्थाओं को गांव में ही होना चाहिए—शहर के अप्राकृतिक कोलाहल से दूर, गांव की परम प्राकृतिक शान्ति में..."

"हुं।"

"गांव ऐसा हो, जहां न्यूयार्क के लोग आसानी से पहुंच सकते हों—अपनी कारों में। कानून की रक्षा के लिए गांव में जो भी अधिकारी होंगे, वे सब हमारे रुतबे में, धीरे-धीरे आ ही जाएंगे। शहर के अधिकारियों पर ऐसा रौब जमाना असम्भव रहता है।"

"हां, यह मुद्दा सचमुच महत्व का है।" मैंने स्वीकार किया है।

"हमारी तान्त्रिक संस्था, कहीं-न-कहीं, कानून का उल्लंघन अवश्य

करेगी, क्योंकि तान्त्रिकों के तौर-तरीके, यहां के कानून के अनुसार, 'अ-सामाजिक' या 'अ-नैतिक' की संज्ञा पा सकते हैं। इस के अलावा, मैं कभी नही कहूगी कि हमेशा ईमानदारी ही बरसती जाए। जब, समय-समय पर बेईमानी करनी होगी, तो—कानून के रक्षकों से मुठभेड़ हो कर रहेगी। इसी लिए; गाव में, शहर की बनिस्बत हम ज्यादा शान्ति से, ज्यादा सुरक्षा के साथ अपना कार्य आगे चला सकेंगे।"

"मेरा ख्याल है ब्लान्शे जी, यह तान्त्रिक संस्था शुरू तो शहर मे की जाए, किन्तु...सदस्यों की संख्या अच्छी हो जाने के बाद, गाव में ले जाई जाए। शुरुआत ही गाव मे न की जाए।"

"हुं..." ब्लान्शे सोच में पड गई है।

□

मैं अजगर पहन रहा हू—ब्लान्शे की सहायता से! अजगर? यह पगडी क्या अजगर जैसी लम्बी नही? लम्बी और भारी-भरकम? किन्तु मैं भारत का तान्त्रिक हू या नही? और क्या भारत के तान्त्रिक पगड़ी नहीं पहनते?

अब मुझे, ब्लान्शे की राय के अनुसार, पगडी हमेशा पहने रहनी होगी।

यह ढीला-ढाला, लम्बा-चौड़ा कुर्ता! कन्धे से घुटनो तक! यह भी भारतीय परम्परानुसार ही...

हरि ओम!

बकरों की तरह भारत के तान्त्रिक पान खाते है। पान चबाते ही होठ रंग कर लाल! जैसे खून पीया हो। ब्लान्शे ने कत्थे, चूने, पान, सुपारी, सुगन्धित मसाले आदि का इन्तजाम कर लिया है। पान खाना, लेकिन, आसान नही। मसूड़े सनसनाने लगते हैं। जीभ कट-कट जाती है। ठण्ड के कारण न केवल नाक, बल्कि पूरी श्वासनली बर्फीली होने लगती है। बार-बार मुह मे थूक आता है। बाथ-रूम मैं जा कर, वाश-बेसिन मे, बार-बार थूकता रहता हू।

"इस में थूकिए ।" क्लान्शे ने पीतल का एक निहायत खूबसूरत, नक्काशीदार पात्र मेरी ओर बढ़ा दिया है ।

"इस में ? इतने खूबसूरत पात्र में ?" मुझे विश्वास नहीं हुआ है ।

"हां । भारत में इसे पीकदान कहते हैं। थूकने जैसे काम को भी भारत में सुन्दर ढंग से किया जाता है। आप भारत के तान्त्रिक है—महान् योगी ! आप वाश-बेसिन में कैसे थूक सकते हैं ? आप हमेशा पीकदान का इस्तेमाल करेंगे ।"

"लेकिन संस्था के सदस्यों को पता कैसे चलेगा कि मैं पीकदान का इस्तेमाल करता हूं ? मैं उन से कह कर थूकने थोड़े जाऊंगा कि पीकदान में थूकने जा रहा हूं ।"

"यदि पीकदान पास में ही हो, तो थूकने के लिए कहीं जाने की क्या जरूरत ?"

"क्या मतलब ?"

"सदस्यों के ऐन सामने, अपने पान की पीक आप पीकदान में उगलेंगे । सब की आंखों के सामने ।'

"छी:, कितनी गन्दी बात !"

"जो भी है, यह भारतीय परम्परानुसार है ।"

"ओके, माई डियर ।"

□

'माई डियर' से क्रमशः 'माई डार्लिंग' तक हम पहुंच गए हैं । प्रेम-पाश हमें जकड़ता जा रहा है । क्लान्शे के सौन्दर्य ने पहली नजर में ही, मुझे अभिभूत कर दिया था । अब, इस नई संस्था की रूपरेखा मिल-बैठ कर तैयार करते समय हम और-और नजदीक आते गये हैं । हमारे बीच अब केवल व्यावसायिक बन्धन नहीं—अब तो हम दोनों बहुत अच्छे दोस्त भी बन चुके हैं । डार्लिंग दोस्त !

□

नई सस्था—'मिस्टर आर्डर ऑफ द तान्त्रिक ऑफ इण्डिया' !

खासा लम्बा नाम है। नही ? किन्तु ब्लान्शे के अनुसार, "लोगों को ऐसा नाम अटपटा लगेगा—और तान्त्रिकों को अटपटा होना ही चाहिए।"

उस महिला का नाम भी, जिस पर मैं और ब्लान्शे क्रमशः अपना जाल कस रहे हैं, खासा लम्बा है—श्रीमती एन हैरिमन सैण्ड्स रदरफर्ड वाण्डरबिल्ट। सम्बन्ध जब और-और नजदीकी हो जाएगे, मैं और ब्लान्शे उसे केवल 'एन' कह कर पुकारेंगे।

लम्बे नाम वाली यह एन एक रोमाचक महिला है। इस के पति का नाम है विलियम के वाण्डरबिल्ट। एन का तीसरा पति है। उम्र इतनी अधिक कि एक पाव कब्र मे। धन इतना अधिक कि सब चाहते हैं—दूसरा पाव भी कब्र में चला जाए !

एन का पहला पति घनघोर धनवान था। बेचारा मर गया। सारा धन एन को दे गया।

एन का दूसरा पति घनघोर धनवान था। बेचारा मर गया। सारा धन एन को दे गया।

और···

एन का तीसरा पति, जो घनघोर धनवान है, किसी भी दिन मर सकता है। सारा धन एन को मिल जाएगा।

यह एन, पिछले अनेक महीनों से ब्लान्शे की गहरी दोस्त है। इतने बहिर्मुखी स्वभाव की है कि घर मे उस का पैर टिकना मुश्किल। एन का दावा है—और शायद दावा सच ही है—कि वह न्यूयार्क के सर्वाधिक अमीर परिवारो के बीच, सर्वाधिक सक्रिय महिला है। समाज की जितनी चिन्ता उसे है, उतनी किसी को नही।

"दरअसल, एन के पैर घर में इस लिए नही टिकते कि वह बहुत दुःखी है।" ब्लान्शे ने मुझे बताया, "समाज की चिन्ता तो बहाना भर है। वास्तव मे एन अपना दुःख भुलाने के लिए घर से बाहर भटकती रहती है। कभी इस समारोह में, कभी उस समारोह में। कभी इधर

ताकना, कभी उधर झांकना..."

"दुःख ? इतनी धनवान महिला को क्या दुःख है ?" मैंने कौतूहल दर्शाया।

"अपनी पुत्रियों का।"

"कैसे ?"

"एन की दो पुत्रियां हैं—मार्गरेट और बारबरा। दोनों दूसरी शादी से हुई हैं। दोनों सुन्दर हैं, करोड़ों की स्वामिनियां हैं और—दोनों अपने पतिदेवों से परेशान हैं। इतनी ज्यादा परेशान कि दोनों ने तलाक लेने का लगभग फैसला कर लिया है। एन नहीं चाहती कि उनके परिवारों में ऐसी दरार पड़े। स्वयं एन ने तीन-तीन बार शादियां की हैं। अपने अनुभव के आधार पर उस की धारणा यही है कि यदि पहली शादी टूट गई, तो बाद की हर शादी टूट कर रहती है। इसी लिए बेचारी जी-जान से कोशिश कर रही है कि उस की दोनों पुत्रियां तलाक लेने के अपने फैसलों को छोड़ दें। उधर दोनों पुत्रियां हैं कि भयानक जिद पर अड़ी हैं। इसी लिए एन के दुःख की सीमा नहीं। इसी दुःख को भुलाने के लिए वह दिन-रात भटकती रहती है—समाज-सेवा के बहाने।"

"क्यों एन को सलाह दी जाए कि यदि वह अपने दुःखों को भूलना चाहती है, तो उसे 'मिस्टिक आर्डर' की सदस्या बन जानी चाहिए ? भारतीय योगासनों और तान्त्रिक पद्धतियों में सभी दुःखों का नाश करने की अलौकिक शक्ति है।" मैंने सुझाव दिया।

"मैं, आप के कहने से पहले ही, यह प्रस्ताव एन के सामने रख चुकी हूं !" ब्लान्शे मुस्कराई।

"फिर ?"

"एन राजी है।"

"मजे आ गए।" मैंने तपाक से कहा, "अब अगले झटके में एन की दोनों पुत्रियां भी 'मिस्टिक आर्डर' की सदस्याएं बन जानी चाहिए। मेरा ख्याल है कि एन की पुत्रियों को राजी करना पर्याप्त आसान रहेगा। अपनी मां की तरह ये दोनों भी अवश्य होंगी, क्योंकि जो सुखी होते हैं,

वे तलाक लेने को नहीं सोचते।"

"हां। इस से असहमत होने का प्रश्न ही नहीं। यह सब मेरे ध्यान में पहले से है।"

"ब्लान्दो जी ! सच पूछें, तो···इस नई योजना और 'न्यूयार्क संस्कृत कालेज' में केवल नामकरण का ही फर्क है। जो गतिविधियां हम निश्चित कर रहे हैं, 'न्यूयार्क संस्कृत कालेज' के तहत भी चलाया जा सकता था।"

"चलिए, केवल नामकरण का फर्क ही सही ! इसे मैं मामूली फर्क नहीं कहूंगी। मैं श्रीमती एन वाण्डरबिल्ट को 'मिस्टिक आर्डर' की सदस्या तो बना सकती हूं, किन्तु 'न्यूयार्क संस्कृत कालेज' की सदस्या नहीं। एन के पति को भी योग और तान्त्रिक विद्याओं में गहरी दिलचस्पी है। उसे भी 'मिस्टिक आर्डर' में लिया जा सकता है, किन्तु 'न्यूयार्क संस्कृत कालेज' में नहीं। नाम के फर्क को मामूली क्यों समझते हैं ? यदि नाम का कोई महत्व न होता, तो आप को अपने लिए ओमप्रकाश शास्त्री जैसा नाम चुनने की जरूरत क्यों होती ?"

"ब्लान्दो जी !"

"हूं।"

"ब्लान्दो जी !"

"बोलिए न।"

"मेरी ब्लान्दो···" और हमारे होठ जुड गए है।

□

'मिस्टिक आर्डर ऑफ द तान्त्रिक्स ऑफ इण्डिया' के कार्यालय को हम 'स्टूडियो' कहते हैं। यह फिफ्थ-एवेन्यू के पड़ोस में, तिरपनवीं-पूर्वी गली में स्थित है।

एन से मेरी पहली मुलाकात एन के ही शानदार ड्राइंग-रूम में हुई थी। उस सुन्दर किन्तु दुःखी महिला को मैंने विस्तारपूर्वक समझाया था कि किस तरह भारतीय योगासनों और तान्त्रिक अनुष्ठानों की सहायता से···

जो भी मैंने समझाया था, वह समझती और याद रखती गई थी।

वही एन आज पहली बार हमारे 'स्टूडियो' में आने वाली है। ब्लान्शे, मेरी प्रिया, एन के स्वागत के लिए 'स्टूडियो' की सजावट, विशेष रूप से, भारतीय शैली में कर रही है। भारत मैं कभी गया नहीं। मैं क्या जानूं, कौन-सी शैली भारतीय है, कौन-सी नहीं। ब्लान्शे को, इसी लिए मैं न कोई सहायता दे सकता हूं, न खलल पहुंचा सकता हूं। वह जुटी हुई है'''स्टूडियो' का रूप-रंग इतना अधिक बदल गया है कि मैं पहचान ही नहीं पा रहा—क्या यह मेरा अपना 'स्टूडियो' है ?

वास्तव में, 'स्टूडियो' को एक जंगल के रूप में तैयार किया जा रहा है—जंगल, जहां श्रीमती एन वाण्डरविल्ट का शिकार खेला जा सके।

जंगल तैयार हो चुका है—पूरी तरह।

गहरी मुस्कान और दबदबे के साथ शिकार ने जंगल में प्रवेश किया है। "हैलो ! श्रीमती वाण्डरविल्ट !" मैं कहता हूं। "हैलो ! एन !" ब्लान्शे कहती है। एन उत्तर देती है, "हैलो'''हाऊ आर यू बोथ ?" "फाइन।" "ओह, यह कमरा कितने अनोखे ढग से सजा है।" शिकार की आंखें चारों ओर घूम रही हैं। ब्लान्शे कहती है, "यह भारतीय शैली है।"

जिस तरह चित्रों की प्रदर्शिनी में दर्शक एक-एक चित्र के पास रुक कर उसका अर्थ समझने की चेष्टा करते हैं, उसी तरह एन एक-एक वस्तु के पास रुकती है और ब्लान्शे उस वस्तु के सभी सन्दर्भों पर प्रकाश डालती है।

मैं—मन्द-मन्द मुस्कान !

"योग !" मैं अपने हथियार तैयार करता हूं, "जानती हैं, श्रीमती-वाण्डरविल्ट, 'योग का अर्थ क्या है ? 'योग' बना है 'युग' 'युग से' का अर्थ है 'युगल होना' याने 'जुड़ना'। जुड़ना'''किस का किस से जुड़ना ? यदि आप समझ लें कि किस का किस से जुड़ना, तो 'योग' का पूरा अर्थ आप के सम्मुख स्पष्ट हो जाएगा। जब तक अर्थ पूर्णतया स्पष्ट नहीं होता, आप सही लाभ नहीं ले सकतीं।"

"अब तक मैं योग के आसानों में तो दिलचस्पी लेती रही हूं, किन्तु 'योग' शब्द का अर्थ मुझे किसी ने नहीं समझाया। पुस्तकों में, शुरू के पृष्ठों में अर्थ-वर्थ दिए तो जाते हैं, मगर उन पृष्ठों को यों ही पलट देने की मेरी आदत है।" एन मुझ से कह रही है, "किन्तु, जैसा कि आप ने बताया, उन पृष्ठों को यों ही पलट कर अवश्य मैंने भूल की है।"

"सारी बातें पुस्तकों में नहीं समझी जा सकती, श्रीमती वाण्डर-बिल्ट।" मैं एन को सावधान-सा करता हू, 'योग और तान्त्रिक विद्याएं हमेशा गुरु से सीखी जाती हैं। भारत में गुरु-शिष्य की परम्परा बहुत प्राचीन है, पवित्र है। गुरु-शिष्य के आपसी स्नेह-सम्मान की नींव पर ही योग और तान्त्रिक विद्याओं की भव्य इमारत खड़ी की जा सकती है। यदि आप का ज्ञान केवल पुस्तकों पर आधारित है, यदि आप का कोई गुरु नहीं है, तो यकीन जानिए कि इमारत तो तैयार हो जाएगी, किन्तु वह इमारत बिना नींव की होगी। फूंक मार कर ही उसे गिराया जा सकेगा।"

"गुरु···" एन का स्वर भावुक होने लगता है, "ओम जी! आप को देखते ही लगता है, आप की चमकीली आंखों से आंख मिलाते ही लगता है—क्यों न आप ही को मैं अपना गुरु मान लूं ?"

मैं चुप। मैं गम्भीर। मैं गद्गद। ब्लान्शे कहती है, "एन! मुझे खुशी है कि तुम ने अपने लिए बहुत सही गुरु का चुनाव किया है।"

"सच ?"

"हां, एन, लेकिन क्या तुम जानती हो, गुरु बनाने की पद्धति क्या है ?"

"नहीं। बताओ।"

"गुरु को गिरजाघर जैसा पूज्य मानना चाहिए। गिरजा में तो आप प्रवेश कर सकते हैं, किन्तु गुरु के भीतर कैसे प्रवेश किया जाए ? लिहाजा गुरु की परिक्रमा कर ली जाती है।"

"परिक्रमा याने ?"

ब्लान्शे ने परिक्रमा का अर्थ बताया है।

एन ने मेरी तीन वार परिक्रमा की है। फिर, क्लान्शे के निर्देशानुसार, मेरे चरणों को स्पर्श किया है। स्पर्श के वाद उंगलियां अपनी आंखों से लगाई हैं, सिर पर फेर ली है। मुझे छींक आने जैसी कुरेदन हो रही है! छींक को वड़ी मुश्किल से रोक पाया हूं।

"और···एन ! गुरु को गुरु-दक्षिणा भी दी जाती है।" क्लान्शे का स्वर।

"गुरु-दक्षिणा याने ?" एन की कौतूहली आंखें क्लान्शे की ओर उठ गई हैं।

"गुरु के प्रति सम्मान के प्रतीक के रूप में शिष्य, अपनी श्रद्धानुसार, कुछ देता है।"

"कुछ याने ?"

"कुछ भी—जो श्रद्धा हो।"

"मैं समझ नहीं पा रही।"

"यदि श्रद्धा केवल इतनी है कि तुम अपने सिर का एक वाल तोड़ कर ही गुरु के चरणो पर रख दो, तो गुरु-दक्षिणा की रस्म पूरी हो जाती है। दूसरी ओर, यदि श्रद्धा इतनी वलवती है कि···शिष्य यदि चाहे, तो···अपना सम्पूर्ण धन, सम्पूर्ण तन, सम्पूर्ण मन भी चरणों पर रख सकता है।"

"ओह !" एन का चेहरा ललियाने लगता है। निस्सन्देह वह उलझन में है कि कैसी गुरु-दक्षिणा दे। अकस्मात् वह सावधान हो गई है कि वह कितनी समृद्ध है। गुरु-दक्षिणा उसे अपनी समृद्धि के अनुरूप ही देनी चाहिए। क्या दे ? कितना दे ? पति से सलाह लिए विना, अपनी ओर से ही, कितना दे दे ?

"क्लान्शेने स्पष्ट कर दिया है, गुरु-दक्षिणा तावड़तोड़ देनी होती है। जिस क्षण गुरु वनाया, उसी क्षण गुरु-दक्षिणा !"

एन को शायद सन्देह है कि जल्दवाजी में कहीं वह गलत गुरु-दक्षिणा न दे वैठे। एन का दिल धड़क रहा होगा ! मेरा भी तो दिल धड़क रहा है। हरि ओम !

"मेरा ख्याल है कि···दक्षिणाएं देने का सौभाग्य बाद में भी मिलता रहेगा—विभिन्न अवसरों पर।" एन ने ब्लान्शी की ओर देखा है। ब्लान्शी कहती है, "क्यों नहीं। दक्षिणा देने के कई अवसर होते हैं। वास्तव में कोई अवसर न हो, तब भी, दक्षिणा दी जा सकती है, किन्तु पहली दक्षिणा का महत्व विशेष है। पहली दक्षिणा तावटनोह देने की भारतीय प्रथा है।"

"मैं हिचक नहीं रही हूं, ब्लान्शी।" एन ने स्पष्ट किया है, "मैं केवल इस संकोच में हूं कि पति को सूचित किए बिना मैं केवल अपने विवेक से, जो भी दे सकती हूं, वह शायद इतना योग्य नहीं होगा कि···"

ब्लान्शी मुस्करा दी है, "तुम भी कमाल करती हो, एन! यह तो केवल एक रस्म है। गुरु-दक्षिणा में तुम अपने सिर का बाल भी दे सकती हो। इतने सोच-विचार की जरूरत ही क्या है? गुरु-दक्षिणा का अर्थ यह तो नहीं कि गुरु को मालामाल कर दिया जाए।"

"फिर भी, ब्लान्शी, कुछ तो शोभा देना चाहिए न?"

"फिर वही पूंजीपतियों वाली बात!" ब्लान्शी ने तीर मारा है, "हम ने तुम्हें 'मिस्टिक आर्डर' की सदस्या इसलिए नहीं बनाया कि तुम पूंजीपति हो। हम ने तुम्हें इस लिए अपनाया कि तुम्हें योग और तान्त्रिक विद्याओं में गहरी दिलचस्पी है। तुम झोंपड़ी में रहती होतीं, तब भी हमें कोई फर्क न पड़ता।"

अन्ततः एन ने गुरु-दक्षिणा दे दी है—'मिस्टिक आर्डर' जिस भव्य स्थान में संचालित होता है, वह किराए की जगह है। एन ने घोषणा की है, "मैं 'मिस्टिक आर्डर' को किराए की जगह में संचालित होते नहीं देख सकती। कोशिश करूंगी कि यही जगह खरीद कर 'मिस्टिक आर्डर' को दे दूं, क्योंकि यह बढ़िया जगह है, लेकिन···कई बार जगहें बिकाऊ नहीं होतीं—बड़ी-से-बड़ी कीमत पर भी नहीं। यदि ऐसा हुआ, आप लोग किसी नई जगह की तलाश करिएगा। जहां भी और जिस कीमत पर वह जगह हुई, उसे खरीद कर मैं गुरु-दक्षिणा में दे दूंगी।"

□

"उस दिन मैं आपको 'योग' का अर्थ बता रहा था। बात चूंकि पलट गई थी, मैं अर्थ पूरी तरह स्पष्ट नहीं कर सका था।" मैं श्रीमती एन वाण्डरविल्ट को योग का प्रशिक्षण दे रहा हूं, "जैसा कि आप जान चुकी हैं, 'योग' याने 'जुड़ना'। जुड़ना—किस का किस से जुड़ना ? यही वह नाजुक प्रश्न है, जिस का उत्तर आप को पा लेना है।

"कसरत और योग में क्या अन्तर है ? कसरत केवल शरीर को पुष्ट करने की कला है, जबकि योग शरीर और आत्मा, दोनों को पुष्ट करना है।

"हमेशा याद रखिए कि योग शरीर और आत्मा, दोनों को एक जैसा महत्त्व देता है। इसी लिए योग का अर्थ है—शरीर और आत्मा का जुड़ कर एक हो जाना।

"आत्मा और शरीर को हम अलग-अलग मानते हैं या नहीं ? अलग-अलग वे हैं भी—लेकिन यही वह कसौटी है, जो परमात्मा ने हमारे सामने रखी है। जब तक शरीर और आत्मा अलग-अलग रहते हैं, परमात्मा से मिलन हो ही नहीं सकता। योग शरीर और आत्मा के मिलन की, याने परमपिता परमात्मा से मिलने की अद्‌भुत भारतीय कला है।

"याने—योग का अर्थ केवल इतना नहीं है कि शरीर और आत्मा को मिला कर एक कर दिया जाए। दूसरा अर्थ, आगे का गहरा अर्थ, यह भी है कि शरीर और आत्मा का मिला-जुला रूप, अन्ततः, परमात्मा से मिल कर एक हो जाए।

"यदि योग की सहायता से हम अपने शरीर और आत्मा को तो मिला लेते हैं, किन्तु उसके बाद, परम पिता परमात्मा से नहीं मिल पाते—तो हमारी योग-साधना अधूरी है। यह कुछ ऐसी ही बात है कि हम मंजिल की दहलीज तक तो पहुंच जाएं, लेकिन अन्दर दाखिल न हो सकें।"—मैंने भाषण पूरा किया है। अब, श्रीमती एन वाण्डरविल्ट की आंखों में देख रहा हूं। आंखों-आंखों में पूछ रहा हूं, 'कुछ समझ में आया भी ?'

मेरा प्रश्न एन ने भांप लिया है।

"गुरुदेव !" एन ने श्रद्धा से उत्तर दिया है, "मैं समझ गई। योग याने शरीर और आत्मा का मिलन, किन्तु केवल शरीर और आत्मा का मिलन नहीं। शरीर और आत्मा के मिले-जुले रूप को, अन्त में, परमात्मा के साथ भी मिलन करना चाहिए। तभी कोई योगी अपने को सच्चा योगी कह सकता है।"

"बिल्कुल ठीक, श्रीमती वाण्डरबिल्ट।" मैंने एन का उत्साह बढ़ाया है, "आप सचमुच तेजी से आगे आ रही हैं।"

"आप की कृपा है, गुरु देव ! माई लविंग गुरु !"

"अब, 'योग' और 'योक' का सम्बन्ध भी स्पष्ट किया जाना चाहिए।" मैंने आगे कहा है।

" 'योग' और 'योक', गुरुदेव ?"

"हां, शिष्या ! 'योग' और 'योक' !" मैं गम्भीरता से जारी रखता हूं, " 'योक' अंग्रेजी का शब्द है। संस्कृत के 'योग' और अंग्रेजी के 'योक' में सम्बन्ध कैसे जुड़ गया, यह आश्चर्य ही माना जाएगा, किन्तु इस का सीधा-सा अर्थ मैं यह लगाता हूं कि योग की दुनिया केवल भारत तक सीमित नहीं रखी जानी चाहिए। योग को उस दुनिया में भी फैलना चाहिए, जहां अंग्रेजी बोली जाती है। अंग्रेजी शब्द 'योक' का अर्थ है—जुआ, जो बैलों के कन्धे पर रखा जाता है। 'योक' का ही दूसरा अर्थ है—जोड़ी। ठीक है न ?"

"जी।"

"अब हम दोनों अर्थों को अलग-अलग लेते हैं। जब बैलों को जुए में जोता जाता है, तो उन का अलग-अलग व्यक्तित्व मिट जाता है। वे दो अलग-अलग बैल न रह कर, दो बैलों की एक जोड़ी हो जाते हैं—एक जोड़ी।"

"जी, गुरुदेव।"

"योग में भी, शिष्य को अपने गुरु के साथ मिल कर एक हो जाना चाहिए। गुरु और शिष्य के बीच ऐसा सामन्जस्य पैदा होना चाहिए कि

उन के व्यक्तित्व अलग-अलग न रहें। दोनों मिल कर एक हो जाएं। याने, वे एक-दूसरे पर इतना अधिक विश्वास करें कि जो एक ने कहा, वही दूसरे का कहा हो जाए। जो एक ने किया, वही दूसरे का किया हो जाए।"

"यस, लविंग गुरु।"

"अब हम 'योक' के दूसरे अर्थ 'जोड़ी' को लेते हैं।" मेरा जादुई स्वर जारी रहता है, " 'जुए' का अर्थ था, गुरु और शिष्य अलग-अलग न रहें। 'जोड़ी' का अर्थ यह है कि हर शिष्य अपने गुरु की शक्ति बढ़ाने के लिए उस के कन्धे-से-कन्धा भिड़ा कर काम करे, जिस तरह बैलों की जोड़ी काम करती है।"

"जी।"

"इसे जरा और स्पष्टता से समझिए।"

"जी।"

"गुरु का कहा शिष्य का कहा हो जाए, अथवा गुरु का किया शिष्य का किया हो जाए—केवल इतना रिश्ता ही काफी नहीं है।" मैंने और स्पष्ट किया है, "ऐसे रिश्ते में भय यह है कि जो भी कहा जाए, या किया जाए—सिर्फ गुरु द्वारा ही कहा या किया जाए। शिष्य हाथ पर हाथ धरे बैठे रहें। शिष्यों का काम केवल इतना रह जाए कि गुरु की हां में हां मिलाते चलो।"

"जी।"

"लेकिन 'जोड़ी' का अर्थ पुरुषार्थ की ओर संकेत करता है।"

"जी।"

"याने—हर शिष्य को, अपने पुरुषार्थ द्वारा, गुरु की शक्ति बढ़ाने का प्रयास करना चाहिए। शिष्य कभी आलसी न हो। हमेशा उद्यम करे। गुरु के लिए उद्यम।"

"जी।"

"योग याने आत्मा की मुक्ति। शरीर की मुक्ति।"

"जी।"

"शरीर की मुक्ति याने वस्त्रों से मुक्ति।"

"जी ?" एन जरा सकपकाई है।

मैंने उसे बींधती निगाहों से घूर कर दोहराया है, "शरीर की मुक्ति याने वस्त्रों से मुक्ति।"

और उस ने होले से स्वीकार कर लिया है, "जी।"

□

'मिस्टिक आर्डर' का 'अनुष्ठान कक्ष' ! चारों ओर से बन्द…अन्धेरे को बींधती नीली-नीली रोशनी…

कुर्सियों पर मेरे शिष्य-शिष्याओं की उपस्थिति ! रोमांचक ! साक्षात् धन-दौलत ! हरि ओम ! आवछो !

किन्तु मैं, ऊपर-ऊपर से, इतना गम्भीर हूं कि…

नीली-नीली रोशनी से सना मैं।

नीली रोशनी से सना हर व्यक्ति।

मेरा भाषण आगे चल रहा है। ब्नान्दो की विशेष व्यवस्था के अनुसार नीली रोशनी क्रमशः बदल रही है—लालिमा की ओर…ज्यों-ज्यों रोशनी बदल रही है, मेरे स्वर की ऊंचाई कुछ-की-कुछ होती जा रही है। मेरी चमकती आंखें—मानो सारी रोशनी मेरी आंखों से ही फूट रही हो !

कुछेक शिष्य। ढेरमढेर शिष्याएं। सब मन्त्र-मुग्ध सुन रहे हैं। रोशनी काफी लाल हो चुकी है। मैं समझता हूं, "योग याने आत्मा की मुक्ति।"

रोशनी की लालिमा बढ़ रही है। रोमांचक संगीत—धीमा-धीमा—तिरने लगा है। शिष्य-समुदाय बुतों की तरह स्थिर है।

मैं समझता हूं, "योग याने शरीर की मुक्ति।"

"रोशनी और लाल, संगीत और उत्तेजक।

मैं आगे समझाता हूं, "शरीर की मुक्ति याने वस्त्रों से मुक्ति।"

सन्न…मेरे शब्द उस सन्नाटे में झांय-झांय कर रहे हैं। वस्त्रों से

मुक्ति ! योग याने प्रकृति। वस्त्र याने अप्रकृति। त्यागो वस्त्र ! मैं उठ पड़ा हूं। रौशनी की लालिमा इस तरह घनीभूत हुई है कि मेरे आस-पास आग का घेरा-सा बन गया है। मेरा तमाम बदन धू-धू कर रहा है। मैंने हाथ उठा दिए हैं—मसीहा ! मसीहा का आदेश—त्यागो ! बींधती आंखों की सनसनी—त्यागो वस्त्र ! मेरे उठे हुए हाथ प्रेतीला इशारा करते हैं—सब को इशारा···संगीत भी इशारा करता है··· रौशनी ने सब को लाल उत्तेजना दे दी है। प्रेतीला इशारा—उठो। सब-के-सब उठ पड़ो।

सब-के-सब उठ पड़े हैं।

मेरी सर्प-आंखों में सम्पूर्ण शिष्य-समुदाय पर सम्मोहन की कुण्डली लगा दी है। कुण्डली को मैं और-और कस रहा हूं। मैं अपने वस्त्र त्याग देता हूं। सम्पूर्ण शिष्य-समुदाय अपने वस्त्रों से मुक्त हो जाता है। वह रही क्लान्शे—मुक्त। वह रही एन—मुक्त। वह रहा एन का पति—मुक्त। सब मुक्त। उन्मुक्त। मैं गहरी सांस लेता हूं। सब गहरी सांस लेते हैं। पूरे कक्ष में, मिली-जुली गहरी सांसों की सर्प-सिसकारी ! जो मैं करूंगा, वही सब करेंगे। मैं हंसता हूं। सब हंसते हैं। हा, हा, हा !! मैं चुप। सब चुप। रौशनी चुप। हवा चुप। दीवारें, छत, फर्श—सब चुप। प्रेतीला इशारा—नाचो। स्वयं मैं नाचने लगता हूं। मुक्त ! संगीत की झांय-झांय ! नाचती क्लान्शे मेरी ओर बढ़ रही है—योजनानुसार। मैं उसकी ओर बढ़ाता हूं—योजनानुसार क्या कोई आभास भी पा सकता है कि सारा-कुछ योजनानुसार हो रहा है ? मैं योगी। क्लान्शे योगिनी। युग-युगों के वियोगियों की तरह हम मिलते हैं···पूरे कक्ष में मानो हमारे ही बिम्ब हैं—नर कम। नारियां अधिक। जोड़ियां नहीं बन सकतीं। लेकिन नहीं। यहां कोई नर नहीं। कोई नारी नहीं। सब केवल व्यक्ति हैं। वियोगियों की तरह व्यक्ति-व्यक्ति मिल कर सिसकारियां भर रहा है—हर व्यक्ति···मैं और क्लान्शे गठन की तरह गुथ गए हैं। हर व्यक्ति हर दूसरे व्यक्ति से गठन की तरह गुथ गया है। सम्पूर्ण शिष्य-समुदाय एक जीवित, स्पन्दित गठरी की तरह जमा

हो गया है—मिहरती गठरी ! मेरे आदेशानुसार कभी कम, कभी ज्यादा, कभी बिल्कुल नहीं, कभी कोई-कोई और कभी सब एक-साथ सिहर-सिहर कर प्रमाणित कर रहे हैं—ओम ! प्रिय गुरु ओम ! हम न्योछावर हैं··· तन से, मन से, धन से···पूरी उन्मुक्तता से···

झन्न्न···

□

तलाक ।

एन के पूरे प्रयास के बावजूद उस की दोनों पुत्रियो ने अपने-अपने पति से छुटकारा पा ही लिया । पति का घर छोड कर दोनो पुत्रिया—मार्गरेट और बारबरा—अपनी मा के यहा रहने चली आई हैं ।

एन अपनी इस हार को सह नही पा रही । 'मिस्टिक आर्डर' के योगासनो और अनुष्ठानो ने एन की आत्मा को जो शान्ति और बल दिया था, इस हार से सब धुल-सा गया है—सभी-कुछ एन को अब नए सिरे से चाहिए ।

इसी लिए, 'मिस्टिक आर्डर' के प्रति एन का मोह अब दो गुना हो गया है ।

"मेरी हार्दिक इच्छा है कि मार्गरेट और बारबरा भी 'मिस्टिक आर्डर' मे शामिल हो जाएं, क्योकि ऐसे दुःख भरे दिलो में उन्हें शान्ति यदि मिल सकती है, तो यही मिलेगी, किन्तु···'मिस्टिक आर्डर' का स्टूडियो हमारे निवास-स्थान के नजदीक ही होने के कारण, मेरी दोनो पुत्रियो के बारे मे अफवाहे फैलने लगेंगी कि···" और एन झिझक गई।

मैंने उत्साहित किया, "कैसी अफवाहें ?"

"बात यह है, गुरुदेव, हमारे पवित्र 'मिस्टिक आर्डर' में जो योग-ध्यान की गतिविधियां चलती हैं, उन की गरिमा को समझना सब के लिए सम्भव नही । इसी लिए···अफवाहें फैलने लगी हैं कि 'मिस्टिक आर्डर', वास्तव में, सामूहिक नग्नता और व्यभिचार का अड्डा है···ऐसे कुशब्दों के लिए क्षमा कीजिएगा, गुरुदेव, किन्तु···मैं इस सच्चाई को

नकार नहीं सकती कि…"

"क्या सचमुच अफ़वाहें फैल रही हैं ?" मैं सावधान हुआ।

"हां, लविंग गुरु।"

"लेकिन किस तरह ? लोगों को आखिर भनक कैसे मिल गई ? क्या हमीं लोगों में से किसी ने राज़ खोला है ? क्योंकि बाहर के तो किसी भी व्यक्ति को आने नहीं दिया जाता।"

"कोई घर का भेदिया ही होगा। दरअसल…बातों को कभी भी छिपाया नहीं जा सकता फौजी मामलों की अत्यन्त गोपनीय बातें भी प्रकट हो जाती हैं, हमारी संस्था तो फिर भी बहुत छोटे पैमाने पर है।

"आप सच कहती हैं। बातों को सचमुच छिपाया नहीं जा सकता। दरअसल…मिस्टिक आर्डर' की गतिविधियां गुप्त इस लिए नहीं रखी जातीं कि वे गोपनीय हैं, बल्कि…हम नहीं चाहते कि 'मिस्टिक आर्डर' की ओर लोगों का ध्यान ख्वाहमख्वाह आकर्षित हो जाए…यह एक प्राइवेट संस्था है, क्योंकि यह जानती है कि इस के विचारों की कद्र आम आदमी नहीं कर सकता।"

"जो भी है, गुरुदेव…मैं अपनी पुत्रियों को 'मिस्टिक आर्डर' की सदस्याएं बनाने से डर इसी लिए रही हूं कि कहीं वे…समाज में बुरी लड़कियों की तरह बदनाम न हो जाए। मेरी बदनामी तो हो ही रही है, लेकिन मुझे कोई अन्तर नहीं पड़ेगा, क्योंकि स्वयं मेरे पतिदेव भी 'मिस्टिक आर्डर' के सदस्य हैं और मैं उन्हीं के संग आती-जाती हूं, लेकिन यदि मेरी पुत्रियां बदनाम होने लगीं…सोचिए, अभी-अभी उन्होंने तलाक लिया है। लोग कहने लगेंगे, लड़कियों में ही खराबी है। इसी लिए तलाक की नौबत आई। यदि लड़कियां दूध की धुली होतीं तो उन्हें 'मिस्टिक आर्डर' जैसी संस्था में शामिल होने की क्या जरूरत होती ?"

"हूं…समस्या गम्भीर है।" मैंने सहमति में सिर हिलाया।

"दूसरी ओर, यह भी सुनिश्चित है कि जब तक मार्गरेट और बारबरा 'मिस्टिक आर्डर' में आ कर हृदय की शान्ति की खोज नहीं करतीं, तब तक उन का जीवन नर्क के बराबर है। मैं अपनी आंखों से देख रही हूं

कि उन्हें न दिन को चैन है, न रात को नींद ।'

'ऐसा करिए, श्रीमती वाण्डरबिल्ट, मैं आप की इस समस्या पर ब्लान्शे के साथ मशविरा करता हूं। ब्लान्शे के पास हमेशा, हर समस्या का, कोई-न-कोई उपाय हाजिर होता है। दूसरी ओर, आप भी 'मिस्टिक आर्डर' की अपनी सहेलियों को विश्वास में ले कर उन से राय मांगिए। कुछ-न-कुछ तो किया ही जाना चाहिए, क्योंकि मार्गरेट और बारबरा को सहायता की सख्त जरूरत है। सिर्फ अफवाहों के भय से उन की जरूरत पूरी न की जाए, यह उन के साथ अन्याय होगा।"

कुछ ही दिनों में यह तय पाया गया कि 'मिस्टिक आर्डर' की इस समस्या को स्थायी रूप से हल कर लेने के लिए न्यूयार्क शहर ही छोड़ दिया जाए।

ब्लान्शे ने सब की अन्तरंग बैठक में कहा, 'मिस्टिक आर्डर' के सदस्यों की संख्या बढ रही है। अभी जो समस्या केवल मार्गरेट और बारबरा की है, वही समस्या कल किसी अन्य के साथ भी जुड सकती है। इसी लिए, समस्या के स्थायी हल की तरफ देखते हुए हमें चाहिए कि न्यूयार्क शहर से बाहर निकल जाएं। यहां से केवल पन्द्रह मील के फासले पर एक गांव है—न्याक। मुमकिन है, हम में से कइयों ने यह गांव देखा हो जिन्होंने नहीं देखा, वे कभी भी जा कर देख सकते हैं। मैंने व्यक्तिगत रूप से जा कर उसे देख-परख लिया है। वह हर तरह से सुविधाजनक है यदि वहां 'मिस्टिक आर्डर' का स्थायी केन्द्र खोला जाए, तो कैसा रहे ? न्यूयार्क के एक उपनगर से दूसरे उपनगर में पहुंचने के लिए जितना समय लगता है, लगभग उतने ही समय में पहुंचा जा सकता है। शहर के कोलाहल एवं अप्राकृतिक वातावरण से दूर, गांव की परम प्राकृतिक शान्ति में यदि हम अपनी इस संस्था को ले जाते हैं, तो'''मेरा तो ख्याल है कि यह हर दृष्टि से बेहतर रहेगा'''"

□

एन वाण्डरबिल्ट ने वचन दिया ही था कि 'मिस्टिक आर्डर' के लिए

नई जगह वह स्वयं खरीद कर देगी। वचन उस ने बड़ी शान से निभाया। ब्लान्शे ने मुझे बता दिया था कि इस अवसर का जितना लाभ लिया जाए, कम रहेगा। इसी लिए जब मैं ने न्याक गांव में जा कर जमीन का सौदा किया, तो वह जमीन पूरे ७८ एकड़ में फैली हुई थी।

७८ एकड़ ! मूल्य एक लाख डालर !

एन वाण्डरबिल्ट ने यह रकम हंसते-हंसते अदा कर दी। एक बार भी न पूछा कि इतने लम्बे-चौड़े मैदान में 'मिस्टिक आर्डर' जैसी नन्ही संस्था आखिर क्या करेगी ? घुड़दौड़ों का आयोजन ?

कहीं ऐसा तो नहीं कि रकम अदा करते समय एन वाण्डरबिल्ट ऊपर से तो हंस रही हो, किन्तु भीतर-ही-भीतर उसे बहुत अखर गया हो ?

अखरा चाहे न अखरा, उस ने एक लाख डालर चुटकियों में निकाल कर दे दिए। फिलहाल उतना काफी था। हरि ओम ! क्या शानदार गुरु-दक्षिणा रही !

७८ एकड़ की उस जमीन पर अनेक इमारतें खड़ी थीं। सौदे में वे सब 'मिस्टिक आर्डर' को मिल गईं। सब से बड़ी इमारत इतनी जबर्दस्त थी कि उस में पूरे तीस कमरे थे—खूब बड़े-बड़े वह तीन-मंजिला इमारत 'मिस्टिक आर्डर' की आवश्यकताओं के अनुरूप, ब्लान्शे के हाथों, भीतर-बाहर से सजाई जाने लगी। अन्य इमारतों का भी नवीनीकरण होने लगा।

एन वाण्डरबिल्ट ने एक लाख डालर हंसते-हंसते दान में दे दिए, यह देख 'मिस्टिक आर्डर' की अन्य धनवान सदस्याओं को भी जोश आया। उन्होंने पूरी उदारता के साथ अपने खजाने खोल दिए। ब्लान्शे ने दोनों हाथों से धन समेटना शुरू किया। केवल समेटना नहीं—खर्च करना भी, क्योंकि वह धन 'मिस्टिक आर्डर' के लिए था, न कि व्यक्तिगत रूप से ब्लान्शे अथवा मेरे लिए। बेचारे 'मिस्टिक आर्डर' को पहली बार अवसर मिला था कि अपनी आवश्यकताओं के अनुरूप फले-

फूले। फिर क्यों न डट कर खर्च किया जाता ?

भाषण-कक्ष। व्यायाम-कक्ष। योग सन-कक्ष। आत्म-सम्मोहन-कक्ष। भोजन-कक्ष। लम्बा-चौड़ा स्वीमिंग-पूल। टेनिस के मैदान। वेसबाल खेलने की शानदार व्यवस्था। मालिश-कक्ष। पूर्ण नग्नावस्था में धूप-स्नान करने के लिए विशिष्ट बगीचा। नृत्यों और नाटिकाओं के लिए अलग से थियेटर। अह···अह···अह···

बॉक्सिंग केन्द्र। मल्ल-युद्ध केन्द्र। मालिश केन्द्र।

प्राणायाम केन्द्र। नाटक केन्द्र। शीर्षासन केन्द्र। वाद-विवाद केन्द्र।

कॉफी-हाउस। जुआ-घर।

लगभग छह हजार व्यक्ति बैठ सकें, ऐसा एक छत-विहीन, खुला थियेटर···

क्षमा कीजिएगा। आप बोर तो नहीं हो रहे ? दरसल, मैं बहक गया था। इस में मेरा विशेष दोष भी नहीं। 'मिस्टिक आर्डर' के इस नए केन्द्र में सब-कुछ इतना सनसनीखेज है कि सचमुच जी रहा होते हुए भी मुझे लगता है, सपने मे जी रहा हू। मैंने यहा का जो भी वर्णन अब तक किया, वास्तव में वह कुछ भी नहीं है। पूरा वर्णन करने के लिए तो कोई पुस्तिका ही लिखनी होगी। आखिर ७८ एकड़ ज़मीन पर विकसित किए जा रहे योग-केन्द्र का वर्णन ७८ पृष्ठों से कम में कैसे किया जा सकता है ? एक एकड़ के लिए क्या एक पृष्ठ भी नही ? किन्तु मैंने कितनी कजूसी बरती—७८ पैराग्राफ तक नही लिखे मैंने।

फिर भी, यदि आप बोर हो रहे हो, या हो चुके हो, तो क्षमा कर दीजिएगा।

बोरियत दूर करने के लिए आप को एक मजेदार बात बताऊं।

'मिस्टक आर्डर' के ऐन सदर दरवाजे पर मैंने एक तख्ती जड़वा दी है, जिस का सीधा-सा अर्थ यह है कि यहां बुद्धिमानों को बेवकूफ और बेवकूफों को और-और बेवकूफ बनाया जाता है। मैंने लिखित रूप से सरेआम ऐलान कर दिया है कि मेरा असली रूप क्या है। इस के बावजूद यदि कोई न समझे, तो मेरा क्या कसूर ?

सदर दरवाजे पर जड़ी उस तख्ती पर ये शब्द अंकित हैं :

यहां
दार्शनिक झूम-झूम कर नाचते हैं
और
बेवकूफ इस का हक रखते हैं कि
न्यायाधीश की टोपी पहनें और
फैसले सुनाते जाएं, सुनाते जाएं···

जो भी इस दरवाजे से हो कर प्रवेश करता है, या जो भी इस के सामने से गुजरता है, इन शब्दों को वह साफ-साफ पढ़ सकता है।

इस से ज्यादा स्पष्ट चेतावनी भला और क्या हो सकती है कि मुझ से दूर रहो, दूर रहो। चेतावनी के बावजूद यदि लोग यहां आ-आ कर अपने खजाने खोलते हैं, तो मुझे क्या गरज पड़ी है कि उन्हें मना करता फिरूं ?

उधर देखिए। मेरे नौकरों के लिए भी कितने शानदार घर बने हुए हैं—लम्बी कतार ! अनेक माली। अनेक शोफर। अनेक रसोइए। अनेक चर-अनुचर।

और उधर—मेरे लिए अनेकानेक कारें ! कारों के अलग-अलग गैरेज। कुछेक कार मैंने खरीदी अवश्य है, किन्तु अधिकांश गुरु-दक्षिणाओं में मिली हैं।

स्पष्टीकरण—

यह सब रातोरात नहीं हो गया। 'मिस्टिक आर्डर' को इतना विकसित करने में मुझे ढाई से तीन साल अवश्य लगे।

किन्तु ढाई-तीन सालों में भी इतना-कुछ पा लेना···क्या यह कुछ-कुछ ऐसा ही नहीं कि अलादीन ने अपना जादुई चिराग रगड़ा और···

□

ओह पुनः क्षमायाचना।

इस सारे हंगामे मे, महत्व की एक बात बताना रह ही गया।

क्षमायाचना आप सब से। क्षमायाचना ब्लान्शे से भी।

क्योंकि अब जो बताने जा रहा हूं, उस का सीधा सम्बन्ध ब्लान्शे की भावनाओं के साथ है। आप को मैंने अब तक सूचित नहीं किया कि मैं ब्लान्शे का पति बन चुका हूं—वैधानिक रूप से भी। यदि ब्लान्शे जान जाए कि उस से विवाह करने के समाचार की मैंने इस हद तक उपेक्षा की, तो कितना बुरा माने है ! न ?

इसी लिए हाथ जोड़ कर निवेदन करता हू, ब्लान्शे को भूल कर भी न बताइएगा कि उस के साथ अपनी शादी की सूचना मैंने यथा समय प्रचारित नहीं की। देते हैं न वचन—कि आप चुप रहेंगे ? देखिए, कितना बड़ा तान्त्रिक, कैसा महान् योगी आप के सामने हाथ जोड़ कर खड़ा है ! हरि ओम !

इजाजत है ? छींकू ?

□

जरा चिंघाड़िए।

नहीं, नहीं, मैं आप से नहीं कह रहा। मैं तो उन हाथियों से कह रहा हू, जो चले आ रहे हैं झूमते-झामते। कितने हाथी ? कई हाथी ! ये 'मिस्टिक आर्डर' के अहाते में स्थायी रूप से रहेंगे।

क्यों भला ?

क्योंकि हाथी बहुत ऊंची चीज है। 'मिस्टिक आर्डर' ऊंचे लोगों की संस्था है या नहीं ? ऊंचे लोग ऊंची चीजों से हमेशा प्यार करते है। बेहद प्यार।

७८ एकड़ के विस्तार में एक नन्हा-सा जंगल तैयार करने में क्या दिक्कत ? लिहाजा, जंगल तैयार हो चुका है। 'मिस्टिक आर्डर' के सदस्य प्रकृति के प्रेमी हैं इसी लिए प्रकृति को 'मिस्टिक आर्डर' के अहाते में आर्डर दिया गया है कि वह खूब फले-फूले। और···जंगल लगाए बिना प्रकृति भला कैसे फल-फूल सकती है ?

किन्तु, जंगल की शोभा ही क्या, यदि उस में पशु-पक्षी न रहते

हों ? इसी लिए—चले आ रहे हैं हाथी ! आहा !

एक-एक हाथी की कीमत ?

उंह, होगी कुछ भी। ये 'मिस्टिक आर्डर' के धनवान सदस्यों की तरफ से सौगात में आए है। उन धनवानों ने चाहे जो कीमत अदा की हो, वास्तव में उन्होंने सुपर-टैक्स बताया होगा, अपने हाथ का मैल उतारा होगा।

ओह, जो हाथी सब से आगे चल रहा है, कितना भव्य है ! डोलती चट्टान ! फासला कम होता है, तो गौर करता हूं—वह हाथी नहीं, हथिनी है। उस के बदन की झुर्रियां कहे दे रही हैं कि वह काफी ज्यादा उम्र की है। "अरे, यह तो पुरानी अम्मा है !" मेरे मुंह से बेसाख्ता निकल पड़ता है।

सभी हाथियों की नायिका 'पुरानी अम्मा' को बना दिया गया है। मेरे और 'पुरानी अम्मा' के बीच दोस्ती जमने लगी है। मुझे देखते ही 'पुरानी अम्मा' सूंड़ बढ़ा कर मुझे जगह-जगह छूती, सूंघती, गहरी उसांसें लेती है। उस के गले से ऐसी घुटी-घुटी आवाज निकलते लगती है, मानो किसी कार का एन्जिन चल रहा हो—प्रसन्नता-सूचक, घुटी-घुटी आवाज !

'मिस्टिक आर्डर' के अन्य पशु-पक्षी मेरा और 'पुरानी अम्मा' का ऐसा प्यार देख कर ईर्ष्या से जल जाते होंगे।

अब तो मैंने कई चिम्पान्जी भी मंगवा लिए हैं—अर्द्ध-मानव ! ह, ह, ह...ईर्ष्या अनुभव करने की क्षमता उन में ज्यादा है। जब वे देखते हैं कि मैं 'पुरानी अम्मा' को ही ज्यादा प्यार करता हूं, तो वे उछल-उछल कर, मेरी बेशर्मी के विरोध में नारे लगाते हैं, छाती पीटते हैं।

चिम्पान्जी बड़े आकार के बन्दर हैं। यह प्रकृति विरोधाभासों से भरी हुई है या नहीं ? इसीलिए 'मिस्टिक आर्डर' द्वारा नियोजित जंगल में भी प्रकृति के विरोधाभास अवश्य नजर आने चाहिए। विरोधाभास पैदा करने के लिए, चिम्पान्जी बन्दरों से ठीक विपरीत, मैंने बिल्कुल

जरा-जरा से बन्दर भी मगवाए हैं। इतने छोटे-छोटे कि हथेली पर बिठाएजा सकें ! मजाक नही कर रहा । इस दुनिया मे सचमुच इतने जरा-जरा मे बन्दर भी होते है, जो आप की हथेली पर ठाठ से बैठ जाएं और आँखें मटकाए । कहा जबर्दस्त चिम्पान्जी और कहां वे बौने बन्दर ! साक्षात् विरोधाभास ! नही ?

जगल यदि है, तो जगल का राजा भी होना चाहिए । जंगल का राजा न हाथी है, न चिम्पान्जी । शेर न चीता । जगल का राजा तो है सिंह ! लेकिन सिंह दुनिया मे केवल दो जगह पाए जाते है—अफ्रीका मे या भारत के गीर वनों में । कोई बात नही । दुनिया के चाहे किसी भी कोने से प्राप्त करने पड़े, सिंह 'मिस्टिक आर्डर' के जगल मे जरूर होने चाहिए ।

दहाड ! दिव्य ! सिंह आ गए हैं । पिंजडो मे बन्द महाराजा !

ओहो, हिमालय के पहाडी बकरे भी आए है क्या ? लगता तो यही है । खूब ! बहुत खूब ! सिंहो का इन्तजाम करने का आदेश जिसे दिया गया था, उस ने ये बकरे अपनी ओर से भेजे हैं । सचमुच उस ने बुद्धि से काम लिया है । सिंह भारत से आए हैं । बकरे भी भारत से ।

दक्षिण अमेरिका के लामा साहब भी तो आ गए हैं । देखिए, वह *आ रहे है लामा जी !* चार पैरों पर लापरवाही से चलते हुए । हुंह··· हुंह···

हिप्पो ! हिप्पो जी भी पधार रहे हैं । हिश्शक हिश्शक ! हुंह···हुंह···

नही, अब और नाम नही गिनाऊगा । मैं ऐसा साबित नही करना चाहता कि मुझे दुनिया पर के पशुओं के नाम मालुम हैं । संक्षेप में इतना जान लीजिए कि *'मिस्टिक आर्डर' के जगल मे मंगल करने के* लिए भांति-भांति के जीव-जन्तु, समय-समय पर, मगवाए जाते रहे ।

एक होशियार रिंग-मास्टर मैंने अपने यहां नियमित नौकरी पर रख लिया है । मेरी हार्दिक मनोकामना है कि सिंह पर सवारी करूं । तान्त्रिको को अपने व्यक्तित्व के निखार के लिए ऐसा अवश्य करना चाहिए । रिंग-मास्टर को मैंने आदेश दे दिया है—किसी एक सिंह को

वह ऐसा प्रशिक्षित करे कि मैं उस पर सवारी गांठता हुआ, 'मिस्टिक आर्डर' के जंगल में सैर पर निकल सकूं।

रिंग-मास्टर अपने कर्त्तव्य को निभाने के लिए जी-जान से जुट गया है।

□

बारबरा और मार्गरेट—श्रीमती एन वाण्डरविल्ट की दोनों पुत्रियां—मेरी शिष्याएं बन चुकी हैं। गुरु-दक्षिणा में दोनों ने मुझे एक-एक, शानदार, नई कार दी है। मैंने उन्हें समझाया है, "दुःख या सुख, यह केवल शरीर का झमेला है। शरीर है, इस लिए हम दुःख झेलते हैं। शरीर ही न हो, तो दुःख झेलने के लिए हमारे पास कोई माध्यम न रहे। इसी तरह, सुख भोगने के लिए भी हमारे पास यही एक माध्यम है—शरीर। आत्मा तो सुख और दुःख से ऊपर है, परे है। इसी लिए, यदि हमें अपनी आत्मा को सही-सही पहचानना है, तो—हमें न सुख की खोज करनी है, न दुःख से छुटकारा पाना है। हमें तो सुख और दुःख दोनों से तटस्थ हो जाना है, परे हो जाना है, ऊपर हो जाना है।"

"जी, गुरुदेव।" दोनों बहनें—सुन्दर बहनें—एक स्वर में बोली हैं।

मैंने जारी रखा है, "हमें शरीर के प्रति कदापि कोई मोह नहीं रखना चाहिए। शरीर से तटस्थ होने के लिए हमें ऐसा हर सम्भव उपाय आजमाना चाहिए, जो हमें मुक्ति देता हो। मसलन···सच्चे योगी और तान्त्रिक कभी भी अपने शरीर को वस्त्रों के बन्धन में नहीं बांधना चाहते। वस्त्र वे केवल इसलिए पहनते हैं कि उन की निरवस्त्रता के कारण दुनियां के आम आदमियों को कोई अरुचि या असुविधा न हो। किन्तु···सच्चे योगी और तान्त्रिक जब भी किसी ऐसी स्थली में होते हैं, जहां बाहरी दुनिया के आम आदमियों की निगाह उन पर न पड़ सकती हो; वे वस्त्रों के बन्धन से मुक्त हो जाते हैं। स्वयं अपने शरीर के प्रति, या···अपने संगी-साथियों के शरीर के प्रति वे इतने तटस्थ और सहज होते

हैं कि···वास्तव में···वस्त्र पहनना उन्हें नितान्त असहज लगता है···"

"जी···"

"यदि आप दोनों, योग और तान्त्रिक विद्याओं द्वारा, शान्ति पाना चाहती हैं, तो सब से पहले अपने शरीर की तरफ से तटस्थ हो जाइए। फिर सुख और दु.ख, दोनों के प्रति तटस्थता बरतने लगिए। तभी शान्ति का द्वार आप के लिए खुल सकेगा।"

"यस, लविंग गुरु।"

"'मिस्टिक आर्डर' का वातावरण शुरू में अटपटा जरूर लग सकता है, किन्तु जब भी मन में कोई आशका जगे, सीधे मेरे पास आइए और पूछिए कि समाधान क्या है। चूंकि आप दोनों बाहर की दुनिया से यहा नई-नई आई हैं, यहाँ की कई गतिविधियाँ आप को अनैतिक-सी लगेंगी, उन्हें देख आप को झटका-सा महसूस होगा। तब, बिना मुझ से मशविरा किए, मन में कोई पूर्वाग्रह मत पाल लीजिएगा। पूर्वाग्रहों के लिए योग में कोई स्थान नहीं।"

"हम याद रखेंगी, गुरुदेव।"

"अब, आज आप दोनों अपने कमरे मे जा सकती हैं।"

मार्गरेट और बारबरा उठ पड़ी हैं। उन्होंने तीन बार मेरी परिक्रमा की है। फिर मेरे चरण-कमलों को स्पर्श। स्पर्श-युक्त उंगलियाँ अपनी आखों पर, मस्तक पर, सिर पर। मैंने हाथ उठा दिया है—आशीर्वाद··· आशीर्वाद···

□

गैरेज मे खड़ी गाड़ियों के बीच, मेरे पास, एक लिंकन है। रॉल्स-रॉयस भी है। एक पियर्स-ऐरो। स्टुतज। पैकार्ड। मिनर्वा। आदि-आदि।

मेरी दृष्टि में—सब से विशिष्ट कार है हैस्टेनले-स्टीमर। भाप से चलती है। कितना पुराना माडल। हुड़ुक···हुड़ुक···उस के एन्जिन में भाप घुटती है। उसे चलाने का अधिकार मेरे किसी शोफर को नहीं।

उसे या तो मैं चला सकता हूं, या ब्लान्शे। ब्लान्शे को स्टैनले-स्टीमर की हुडुक-हुडुक-पसन्द नहीं। इसी लिए, इजाजत होते हुए भी, इस गाड़ी को चलाने के लिए वह कभी आगे नहीं आती। 'पुराने सोने' का उपयोग करने के लिए मैं अकेला।

न्याक से न्यूयार्क जब भी जाता हूं—हुडुक···हुडुक···

पगड़ी बंधी हुई है। पैरों में खड़ाऊं। मस्तक पर त्रिपुण्ड। लम्बा, गेरू रंग का चोगा कन्धों से झूल रहा है। पान चबा रहा हूं। पीकदान गाड़ी में ही रखा है। पिच्च-पिच्च थूक रहा हूं होंठ ऐसे लाल, जैसे किसी का लहू पीया हो। शानदार दाढ़ी लोगों को आतंकित कर रही है। न्यूयार्क की सड़कों पर तहलका मच जाता है—

तान्त्रिक आया। तान्त्रिक आया। हुडुक···हुडुक···

और जब अपने काम-धाम निबटा कर वापस न्याक की ओर मुड़ता हूं, फिर से तहलका—तान्त्रिक गया। तान्त्रिक गया। हुडुक···हुडुक···

मेरी स्टैनले-स्टीमर 'मिस्टिक आर्डर' के अहाते में प्रवेश करती है। बैठा हुआ हूं ड्राइवर की सीट पर···

□

बैठा हुआ हूं सिंह की पीठ पर। मैं और सिंह धूप-स्नान कर रहे हैं—और सही मायनों में धूप-स्नान करते समय केवल अपनी चमड़ी पहनने की इजाजत होती है। इस इजाजत का उल्लघंन न मैंने किया है, न सिंह ने।

अपनी पीठ पर मुझे लादे-लादे घूम रहा है सिंह! अलमस्त, पालतू सिंह···

'मिस्टिक आर्डर' में आज धूप-स्नान का दिवस है। जबर्दस्त स्वीमिंग-पूल में सब किलकते हुए नहा रहे हैं—धूप-स्नान भी कर रहे हैं। केवल अपनी चमड़ी पहने-पहने···

योगी। योगिनियां। ह, ह, ह···मैं मन-ही-मन मुस्कराता हूं, ऊपर से मेरी गम्भीरता और-और गहन! अपने सिंह को इशारा करता हूं।

हफ-हफ करता हुआ वह उधर मुड़ जाता है, जिधर स्वीमिंग-पूल है ।

युवती योगिनियों को दूर से देखता हूं । धूप में चमचमाती, गीली, छरहरी मछलियां—किलकती हुई !

ब्ल स्टी ने कहा था, थोड़ी-थोड़ी बेईमानी करने में कोई हर्ज नहीं । अभी मैं इसी स्तर की बेईमानी कर रहा हूं । मैंने 'मिस्टिक आर्डर' के सदस्यों को सिखाया है कि किस प्रकार वस्त्रों के बन्धन से मुक्त हो कर अपने शरीर के प्रति तटस्थ हुआ जाए, ताकि अन्ततोगत्वा ईश्वर से साक्षात्कार करने का मौका मिले ।

मैंने जो सिखाया है, गलत नहीं सिखाया । किन्तु, मेरी नन्ही-सी बेईमानी । प्रौढ़ों पर नहीं, प्रौढ़ाओं पर नहीं, युवकों पर भी नहीं—केवल छरहरी योगिनियों—युवती योगिनियों पर ही मेरी निगाह क्यों कृपा करती है ? कितनी मीठी-मीठी, भीनी-भीनी, नन्ही-सी बेईमानी...

किन्तु क्या कोई माई का लाल इस बेईमानी का आभास भी पा सकता है ? मेरा चेहरा कितना धीर गम्भीर...सामने, सब-कुछ, देख रहा होने पर भी पुतलियों में ऐसा सात्विक भाव, जैसे कुछ देखा ही न रहा हो—या, जो देखा, उस का कोई अर्थ ही न हो !

'मिस्टिक आर्डर' के सदस्यों को वस्त्रों से मुक्त करना—इस के पीछे एक गहरा आर्थिक कारण है । धार्मिक या तान्त्रिक नहीं, विशुद्ध रूप से आर्थिक कारण ।

जब कुछ व्यक्ति साथ-साथ मिल कर शराब पीते हैं, तो वे सब आपसी दोस्ती के बन्धन में बंध जाते हैं या नहीं ? बिना किसी परिचय के भी वे एक-दूसरों के लिए गहरे परिचित बन जाते हैं या नहीं ?

यह बात निरवस्त्रता पर भी लागू होती है ।

'मिस्टिक आर्डर' के सभी सदस्य-सदस्याएं, सप्ताह में कम-से-कम एक बार सामूहिक धूप-स्नान अवश्य करते हैं । सभी व्यक्ति जब निरवस्त्र हो कर स्वीमिंग-पूल में कूदते हैं, तो अपने-आप वे एक-दूसरों के सहयोगी बन जाते हैं—सहयोगी, रिश्तेदार, मित्र पड़ोसी ! उन का यह स्नेह-भरा नाता केवल उन्हीं के बीच नहीं होता । यह नाता मेरे

और उन के बीच भी होता है। वे मेरे शिष्य-परिवार के होते हुए भी मित्र-परिवार के हो जाते हैं। इसी लिए जब उन्हें पता चलता है कि महान् तान्त्रिक ओमप्रकाश जी शास्त्री को अपने नए तान्त्रिकअनुष्ठान के लिए धन की जरूरत है, तो यह जरूरत केवल ओमप्रकाश शास्त्री की न हो कर स्वयं उन की भी हो जाती है।

और उन्हें धन की क्या कमी !

जो मैं चाहता हूं, सम्पन्न हो जाता है। कितना मैं चाहता हूं, मिल जाता है। जब चाहता हूं, तब हाजिर !

केवल धूप-स्नान के समय नहीं। सामूहिक सम्मोहन के जाल में फंस कर मैंने उन्हें बार-बार आदेश दिए हैं—मुक्त करो अपना तन, ताकि मन भी मुक्त हो जाए···

और, हर बार, एक-एक व्यक्ति ने आदेश का पालन किया है।

ईमानदारी यह कि तन को मुक्त करने से मन भी वास्तव में, मुक्त हो जाता है।

बेईमानी यह कि मेरी निगाहें, हर ऐसे अवसर पर, केवल युवती योगिनियों पर ही कृपा करती हैं—वैसे, यह दीगर बात है कि इस का पता किसी को नहीं चलता। मैं शर्त बद सकता हूं कि ब्लान्शे ने भी मेरी इस बेईमानी का रंच-मात्र आभास नहीं पाया है।

बेईमानी और ईमानदारी का अनुपात निकालें, तो 'मिस्टिक आर्डर' में ईमानदारी ही ज्यादा निकलेगी, किन्तु कुछ लोग बड़े संकुचित दिमाग के होते हैं। वे केवल एक ही ढंग से सोचते हैं कि यदि कोई संस्था तगड़ी फी वसूल करने लगे, तो उस संस्था में सिवा बेईमानी के और कुछ नहीं होता। भला कोई तुक है ? हर डाक्टर की, हर वकील की, हर अभिनेता-अभिनेत्री की, अपनी-अपनी फी होती है या नहीं ? फिर संस्थाओं को भी पूरा हक है अपने इच्छानुसार फी वसूल करने का।

'मिस्टिक आर्डर' कहीं डाका तो नहीं डालता, चोरी तो नहीं करता, ब्लैक-मेलिंग का जाल तो नहीं फैलाता।

तगड़ी फी के बदले में 'मिस्टिक आर्डर' अपने सदस्यों को वह चीज

देता है—ईश्वर से साक्षात्कार का वचन—जो पश्चिमी सभ्यता के बीच नितान्त दुर्लभ है। जो नितान्त दुर्लभ हो, उस की फी कम क्यों रखी जाए ?

और, वास्तव में, ये सब इतने अमीर हैं कि चाहे कितना ही ये दे डालें, ये कम ही देते हैं। इस नाते 'मिस्टिक आर्डर' की फी कतई ऊंची है। ऊंची फी उसे कहते है,जो वसूल हो न की जा सके। जो वसूल होने नहीं लगे, वह ऊंची फी कैसे ?

दूर से जब सिंह आता दिखाई दिया, तो स्वीमिंग-पूल में कल्लोल कर रही 'मिस्टिक आर्डर' की जनता धन्य हो गई और हाथ हिला-हिला कर अपने प्रियतम गुरु का अभिनन्दन करने लगी।

मैंने आशीर्वाद की मुद्रा में हाथ उठा दिया।

मेरा सिंह स्वीमिंग-पूल की बगल से गुजरने लगा। मेरी आखें कुछ भी न देखती हुई सब-कुछ देखती रही। इन योगिनियों में से अनेक ऐसी हैं, जो ओम गुरु के साथ अपनी एकता स्थापित करने के लिए केवल मन और धन से नहीं, तन से भी बार-बार न्यौछावर हुई हैं'''आशीर्वाद'''आशीर्वाद'''

सहसा

एक चमत्कार !

उस चमत्कार को केवल मैंने पहचाना। और मैं अपने सिंह पर आरूढ, इस तरह वहां से गुजरता रहा, मानो चमत्कार का कोई आभास मुझे न मिला हो।

दूर'''बहुत दूर से'''कोई बिम्ब-सा चमका था। वह चौंध सीधे मेरी आखों पर आई थी। क्षण-मात्र में जान गया था मैं कि मामला क्या था।

लेकिन, अपने सिंह पर आरूढ मैं, अनजान व्यक्ति की तरह गुजरता रहा। यदि मैं जरा भी ऐसा आभास देता कि उस चौंध की जानकारी मुझे मिल गई है, तो दूरबीन में लगी हुई किसी की आखें जान लेती कि मैं जान गया हूं। तब, दूरबीन पर लगी उन आंखों का मालिक अपनी

और उन के बीच भी होता है। वे मेरे शिष्य-परिवार के होते हुए भी मित्र-परिवार के हो जाते हैं। इसी लिए जब उन्हें पता चलता है कि महान् तान्त्रिक ओमप्रकाश जी शास्त्री को अपने नए तान्त्रिकअनुष्ठान के लिए धन की जरूरत है, तो यह जरूरत केवल ओमप्रकाश शास्त्री की न हो कर स्वयं उन की भी हो जाती है।

और उन्हें धन की क्या कमी !

जो मैं चाहता हूं, सम्पन्न हो जाता है। कितना मैं चाहता हूं, मिल जाता है। जब चाहता हूं, तब हाजिर !

केवल धूप-स्नान के समय नहीं। सामूहिक सम्मोहन के जाल में कस कर मैंने उन्हें बार-बार आदेश दिए हैं—मुक्त करो अपना तन, ताकि मन भी मुक्त हो जाए…

और, हर बार, एक-एक व्यक्ति ने आदेश का पालन किया है।

ईमानदारी यह कि तन को मुक्त करने से मन भी वास्तव में, मुक्त हो जाता है।

बेईमानी यह कि मेरी निगाहें, हर ऐसे अवसर पर, केवल युवती योगिनियों पर ही कृपा करती हैं—वैसे, यह दीगर बात है कि इस का पता किसी को नहीं चलता। मैं शर्त बद सकता हूं कि ब्लान्शे ने भी मेरी इस बेईमानी का रंच-मात्र आभास नहीं पाया है।

बेईमानी और ईमानदारी का अनुपात निकालें, तो 'मिस्टिक आर्डर' में ईमानदारी ही ज्यादा निकलेगी, किन्तु कुछ लोग बड़े संकुचित दिमाग के होते हैं। वे केवल एक ही ढंग से सोचते हैं कि यदि कोई संस्था तगड़ी फी वसूल करने लगे, तो उस संस्था में सिवा बेईमानी के और कुछ नहीं होता। भला कोई तुक है ? हर डाक्टर की, हर वकील की, हर अभिनेता-अभिनेत्री की, अपनी-अपनी फी होती है या नहीं ? फिर संस्थाओं को भी पूरा हक है अपने इच्छानुसार फी वसूल करने का।

'मिस्टिक आर्डर' कहीं डाका तो नहीं डालता, चोरी तो नहीं करता, ब्लैक-मेलिंग का जाल तो नहीं फैलाता।

तगड़ी फी के बदले में 'मिस्टिक आर्डर' अपने सदस्यों को वह चीज

अरे, ओमप्रकाश !

देता है—ईश्वर से साक्षात्कार का वचन—जो पश्चिमी
नितान्त दुर्लभ है। जो नितान्त दुर्लभ हो, उस की फी
जाए ?

और, वास्तव में, ये सब इतने अमीर हैं कि चाहे
डालें, ये कम ही देते हैं। इस नाते 'मिस्टिक आर्डर' की
है। ऊंची फी उसे कहते हैं,जो वसूल ही न की जा सके
नहीं लगे, वह ऊंची फी कैसे ?

दूर से जब सिंह आता दिखाई दिया, तो स्वीमिंग-
कर रही 'मिस्टिक आर्डर' की जनता धन्य हो गई
कर अपने प्रियतम गुरु का अभिनन्दन करने लगी

मैंने आशीर्वाद की मुद्रा में हाथ उठा दिया।

मेरा सिंह स्वीमिंग-पूल की बगल से गुजरने
भी न देखती हुई सब-कुछ देखती रही। इन
हैं, जो ओम गुरु के साथ अपनी एकता
मन और धन से नहीं, तन से भी बार-बार
र्वाद···आशीर्वाद···

सहसा

एक चमत्कार !

उस चमत्कार को केवल मैंने
आरूढ़, इस तरह वहां से गुजरता रहा
मुझे न मिला हो।

दूर···बहुत दूर से···कोई
मेरी आंखों पर आई थी।
गया था।

लेकिन, अपने सिंह पर
रहा। यदि मैं जरा भी ऐसा
मुझे मिल गई है, तो दूरदर्शन
मैं जान गया हूं। तब, दूरदर्शन

मोर्चेबन्दी को मजबूत कर सकता था···

रात को मैंने ब्लान्शे से कहा, "न्याक गांव के निवासी हम लोगों पर जासूसी कर रहे हैं।"

"आप ने कैसे ज़ाना ?"

"दूरबीन द्वारा हमारे स्वीमिंग-पूल पर नजर रखी जा रही है। आज, अपने सिंह पर आरूढ़ हो कर जब मैं स्वीमिंग-पूल के नजदीक से गुजर रहा था, मेरी आंखों में एक चौंध आ कर लगी। निस्सन्देह वह चौंध किसी दूरबीन के कांच पर धूप के बिम्बित होने की थी। ऐसी चौंध हमेशा वहीं पहुंचती है, जहां—दूरबीन के आरपार—निगाह गड़ाई जाए।"

"याने···हमारे सदस्यों की पवित्र नग्नता को न्याक की देहाती, फूहड़ जनता कामुक निगाहों से देख-देख कर···"

'हां, ब्लान्शे ! जनता आनन्द ले रही है। हमारे सूर्य-पूजक सदस्यों के लिए यह स्थिति घोर अपमान की है।" मेरा स्वर कांप गया। वाह रे मैं !

ब्लान्शे बोली, "हमें अपने स्वीमिंग-पूल को ढक देना चाहिए—लताओं इत्यादि से। मानती हूं कि इस से सूर्य की विटामीन-युक्त किरणें नहाने वालों तक नहीं पहुंचेंगी, लेकिन उन्हें गन्दे लोगों की निगाहों से तो बचाया जा सकेगा।"

'सूर्य-स्नान के लिए, 'मिस्टिक आर्डर' की इमारतों के बीच ऐसे हिस्से व्यवस्थित करने होंगे, ब्लान्शे, जहां सूर्य तो झांक सके, किन्तु न्याक की जनता नहीं। किसी भी छत, किसी भी वृक्ष, किसी भी टेकरी या मीनार आदि पर चढ़ कर भी यदि दूरबीन से देखा जाए, तो केवल दीवारें नजर आएं—हमारे सूर्य-पूजक नहीं।" मैंने कहा।

"हां।" ब्लान्शे ने उत्तर दिया, "इमारतों में ऐसे हिस्सों की खोज करना मुश्किल नहीं है, किन्तु···यदि सदस्यों ने पूछा कि स्वीमिंग-पूल को ढका क्यों जा रहा है, तो ? उन्हें क्या जवाब दिया जाएगा ? मेरा ख्याल है, उन्हें यह बताना उचित नहीं रहेगा कि न्याक के फूहड़ लोगों

ने उन के देह-दर्शन कर लिए हैं और वे आगे भी यही करते रहेंगे, यदि स्वीमिंग-पूल को ढका न गया'''क्योंकि'''असलियत जान लेने पर हमारे सदस्यों को अजीब-सा लगेगा। उन की उन्मुक्तता गायब हो जाएगी। उन में सकोच, झेंप और शर्म घर कर लेगी। हमें नहीं भूलना चाहिए कि 'मिस्टिक आर्डर' के सभी सदस्य कितने सम्मानित नागरिक हैं।"

"मैं तुम से पूरी तरह सहमत हू, ब्लान्शे। सदस्यों पर यह जाहिर नहीं किया जा सकता कि उन पर देह-जासूसी की जा चुकी है—और आगे भी की जाती रहेगी, यदि'''"

"लेकिन जब वे पूछेंगे कि स्वीमिंग-पूल को ढका क्यों जा रहा है, तो?"

"नहीं पूछेंगे। कल जो सामूहिक सम्मोहन का कार्यक्रम है, उस में मैं सब को यह सजेशन दे दूगा कि स्वीमिंग-पूल को जरूर ढक देना चाहिए। उस सजेशन के बाद किसी की ओर से कोई प्रश्न नहीं आएगा।"

"ओके।" ब्लान्शे ने सिर हिलाया।

"किन्तु, ब्लान्शे, इतना निश्चित जानो कि ज्यों ही स्वीमिंग-पूल को ढका जाएगा, न्याक की जनता विद्रोह कर देगी।"

"क्यों ?"

"न्याक के जिन-जिन व्यक्तियों के पास दूरबीनें हैं, वे 'मिस्टिक-आर्डर' के अहाते में जासूसी करने का आनन्द लेने के आदी हो चुके हैं। जब उन के आनन्द पर डाका पड़ेगा, तो सहसा उन्हें याद आएगा कि अब तक उन्होंने जो-कुछ देखा, वह तो अनैतिक था। खिसियानी बिल्ली खम्बा नोचती है या नहीं ? अपनी खीझ निकालने के लिए वे हमारे खिलाफ विद्रोह के झण्डे खड़े करेंगे।"

ब्लान्शे गहरे सोच में है। मैं भी।

□

'मिस्टिक आर्डर' में यदि कोई सदस्य स्थायी या लगभग स्थायी रूप

से आ कर रहना चाहे, तो इस का पूरा इन्तजाम है।

पिछले चार महीनों से श्रीमती एन वाण्डरविल्ट और उस की दोनों पुत्रियां—मार्गरेट और वारवरा—'मिस्टिक आर्डर' में ही रह रही हैं। न्यूयार्क का अपना निवास-स्थान उन्होंने अस्थायी तोर पर छोड़ दिया है। केवल मिस्टर वाण्डरविल्ट न्यूयार्क आते-जाते हैं, विभिन्न व्यवसायों की देखभाल के लिए न्यूयार्क में अक्सर रुक भी जाते हैं, अन्यथा···मिस्टर वाण्डरविल्ट भी 'मिस्टिक आर्डर' में ही रहने लगे हैं।

"श्रीमती वाण्डरविल्ट मिलना चाहती है।" अनुचर ने सूचित किया।

"आने दिया जाए।" मैं ने महाराजाओं जैसी अदा में कहा।

अनुचर चला गया।

श्रीमती वाण्डरविल्ट ने प्रवेश किया, "नमस्कार, गुरुदेव।"

"आशीर्वाद, शिष्या।" मैंने आशीर्वाद की मुद्रा में हाथ उठा दिया, "कुशल तो है?"

"आप की कृपा है, गुरुदेव।" श्रीमती एन वाण्डरविल्ट ने उत्तर देते-देते मेरी परिक्रमा कर ली, चरण-कमलों को स्पर्श कर लिया, स्पर्श-युक्त उंगलियां अपनी पलकों और माथे पर छूआ ली। फिर, सामने वैठते हुए कहा, "आप को एक कष्ट देने आई हूं।"

"मैं कष्टों से परे हूं! कष्ट क्या है, मैं नहीं जानता।" अपना 'पेटेण्ट जवाव' मैंने लौटाया।

"वात यह है, गुरुदेव···" एन के चेहरे पर संकोच था, "मेरी दोनों पुत्रियां अभी वहुत जवान हैं। दोनों ने तलाक तो ले लिया, किन्तु···मैं नहीं सोचती कि उन्हें फिर ये शादी नहीं करनी चाहिए।"

"अवश्य करनी चाहिए।" मैंने हां में हां मिलाई।

"गुरुदेव, वड़ी कृपा होगी, यदि उन के लिए योग्य वर का चुनाव आप कर दें।"

"मैं?"

"हां, गुरुदेव, आप! क्योंकि आप में अनेक दिव्य शक्तियां हैं। आप

जो करेंगे, शुभ ही करेंगे। मैं नहीं चाहती कि मेरी पुत्रियों को फिर से—दूसरी बार भी—तलाक लेने की नौबत आए। यदि उन की शादियां आप तय करवा दें, तो, मुझे पूरा विश्वास है कि आप की दिव्य शक्तियां उन के पारिवारिक जीवन में शान्ति बनाए रखेंगी।"

"तथास्तु !"

"जी ? मैं समझी नहीं।"

" 'तथास्तु' संस्कृत का शब्द है, शिष्या ! इस का अर्थ है, 'वही होगा, जो चाहती हो'। समझी ?"

"ओह, गुरुदेव।" और श्रीमती एन वाण्डरविल्ट ने बाकायदा झुक कर मेरे चरण चूम लिए। कितने गर्म, नर्म होठ !

"लेकिन इस बाबत···अपने पतिदेव से राय ले ली है न ?" मैंने पूछा।

"हां, लविंग गुरु।"

"फिर ठीक है।"

☐

एन की दोनों पुत्रियों को मैंने बातचीत के लिए बुलवाया है। वे आ गई हैं। सामने बैठी हैं।

मैं उन्हें दिव्य ज्ञान दे रहा हूं, "मार्गरेट ! बारबरा ! सम्पूर्ण जीव-जगत में केवल मनुष्य ही एक ऐसा प्राणी है जो निरन्तर अपना सिर आकाश की तरफ उठाए रखता है। चलते-फिरते, उठते-बैठते···यहां तक कि सोते समय भी वह अपना सिर तकिए के सहारे ऊंचाई पर बनाए रखता है।"

"जी।"

"जिस प्राणी का सिर हमेशा ऊंचाई पर बना रहता है, उसे कभी मानसिक शान्ति नहीं मिल सकती।" मैं कहता जा रहा हूं।

"जी।"

"इसी लिए भारतीय योग में 'शीर्षासन' नामक एक आसन है।

'शीर्ष' याने सिर। 'शीर्षासन' याने सिर के वल किया जाने वाला आसन।"

"यदि हम सिर नीचे और पैर ऊपर कर के खड़े हो जाएं, तो हमारे खून का दौर उल्टा हो जाएगा। इस से मस्तिष्क को खून की नई सप्लाई मिलेगी। नई सप्लाई का अर्थ है नई शक्ति। नई शक्ति का अर्थ है नई शान्ति, क्योंकि शान्ति उसी को मिलती है, जिसे तसल्ली हो और तसल्ली उसी को मयस्सर होती है, जिसे किसी तरह की चिन्ता न हो। चिन्ताएं आर्थिक, सामाजिक या राजनीतिक शक्तियों से दूर नहीं होतीं। वे तो मानसिक शक्ति से दूर होती हैं।"

"जी।"

"मानसिक शक्ति प्राप्त करने का, विश्व में सर्वश्रेष्ठ उपाय है—शीर्षासन।"

"जी।"

"मैं तुम दोनों के लिए योग्य वरों की तलाश कर रहा हूं, लेकिन··· जव तक तुम दोनों शीर्षासन के अभ्यास द्वारा अपनी मानसिक शक्ति नहीं वढ़ातीं, तव तक···किसी भी शादी से तुम्हें सुख नहीं मिल सकता।"

"हम शीर्षासन करने के लिए तैयार हैं, गुरुदेव।"

"कल की कक्षा में तुम दोनों जरूर आना। कल मैं स्वयं शीर्षासन कर के दिखाऊंगा। उसी के अनुसार, सव सामूहिक रूप से शीर्षासन करेंगे! वाद में।"

"हम जरूर आएंगी।"

"तो मैं वचन देता हूं कि तुम दोनों को मानसिक शान्ति जरूर मिलेगी। फलस्वरूप, दूसरी शादी के वाद, हर तरह का सुख-चैन तुम्हारे चरण चूमेगा।"

"हम आप का आभार कभी न भूलेंगी, गुरुदेव।"

☐

खले आकाश के नीचे, सैकड़ों कुर्सियों पर, न्यूयार्क के सव से धनी

और प्रभावशाली घरानों के स्त्री-पुरुष विराजमान हैं। उन के सामने, ऊंचे मच पर, सुसज्जित मण्डप के नीचे मैं बैठा हूं। दे रहा हूं भाषण--कि शीर्षासन क्या है !

अन्त में, जिन्दा उदाहरण पेश करने के लिए, मंच पर स्वयं मैं शीर्षासन करने लगता हूं। सिर पर पगड़ी। कमर पर लंगोटी। तमाम गठीले बदन पर तेल चुपड़ा हुआ। नंग-धड़ग, गठीला तान्त्रिक, जो बिना सहारे के सिर के बल खड़ा हो सकता है ! उपस्थित मेहमानो के बीच रोमाच की सिसकारी-सी व्याप्त हो जाती है।

मैं ऊंचे स्वर में बक रहा हूं, "आहा, आहा, मेरे खून का दौर उल्टा हो गया, कितना अच्छा लग रहा है, आहा कितना दिव्य अनुभव—ओह।"

स्वयं उलट जाने के कारण सामने बैठा हर व्यक्ति मुझे उल्टा नजर आ रहा है स्वयं मेरा ही सिर नीचे और पैर ऊपर हैं, किन्तु लगता है, सामने के हर व्यक्ति का सिर नीचे और पैर ऊपर हो गए हैं।

सहसा देखता हूं—पुलिस आ पहुंची है। सारजेण्ट सब से आगे चल रहा है। पीछे-पीछे पुलिस के चार जवान। सारजेण्ट का सिर नीचे, पैर ऊपर हैं। पुलिस के चारो जवानों के सिर नीचे, पैर ऊपर हैं।

मेरी बड़बड़ाहट जारी है, "दिव्य अनुभव···दिव्य अनुभव···"

सारजेण्ट के हाथ में एक खर्रा है। उस की निगाह मच की ओर उठती है। ज्यों ही उस ने मेरे शीर्षासन के दर्शन किए हैं, उस की आखें फैल गई हैं। सिर के बल खड़ा नग-धड़ग तान्त्रिक ! यह दृश्य उस के लिए इतना अटपटा है कि—

उपस्थित मेहमानों में से अभी किसी को भी नहीं मालूम कि सारजेण्ट आया है—अपने चार जवानों के साथ। सारजेण्ट सब के पीछे खड़ा है, जबकि सब की निगाहें मंच की ओर हैं—मुझ पर।

सारजेण्ट अपना होश सम्भालने की कोशिश करता है। ऊचे स्वर में वह अपने हाथ का खर्रा पढ़ने लगता है—

"श्रीमान ओमप्रकाश शास्त्री उर्फ डाक्टर पियरे आनंल्ड बनार्ड !

आप पर आरोप लगाया जाता है कि…"

उस का ऊंचा स्वर सुनते ही कुर्सियों में बैठा हर व्यक्ति घूम कर पीछे देखने लगता है। मेरा शीर्षासन ढह जाता है।

जल्दी से मैं सिर के बल नहीं बल्कि पैरों के बल खड़ा हो जाता हूं। लपक कर सारजेण्ट के पास पहुंचता हूं। सारजेण्ट की आंखों में देखता हूं—इस तरह कि सारजेण्ट छलनी हो गया है।

"आरोप ? मुझ पर आरोप ? कैसा आरोप ?" मैंने कड़क कर पूछा है।

मेरी सम्मोहक आंखों में देखता सारजेण्ट ठगा-सा रह गया है। बड़ी मुश्किल से इतना कह पाता है, "जो…न्याक के निवासियों ने आप पर आरोप लगाया है कि अपने 'मिस्टिक आर्डर' में आप सामूहिक नग्नता और व्यभिचार…"

"न्याक के निवासियों से कहिए कि जो उन की समझ से परे है, उसे समझने की चेष्टा न करें। उन के द्वारा लगाए गए आरोप निराधार हैं।"

"लेकिन…"

"देखिए, मिस्टर सारजेण्ट ! यहां अभी भारतीय योग की कक्षा चल रही है। यह एक शैक्षणिक केन्द्र है। किसी भी शैक्षणिक केन्द्र में पुलिस उस तरह नहीं घुस सकती, जिस तरह दनदनाते हुए आप घुस आए हैं।"

"जी, लेकिन…"

मैं अपनी नीली निगाहों से सारजेण्ट को बींधता जा रहा हूं, "यहां मेरे जो विद्यार्थी और विद्यार्थिनियां मौजूद हैं, उन्हें स्वयं अपनी आखों से देख लीजिए। मुमकिन है, कइयों को आप पहले ही से पहचानते हो, क्योंकि न्यूयार्क के जो भी सब से धनी प्रभावशाली और समझदार व्यक्ति हैं, वे ही यहां—इस कक्षा में—मौजूद हैं। यदि सामूहिक नग्नता और व्यभिचार आदि के आरोप मुझ पर लगाए गए, तो उस का यही अर्थ होगा कि ये सब आरोप न्यूयार्क के सब से प्रभावशाली लोगों पर

लगाए जा रहे है । सोच लीजिए, फिर आप का क्या हश्र होगा ।"

"जी,···जी···जी"

"चले जाइए ।" मैंने सम्मोहित करने वाला आदेश दिया है ।

सारजेण्ट, किन्तु अपनी जगह से हिल नही रहा । मैंने दोहराया है, "मैं कहता हूं, चले जाइए—इसी वक्त । जाते हैं या नही ?"

और सारजेण्ट पीछे हट रहा है । उस के साथ आए चारो जवान भी चुपचाप पीछे हट रहे हैं । जब तक वे पूरी तरह बाहर नही निकल जाते—मेरी सर्प-आखें उन्हे दश देती रहती हैं । सामूहिक सम्मोहन के जाल में कस कर मैंने उन्हें विवश कर दिया है । वे जा रहे हैं···वे गए··· वे चले गए···ह, ह, ह···

□

अगले दिन न्याक का पोस्ट-मास्टर मुझ से मिलने आया । गावो के पोस्ट-मास्टर बहुत ही महत्व के व्यक्ति होते हैं । जिसे चाहे, जमा दें । जिसे चाहें उखाड़ दें, । मैंने पोस्टमास्टर के स्वागत में पर्याप्त औपचारिकता बरती । बिठाते हुए कहा, 'खेद है, आप के सम्मान में मैं ह्विस्की, रम या बीयर की बोतल नही खोल सकूगा, क्योंकि 'मिस्टिक आर्डर' मे शराब पीने की सख्त मनाही है । शराब एक निहायत कमीनी चीज है, हालांकि इस देश के लोग शराब इस तरह पीते हैं, जिस तरह भारत में पानी ।"

"मुझे शराब पेश न की जाए, इस में खेद की कोई बात नही है ।" पोस्ट-मास्टर कह रहा है । उस के चेहरे पर अविश्वास की रेखाएं हैं, क्योंकि 'मिस्टिक आर्डर' जैसी संस्था मे, जो इतनी बदनाम होने लगी है, शराब पीने की सख्त मनाही हो—यह बात, एकाएक, गले से नीचे उतरने वाली है भी तो नही ।

मेरी निगाहे पोस्ट-मास्टर की ओर उठती हैं, 'शायद आप कोई जरूरी बात करने के लिए आए हैं···"

"जी हा···"

"कहिए।"

"न्याक के निवासियों ने मुझे अपना दूत बना कर आप के पास भेजा है। न्याक-निवासी चाहते हैं कि आप···कृपा कर···यहां से चले जाएं।"

"क्यों ?"

"क्योंकि आप के 'मिस्टिक आर्डर' में जो गतिविधियां चलती हैं, उन का हमारी नई पीढ़ी पर बहुत बुरा असर पड़ रहा है। नौजवानों ने दूरबीनें खरीद ली हैं। सारा काम-धाम छोड़ कर वे ऊंची जगहों पर चढ़ जाते हैं और 'मिस्टिक आर्डर' के इलाकों में निहारते रहते हैं। उन का दावा है कि उन्होंने···क्षमा कीजिएगा, मैं केवल उन के दावों की बात कर रहा हूं···उन का दावा है कि उन्होंने जवान स्त्री-पुरुषों को, सरे-आम, नग्न स्नान करते और घूमते-घामते देखा है। उन्होंने स्वयं आप को भी सिंह पर सवार हो कर, नग्नावस्था में, 'मिस्टिक आर्डर' के जंगल में विचरण करते देखा है।"

"तो ?"

"यह सब हमारी नई पीढ़ी पर इतना बुरा असर···"

"यहां जो होता है, योग-साधना के लिए और तान्त्रिक अनुष्ठानों के लिए होता है। रही बात नग्नता की। यदि दूरबीनों का इस्तेमाल न किया जाए, तो यह नग्नता किसी की निगाह में नहीं आएगी। यह कुछ-कुछ इसी तरह की बात है कि बाथ-रूम में नग्न हो कर नहाते समय आप ने दरवाजा अच्छी तरह बन्द कर लिया, किन्तु दूसरों ने चुपके-चुपके सेंध लगा कर अन्दर झांकना शुरू कर दिया। दोष किस का माना जाए ? नहाने वाले का या चुपके-चुपके सेंध लगाने वाले का ? रूम में हम सब नग्न ही होते हैं। इस का अर्थ यह नहीं कि हम सब-के-सब नई पीढ़ी को बर्बाद करने पर तुले हुए हैं।"

"जी, आप का कहना सच तो है, किन्तु···

"जब मेरा कहना सच है, फिर 'किन्तु' की कोई गुंजाइश नहीं।"

"दरअसल, न्याक की जनता अभी तक समझ नहीं पाई है कि

'मिस्टिक आर्डर' मे आखिर होता क्या है । आप ने बाहर जो बोर्ड लगा रखा है न'''जिस पर लिखा है कि यहां दार्शनिक झूम-झूमकर नाचते हैं और बेवकूफ इस का हक रखते हैं कि न्यायाधीश की टोपी पहने और, फैसले सुनाते जाएं, सुनाते जाएं'''इस बोर्ड ने भी गांव में बड़ी सनसनी फैलाई है ।"

'इस बोर्ड से कतई यह मतलब नहीं निकलता कि यहा व्यभिचार का अड्डा चलता है ।"

"किन्तु यह गाव वालों के बूते की बात है ही नहीं कि ऐसे बोर्ड का सही अर्थ समझें । शुरू मे लोगो ने सोचा कि यहां पागल व्यक्तियों का उपचार किया जाता है । गाव वालो की नीद हराम हो गई । हर व्यक्ति यही सपना देखने लगा कि कुछ पागल यहां से अचानक निकल भागे और उन्होने सारे गाव मे आग लगा दी—या—इसी तरह का कोई उत्पात किया'''"पोस्ट-मास्टर ने ज्यों ही यह कहा—

"हा, हा, हा !' मेरा अट्टाहास ।

जैसा कि शुरू मे ही बता चुका हू, अब मैं कभी कभी ही अट्टहास करता हू । इसी लिए, जब भी अट्टहास मेरे होठों पर आता है, उस का प्रभाव हमेशा नाटकीय रहता है। इस बार भी मेरे अट्टहास का प्रभाव—पोस्ट-मास्टर पर—नाटकीय रहा । मैंने पोस्ट मास्टर को बिलकुल भोंदू साबित कर दिया है !

सचमुच वह दुनिया के निहायत भोंदू व्यक्ति की तरह आखें झपकाता हुआ मेरी ओर देखने लगा है ।

अट्टहास रोकते हुए मैंने कहा है, "खूब ! खूब रही यह भी ! यह सस्था—एक पागलखाना ! गजब !"

"जो भी है, मैं सिर्फ न्याक-निवासियो की मान्यताएं आप के सामने रख रहा हू । यह न समझिएगा कि स्वय मैं भी यही सोचता हू ।" पोस्ट-मास्टर ने थूक निगला, 'बाद में'''लोगो ने देखा कि यहां अत्यन्त धनी-मानी महिलाओ का बहुत आना-जाना है। इस से यह अफवाह फैली कि शायद यहां उन कुआरियों को सहायता दी जाती है, जो

जवानी के जोश में गल्ती कर बैठती हैं और सहसा देखती हैं कि उनका मुंह···काला होने में देर नहीं। न्यूयार्क के ही किसी डाक्टर की सहायता लेने पर बात खुल जाने का भय होने के कारण वे युवतियां—वे कुमारिकाएं—न्यूयार्क से बाहर के डाक्टर के पास आती हैं—उस डाक्टर का नाम है ओमप्रकाश शास्त्री—और वह भारत की योग-पद्धतियों से इन कुमारियों को 'छुटकारा' दिलाता है—यही—सब ! न्यार्क के लोगों के मन में यही सब भरा रहा। कई दिनों तक।"

"जी।"

"बाद में पता चला कि यहां ऐसा कुछ नहीं होता।"

हूं।" मेरा स्वर धीमा है।

"तब लोगों ने दूरबीनें खरीदना शुरू किया—खास कर, गांव के नौजवानों ने। ऊंची जगहों पर चढ़ कर चौबीसों घण्टे भीतर जासूसी करते रहते। शेर। चीते। हाथी। बन्दर। स्वीमिंग-पूल में नग्न स्नान। सिंह पर आरूढ़ तान्त्रिक। काली की आराधना के समय भैंसे का वध···"

"काली एक भारतीय देवी है—नारी-शक्ति का साक्षात् अवतार। उसे प्रसन्न करने के लिए भैंसे की बलि देना बहुत जरूरी है। यह सब भारतीय परम्परानुसार ही किया जाता है। इस में अनैतिक या अश्लील कुछ नहीं है। सौ बात की एक बात—अपनी गतिविधियों को हम छिपा कर इसीलिए रखते हैं कि आम आदमियों को असुविधा न हो। यदि आम आदमी, हमारे इस प्रयास को विफल करने के लिए दूरबीनें खरीद लें, तो इस की जिम्मेदारी 'मिस्टिक आर्डर' पर कैसे आ सकती है ?" मैंने बहस के स्वर में कहा है।

"मैं आप से सहमत हूं।" पोस्ट-मास्टर ने उत्तर दिया है, मैंने भी अपनी ओर से लोगों को यही समझाया कि भारतीय योग-पद्धतियों में यह-सब होता है, इस में चौंकने-जैसा कुछ नहीं, किन्तु 'योग' शब्द ने तो और भी अनर्थ किया।"

"अनर्थ ?"

"जी हां। गांव के कुछ नौजवान न्यूयार्क शहर गए। वहां उन्होंने

विभिन्न पुस्तकालयों में 'योग' शब्द की छानबीन की। जो उन्होंने पता लगाया, वह यह था कि योग की एक विशेष पद्धति है, जिस की सहायता से···"और पोस्ट-मास्टर हिचक गया है।

"कहिए। कहिए।"

"नहीं जानता, इस में कितना सच है, कितना झूठ; किन्तु··· नौ-जवानों का दावा है कि···'योग' में एक पद्धति ऐसी भी है, जिस में पेडू की कुछेक मांसपेशियों को विशेष ढंग से आन्दोलित किया जाता है। उस आन्दोलन के फलस्वरूप स्त्री और पुरुष के बीच, निरन्तर, घण्टों-के-घण्टों, प्यार चल सकता है···स्त्री की कामना और पुरुष के जोश में रत्ती-मात्र भी कमी नहीं आती···घण्टों-के-घण्टों चलने वाला शारीरिक प्रेम···"

"हां, यह असम्भव नहीं। तो?"

"क्या यह सचमुच सम्भव है?" पोस्ट-मास्टर की पलकें अचरज से झप रही हैं।

"जी हां।"

"याने···लोगों के सन्देह को एकदम निराधार नहीं कहा जा सकता।"

"कैसा सन्देह?"

'लोगों की धारणा है कि 'मिस्टिक आर्डर' के विद्यार्थियों-विद्यार्थिनियों को शारीरिक प्रेम के नए-नए करतब सिखाए जाते हैं···यह-सब इस गांव के वातावरण को बर्बाद करने के षड्यन्त्र जैसा है···"

"पोस्ट-मास्टर साहब।" मैं मुस्कराया हूं "मुझे किसी भी गांव वाले से दुश्मनी नहीं। मैं क्यों किसी की बुराई चाहूंगा? जिस गांव में मुझे हमेशा रहना है, उसी गांव का वातावरण खराब कर के मुझे क्या मिलेगा?"

"लेकिन यदि सचमुच आप अपने विद्यार्थियों-विद्यार्थिनियों को···"

"यह भी एक कला है। जिस तरह दूरबीन लगा कर 'मिस्टिक आर्डर' के अहाते में जासूसी की जाती है, उसी तरह यदि कोई व्यक्ति स्वयं अपने ही घर में जासूसी कर देखे, तो उस ने 'मिस्टिक आर्डर' के अहाते

में जो देखा है, लगभग वही उसे अपने घर में ही देखने को मिल जाएगा। दरअसल, लोगों को 'मिस्टिक आर्डर' के प्रति जरूरत-से-ज्यादा कौतूहल नहीं रखना चाहिए। अति सर्वत्र वर्जयेत !"

"क्या मतलब ?"

"यह संस्कृत भाषा का एक अत्यन्त पवित्र श्लोक है…'अति सर्वत्त वर्जयेत' ! इस का मोटा अर्थ यही है कि किसी भी क्षेत्र में अति कभी नहीं करनी चाहिए, अन्यथा नुकसान पहुंचता है…इस श्लोक का एक बारीक अर्थ भी है, किन्तु वह आप के पल्ले नहीं पड़ेगा। मेरा आशय कुल इतना है कि 'मिस्टिक आर्डर' को न्याक-निवासियों की आंखों के सामने से हटाना असम्भव है। यदि 'मिस्टिक आर्डर' की गतिविधियां सहन नहीं होतीं, तो दूरबीनें नाली में फेंक दीजिए। सब ठीक हो जाएगा।"

"जी, लेकिन…"

"अभी कल ही पुलिस ने मेरे यहां छापा मारा था। वह पुलिस निस्सन्देह न्यूयार्क से बुलाई गई थी, क्योंकि न्याक में जितने पुलिस वाले हैं, सब को मैं खूब पहचानता हूं। जो सारजेण्ट मेरे यहां आया था, वह न्याक का नहीं था। याने…न्याक का मामला आप न्यूयार्क ले गए।" मैं नाराजगी के स्वर में कह रहा हूं, "कैसी विचित्र बात है कि न्याक के किसी निवासी को मैंने कभी कोई नुकसान नहीं पहुंचाया, जबकि न्याक का प्रायः हर निवासी मेरे खिलाफ मोर्चा-सा बनाए हुए है।"

"मामला, दरअसल, न्यूयार्क पहुंचता ही नहीं, लेकिन न्याक के थाने में 'मिस्टिक आर्डर' के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज कराना कतई असम्भव रहा। रिपोर्ट लिखवाने के लिए जो गए, उन्हें थानेदार ने डांट कर भगा दिया। लिहाजा, सारा मामला चुनौती-भरा हो गया और लोगों ने मामला न्यूयार्क पहुंचा कर ही दम लिया।"

"किन्तु…मेरी आंख के एक इशारे पर न्यूयार्क की पुलिस भी पीछे हट गई।"

"ओम जी…मैंने सुना है, न्यूयार्क की पुलिस को आप ने अपनी

सम्मोहन विद्या से स्तब्ध कर दिया।"

"सम्मोहन विद्या से नहीं, अपनी सच्चाई से।" मैंने उत्तर दिया है, "सांच को आंच नहीं।"

"तो···न्याक निवासियों को मैं क्या सूचना दूं?" पोस्ट-मास्टर ने पूछा है।

मैं गम्भीर हूं, "यही कि चाहे वे कुछ कर लें, 'मिस्टिक आर्डर' इसी गांव में रहेगा।"

पोस्ट-मास्टर उठने लगता है।

"एक मिनट ठहरिए।" मैं कहता हूं। भीतर जाता हूं। लौटता हूं। मेरे हाथ में एक दूरबीन है। पोस्ट-मास्टर उस दूरबीन की ओर कौतूहली निगाहों से देख रहा है। वह समझ नहीं पा रहा, दूरबीन मैं क्यों लाया···मैंने दूरबीन उस के हाथ में थमा दिया है, "इसे ले जाइए।"

"क···क्यों?" वह चकित है।

"कभी, समय निकाल कर, किसी ऊंची जगह पर चढ़िएगा—न्याक में जो भी ऊंची-से-ऊंची जगह हो, वहां चढ़ कर, इस दूरबीन से देखिएगा।"

"दूरबीन से देखूं? क्या देखूं?" पोस्ट-मास्टर सब-कुछ समझ गया होने पर भी नासमझ बन रहा है।

मैंने स्पष्ट किया है, "मिस्टिक आर्डर' के अहाते में, इस दूरबीन की सहायता से, जासूसी करिएगा। यदि सचमुच आप को वैसे दृश्य नजर आएं, जैसे दावे नवयुवकों द्वारा किए गए हैं, तो मैं जीवन भर आप का गुलाम होने को तैयार हूं।"

"ओह, लेकिन···ओम जी, अभी-अभी आप स्वीकार कर चुके हैं कि लोगों की आशंकाएं एकदम निराधार नहीं हैं। यानी, सचमुच आप की संस्था में सामूहिक नग्नता आदि···"

"हां, मैंने स्वीकार किया; किन्तु केवल आप का दिल न तोड़ने के लिए।" मेरे होंठों पर मुस्कान है, "असलियत यह है कि जैसे आरोप लगाए जा रहे हैं, उन का 'मिस्टिक आर्डर' से दूर का भी नाता नहीं।

इसी लिए, यह दूरबीन मैं आप को अपनी ओर से भेंट-स्वरूप दे रहा हूं ।"

"नहीं, नहीं, दूरबीन की जरूरत नहीं ।" पोस्ट-मास्टर ने दूरबीन मेज पर वापस रख दिया है, "मुझे आप के शब्दों पर विश्वास है ।"

और दूरबीन को वहीं रहने दे कर वह चल दिया है ।

मैं ब्लान्शे के सामने पहुंचा हूं । कह रहा हूं, "डालिंग''हमें अपनी गतिविधियों को अब और भी गुप्त बनाना होगा । पोस्ट-मास्टर भले ही मेरी दी हुई दूरबीन ले नहीं गया, लेकिन यह बिल्कुल असम्भव है कि वह कहीं और से दूरबीन प्राप्त न करे । 'मिस्टिक आर्डर के अहाते में वह जासूसी अवश्य करेगा''और हम कभी अन्दाजा नहीं लगा सकते कि कब हमारी कौन-सी जगह दूरबीन की मार के अन्तर्गत आ जाएगी ।"

ब्लान्शे की चतुर, खामोश निगाहें मुझ पर स्थिर हैं ।

□

जहां चाह, वहां राह ! 'मिस्टिक आर्डर' ने पानी की छाती रौंदने वाला, 'नन्हा-सा एक नाजुक जहाज खरीद लिया है । उस की लम्बाई पचास फीट है । वास्तव में वह एक 'केबिन क्रूजर' ही है, किन्तु 'मिस्टिक आर्डर' की आवश्यकताओं के अनुसार उस के ढांचे में कई परिवर्तन किए गए हैं ।

अब कैसे की जाएगी जासूसी ? दूरबीनों की मार इस जहाज तक कैसे पहुंचेगी ?

सूर्य-स्नान, सामूहिक देह-कविता, सामूहिक सम्मोहन, आत्म-सम्मोहन, शीर्षासन, पद्मासन प्राणायाम, वगैरह-वगैरह''सबइसी क्रूजर पर ! हडसन नदी की छाती पर यह शानदार अड्डा कितना सुरक्षित है !

न्याक गांव के लम्बे-चौड़े केन्द्र को अब केवल व्यायाम-शाला और खेल-कूद अड्डे का ही रूप दिया जा रहा है । ब्लान्शे के नृत्यों के सांस्कृ-

तिक कार्यक्रम यहा होते हैं। वहा वह सब आयोजित होने लगा है, जिस पर न्याक के किसी निवासी के तेवर नही चढने चाहिए।

किन्तु न्याक के लोगों ने मेरे प्रति ऐसा पूर्वाग्रह पाल रखा है कि अपने चढ़े हुए तेवर उतारने के लिए वे तैयार ही नहीं। ऊह, उन का ऐसी-की-तैसी !

न्याक के अड्डे मे मेरा प्रिय सिंह रहता है। मेरी प्यारी हथिनी 'पुरानी अम्मा' भी रहती है। भांति-भांति के अन्य अनेक पशु-पक्षी वहां जगल मे मंगल करते हैं।

□

सर पाल ड्यूक्स ! उस के और मार्गरेट के बीच मुहब्बत पनप रही है। बढ़िया जोड़ी रहेगी।

यहा पाल का परिचय देना दिलचस्प साबित होगा। पाल ड्यूक्स को 'सर' की उपाधि इस लिए दी गई थी कि उस ने इंग्लैण्ड की सरकार के लिए, अपनी जान जोखिम मे डालते हुए, पश्चिमी यूरोप मे सनसनीखेज जासूसी करने का जिम्मा निभाया था। प्रथम विश्व-युद्ध के अन्त मे उसे रूस भेजा गया—इस बार भी जासूस के ही रूप मे। रूस में भी पाल ड्यूक्स की उपलब्धियां अनोखी रही। अनेक बार वह मरते-मरते बचा। लिहाजा, उसे 'सर' की उपाधि !

मजे की बात यह है कि सर पाल ड्यूक्स स्वय ही हमारे शिकंजे मे फसा। भारत के योगियो और तान्त्रिको मे उसे गहरी रूचि थी। सारा काम-धाम छोड़ कर एक दिन वह न्याक के हमारे अड्डे पर आया, मुझ से मिला। मैंने उसे न केवल सदस्य बनाया, उसे 'मिस्टिक आर्डर' में ही रहने के लिए शानदार बगला भी दे दिया।

कारण, उसे देखते ही मैंने भाप लिया था—मार्गरेट के लिए यह बहुत योग्य रहेगा। और अब, सचमुच, उन दोनो के बीच मुहब्बत पनप रही है। पाल की तरह मार्गरेट भी 'मिस्टिक आर्डर' मे ही निवास करती है। मेरा काम केवल इतना रहा कि आग और फूस को नजदीक ले

जाऊ ।

□

'पुरानी अम्मा' बीमार है । बेचारी कितना कष्ट पा रही है । बीस-बीस पशु-चिकित्सक उस की सेवा पर तैनात हैं, लेकिन 'बुढ़ापा' नामक यह जो रोग है न, इस का इलाज किसी के पास नहीं ।

यदि 'पुरानी अम्मा' को शीर्षासन या प्राणायाम कराया जा सकता, तो शायद उस की मौत को एकाध साल परे ठेला जा सकता, लेकिन··· ह, ह, ह···कभी सुना है आप ने कि एक हथिनी ने शीर्षासन किया, प्राणायाम किया ?

इसी लिए 'पुरानी अम्मा' ने एकाध साल बाद दम तोड़ने की बजाए उसी साल दम तोड़ दिया है । 'पुरानी अम्मा' दफन कर दी गई है । न्याक के लोग मेरे खिलाफ वैसे-का-वैसा पूर्वाग्रह पाले हुए हैं, किन्तु 'पुरानी अम्मा' की मौत ने मेरे और न्याक-निवासियों के बीच एक नए रिश्ते की शुरूआत की है···

एक हथिनी की मौत से दुनिया का कोई व्यक्ति उतना लाभान्वित न हुआ होगा, जितना मैं हुआ···

□

मार्गरेट और पाल ड्यूक्स की शादी 'मिस्टिक आर्डर' के लिए एक जबर्दस्त घटना थी । 'मिस्टिक आर्डर' का एक-एक सदस्य हडसन नदी की छाती पर तैरते जहाज पर हाजिर हुआ । शादी की सामाजिक रस्म अदा हो चुकी थी । अब तान्त्रिक रस्म की अदायगी ! हर सदस्य ने गेरुआ चोगा पहना । हर सदस्या ने भिक्षुणी की पोशाक धारण की । मैं अपने भव्य सिंहासन पर जा बैठा और पान खाने लगा । पीकदान में बार-बार पिच्च-पिच्च ! ब्लान्चे का रोमांचक रोशनी-संयोजन !

दो चमचमाती शव-पेटिकाएं मेरी दिशा में लाई जा रही हैं । चन्दन की लकड़ी की बनी सुगन्धित, शानदार शव-पेटिकाएं !

एक शव-पेटिका मे मार्गरेट बन्द है। मुस्करा रही होगी। उस के दिल मे कैसी फुलझड़िया छूट रही होगी ! शव-पेटिका में बन्द होते हुए भी मार्गरेट मर थोड़े गई है।

दूसरी शव-पेटिका में, जैसा कि अन्दाजा लगाया ही जा सकता है, सर पाल ड्यूक्स को बन्द किया गया है। शव-पेटिका मे बन्द होते हुए भी पाल ड्यूक्स मर थोड़े गया है।

दोनो शव-पेटिकाए मेरे चरणो पर रख दी गई हैं। दोनों पेटिकाओ को मैं आशीर्वाद देता हूं। संगीत उछलता है। सारे मेहमान गद्गद चीत्कार करते हैं। शव-पेटिकाए खुल रही हैं। एक मे से मार्गरेट बाहर। दूसरी मे से पाल ड्यूक्स बाहर। आशीर्वाद…आशीर्वाद…बुद्ध जैसी मुद्रा में उठे हुए मेरे हाथ…

और मेरा वचन, "शव-पेटिकाओं में से निकलते समय तुम दोनों, को छुटकारा तभी मिल गया, जब तुम शव-पेटिकाओं में बन्द हुए। शव-पेटिकाओं से बाहर निकल कर, अब, तुम दोनों एक नया, तान्त्रिक-अस्तित्व पा रहे हो…आशीर्वाद…"

सारी-सारी रात जशन ! नाच-गाना। उछल-कूद। देह-कविता ! लेकिन नही। शराब की बूंद भी नहीं। ओम के शिष्य शराब को छू नही सकते।

मार्गरेट की बहन बारबरा खुश है। बहुत खुश। अब उसी की बारी है न ! अब उसी के लिए मुझे किसी वर की तलाश करनी है। आशीर्वाद देना है…

□

मार्टिमर हरगिस ! सैन फ्रान्सिस्को के भूचाल से पहले का मेरा साथी ! मुझे नाई की दूकान से उठा कर समृद्धि के सातवें आसमान तक पहुंचाने वाला जादूगर ! आखिर मैंने उसे खोज ही निकाला। खोजने के लिए मैंने सैन फ्रान्सिस्को के बार-बार चक्कर लगाए। हरगिस ने अनेक नई संस्थाएं खोलीं और बन्द की थीं। स्वयं अपना नाम भी उस ने

बारम्बार बदला था। इसी लिए उसकी खोज करना आसान नहीं था।

आसान न हो, न सही—असम्भव तो नहीं था न !

लिहाजा, एक दिन, सहसा मैं उस के सामने प्रकट हुआ और बोला, "प्रिय हरगिस ! शादी करोगे ? बारबरा से ? बड़ी सुन्दर लड़की है। सब से महत्व की बात यह कि वह बेहद अमीर है। बोलो, करोगे शादी ?"

'हां, हां, क्यों नहीं।" हरगिस सिवा इस के और क्या कह सकता था ? जनता को उल्लू बनाने के व्यवसायों में उसे विशेप सफलता नहीं मिली थी। किसी तरह खर्च निकाल रहा था अपना। बैठे-बिठाए अपार सम्पत्ति यदि मिल जाती हो, तो इन्कार कैसा ?

जिस तरह सर पाल ड्यूक्स 'मिस्टिक आर्डर' में अकस्मात् आया था, उसी तरह मार्टिमर हरगिस भी अकस्मात् आया और बोला, "मेरा नाम निकालस है। पत्रकार हूं। योग और तान्त्रिक विद्याओं में गहरी रुचि है।"

आदि-आदि।

मैंने उसे 'मिस्टिक आर्डर' में रहने के लिए एक बंगला निकाल दिया।

मार्गरेट की रुचि नृत्य और संगीत की तरफ थी। इसी तरह, बारबरा की रुचि थी साहित्य और पत्रकारिता की तरफ। सर पाल ड्यूक्स ने मार्गरेट की रुचि का जितना ध्यान रखा था, उस से ज्यादा ध्यान 'निकालस' नामक 'महान् पत्रकार-लेखक' ने बारबरा की रुचि का रखा। लिहाजा, जिस तेजी से मार्गरेट और पाल ड्यूक्स नजदीक आए थे, उस से कहीं ज्यादा तेजी से निकालस और बारबरा नजदीक आए।

शादी !

उसी तरह दो शव-पेटिकाएं···एक में से पुनर्जन्म पा रही बारबरा···दूसरी में से पुनर्जन्म पा रहा निकालस···आशीर्वाद···जुग-जुग जीयो···जोड़ी अमर रहे···

श्रीमती एन वाण्डरबिल्ट एवं उस का पति विलियम के वाण्डर-

विल्ट—दोनो मेरे आभार के भार से दब-दब गए। दोनों ने 'मिस्टिक आर्डर' को इतना अधिक धन दक्षिणा में दिया कि मेरा दिमाग घूम गया। समझ ही न पाया, इतने-सब को खर्च किस तरह करूं।

खर्च करने का कोई ऐसा तरीका मुझे सोचना था, जिस में ऊपर-ऊपर से यही लगे कि 'मिस्टिक आर्डर' के लिए खर्च हो रहा है, जबकि, वास्तव में, सारा खर्च केवल मुझ पर—और मेरी प्रियतमा ब्लान्दो पर—हो रहा हो…

कुछ और न सूझा, तो मैं और ब्लान्दो नई-नई जमीनें खरीदने लगे। अलग-अलग। दूर-दूर के क्षेत्रों में। सदस्यों के सामने हम ने वक्तव्य दिया, " 'मिस्टिक आर्डर' का विकास, देश-व्यापी स्तर पर करना है। इसी लिए, दूर-दूर के स्थानों में, नई-नई जमीनें, नई-नई इमारतें…"

☐

सब याद आ रहा है…

आलमारियों में से 'पतित पावन' साहित्य की एक-एक पुस्तक खींच कर फर्श पर फेंक रहा हूं। इन को भस्म कर देने का समय आ गया है। ब्लान्दो कोने में खड़ी गुमसुम देख रही है। वह मुझे रोक नहीं पा रही।

पुस्तकों की टेकरी को मैंने आग लगा दी है।

ब्लान्दो और मेरे बीच धुएं की लकीरें…[illegible] [illegible], [illegible] [illegible] के आरपार मैं ब्लान्दो को देख रहा हूं। ब्लान्दो का [illegible] [illegible] [illegible] रहा है, जिस तरह सूखने के लिए डाले गए कपड़े हवा में [illegible]…

भूतकाल के रोमांचक गर्त में गिर रहा हूं। [illegible] [illegible] [illegible] हूं—

यही लगा होगा, कम दिया। दोनों युवतियों ने इतने लाख दिए, सो दिए—उन की मां श्रीमती एन वारण्डविल्ट ने भी मुझे चार लाख डालर और दे दिए।

मसखरी की बात यह थी कि मार्गरेट और वारवरा की शादियों में मैंने अपनी ओर से कोई बहुत ज्यादा प्रयास नहीं किया था। मार्गरेट के लिए जिस पाल ड्यूक्स को चुना गया, वह तो स्वयं ही 'मिस्टिक आर्डर' में आ पहुंचा था। रही वारवरा की वात। उसके लिए मैंने जो शठ चुना, वह एक ही गुरु-घण्टाल था। मार्टिमर हरगिस ! हरगिस ! ह, ह, ह...महान् पत्रकार-लेखक निकालस...वाह वाह...

इसी लिए, मेरा आशीर्वाद न मार्गरेट को फला, न वारवरा को। शादी के कुछ दिनों वाद ही दोनों युवतियां 'मिस्टिक आर्डर' की सदस्यता छोड़ कर खिसक गईं। उन के पति देवों ने 'मिस्टिक आर्डर' की खुल्लमखुल्ला निंदा शुरू कर दी। "भारत की योग और तान्त्रिक विद्याओं के प्रचार के नाम पर तथाकथित डाक्टर पियरे आर्नल्ड-वर्नार्ड ने जिस तरह स्वयं अपने लिए भौतिक सुख-सुविधाओं के साधन जमा किए हैं, उसे सहन करना मेरे लिए असम्भव था। शुरू में तो सारी बात मेरी समझ से परे रही, किन्तु ज्यों ही मेरी आंखें खुलीं, मैंने 'मिस्टिक आर्डर' से अलग हो जाना ही वेहतर समझा..." सर पाल ड्यूक्स ने जगह-जगह यह वक्तव्य दिया।

और मार्टिमर हरगिस ने ? 'महान् लेखक-पत्रकार' निकालस ने ? उस ने तो मेरा वेड़ा विल्कुल ही गर्क किया। उसकी निगाह शुरू से वारवरा के धन पर थी—और इस में ऐसी कोई बुराई भी न थी, किन्तु...वारवरा के साथ उस ने न जाने कैसा व्यवहार किया कि कुछ ही वर्षों में दोनों के वीच गहरी खाई पड़ गई।

जव वारवरा ने निकालस से तलाक लेना चाहा, तो निकालस ने घोषित किया—वारवरा पागल है ! याने...वारवरा को तलाक लेने का कोई अधिकार नहीं। उसे यह मालूम ही नहीं तलाक का अर्थ क्या है। निकालस ने वारवरा को जवरन पागलखाने में भरती करवा देने

का भी प्रणाम किया ! उन दिनों बारबरा पेरिस में थी। उस की मां श्रीमती एन वान्डरबिल्ट ने ताबड़तोड़ पेरिस जा कर यदि ऊंचे-से-ऊंचे वकीलों की सहायता न ली होती, तो निकालस अपने इस कुप्रयास में लगभग सफल हो चुका था।

मैं भी गया पेरिस। निकालस से मिला। समझाया-बुझाया। आखिर वह मान गया—एक लाख डालर की घूस लेने के बाद उसने बारबरा को इजाजत दे दी, "तुम मुझ से तलाक ले सकती हो।"

उधर...मार्गरेट ने भी अपने पति से तलाक लेने के लिए कमर कसी हुई थी। मार्गरेट ने अपने बालों को डाई करवा कर उनका रंग बदलवा दिया। फिर वह ब्राडवे के एक शो नर्तकी के रूप में मंच पर आई। सर पाल ह्यूब्रम ने पूरी शालीनता के साथ कहा, "मार्गरेट ! यदि तुम्हें नहीं लगता कि जीवन-साथियों के रूप में हम जीवन भर साथ रह सकते हैं, तो मुझे कोई अधिकार नहीं कि तुम्हें रोकूं..."

लिहाजा, एन वाण्डरबिल्ट की दोनों पुत्रियों ने अपने दूसरे पतिदेवों से भी छुटकारा पा लिया। बुद्ध जैसी मुद्रा में उन्हें दिए गए आशीर्वाद जरा भी सहायक सिद्ध न हुए। कहना अनावश्यक है कि इन घटनाओं से एन वाण्डरबिल्ट का मन 'मिस्टिक आर्डर' से उठ गया। यही स्थिति उस के पति की हुई।

मगर वाण्डरबिल्ट परिवार 'मिस्टिक आर्डर' को दिए जा चुके अनुदानों को वापस मांगता, इसका प्रश्न नहीं था। वाण्डरबिल्ट परिवार, पीछे हटते-हटते, 'मिस्टिक आर्डर' को इतना असीम धन दे चुका था कि मेरी चार पुश्तें भी बैठ कर नहीं खा सकती थीं।

□

दुनिया में वाण्डरबिल्टों की कमी नहीं। एक वाण्डरबिल्ट पीछे हटता है, दूसरा सामने आ जाता है। यह दीगर बात है कि हर वाण्डरबिल्ट का सरनेम वाण्डरबिल्ट नहीं होता।

जो नए वाण्डरबिल्ट मेरे जाल में फंस रहे हैं, उन का सरनेम है

'वर्दीम'। विश्व-विख्यात अरबपति व्यापारी जैकब वर्दीम की दोनों पुत्रियां—डायना और वियोला—'मिस्टिक आर्डर' में ही आ कर रहने लगी हैं। दोनों की वही समस्या है—शादी! मैंने अपने पुरुष-सैक्रेटरी पर्सिवल व्हिटल्से को संकेत दिया—मौका न चूकना।

व्हिटल्से मौका न चूका। डायना वर्दीम को उसने प्रेम-पाश में बांध ही लिया। दोनों की शादी मैंने झटपट करवा दी। चन्दन की शव-पेटिकाओं में से निकलता युगल…जोड़ी अमर रहे…आशीर्वाद…

रह गई वियोला वर्दीम। उसके लिए मैंने थियोज बर्नार्ड की खोज की। थियोज एक केलिफोर्नियन युवक था—अत्यन्त महत्वाकांक्षी। योग और तान्त्रिक पद्धतियों में उसकी रुचि आरोपित नहीं थी। 'मिस्टिक आर्डर' की कालोनी में जब वह, मेरे गुप्त आमन्त्रण पर, रहने के लिए आया; तो मैंने घोषित किया, "थियोज मेरा चचेरा भाई है।"

थियोज और वियोला की भी शादी हो कर रही। दोनों अभी इतने कम उम्र के थे कि उनकी पढ़ाई तक पूरी न हुई थी। शादी के बाद वे न्यूयार्क चले गए। वियोला ने शरीर-विज्ञान के क्षेत्र में और थियोज ने पूर्वी देशों की दार्शनिक विचारधाराओं के क्षेत्र में डाक्टरेट पाने के लिए अध्ययन शुरू कर दिया।

सब-ठीक-ठाक ही चल रहा था, किन्तु थियोज ने ज्यों-ज्यों अपना अध्ययन आगे चलाया, भारत और तिब्बत की तान्त्रिक-विद्याओं के प्रति उसका आकर्षण सीमा पार करने लगा। शीर्षासन का वह तगड़ा भक्त था। लगातार तीन-तीन घण्टों तक वह शीर्षासन करता रहता।

वियोला ने जब थियोज से तलाक पाने के लिए अर्जी दी, तो तलाक मांगने के कारण देते हुए उसने लिखा—अपने पति को लगातार तीन-तीन घण्टों तक सिरके बल खड़े देखना मेरे लिए एक बीभत्स अनुभव है…

वियोला को तलाक की अनुमति सहर्ष दे दी गई।

थियोज को इस तलाक से हर्ष न हुआ होगा, यह निश्चित है; किन्तु पत्नी और शीर्षासन, इन दोनों में यदि चुनाव करना हो, तो किसे चुना जाए, इस बारे में थियोज बेहद जिद्दी ढंग से स्पष्ट था। उसने शीर्षासन

का चुनाव किया !

फिर एक लम्बा अन्तराल···मुझे पता न चल सका, थियोज ठीक-ठीक कहां है, क्या कर रहा है···

□

युवक पत्रकार मुझ से पूछ रहा है, "क्या आप को मालूम है कि थियोज ने न्यूयार्क मे अपनी तन्त्रविद्या के जोर पर एक महिला का इलाज किया था, जो उनके ही फल-स्वरूप पागल हो गई थी ?"

"थियोज एक अच्छा तान्त्रिक और योगी था।" मैं जवाब देता हू, "मैं नही सोचता कि उस महिला के पागलपन का कारण थियोज के उपचार में छिपा हुआ था। कारण कुछ और रहा होगा। मुझे केवल इतना मालूम है कि थियोज की कोई मरीजा पागल हो गई थी।"

"अफवाह है कि थियोज के कत्ल से आप काफी लाभान्वित हुए हैं।"

"ये सब निराधार बातें हैं।" मैंने लट्ठमार ढग से कह दिया है, "मुझे बहुत खेद है कि इन बातो से मैं बोर हो रहा हू।"

"क्या हम जान सकते हैं कि योग और तन्त्र विद्या का अपना संस्थान आप ने बन्द क्यो कर दिया ?"

"संस्थान मेरा था। मर्जी हुई, बन्द कर दिया। आप लोगो को क्यो दिलचस्पी होनी चाहिए ?"

"अफवाह है कि आपने योग विद्या की आड मे न्यूयार्क के कई पूजी-पति घरानों से काफी धन प्राप्त किया है। यह धन इतना अधिक था कि आप डर गए···स्वय अपने से ही डर गए। इसी लिए आप ने अपना संस्थान बन्द कर देने मे ही गनीमत समझी···"

"आप लोग पत्रकार हैं, जैसी चाहें, कल्पनाएं कर सकते हैं।"

"श्रीमती एन वाण्डरबिल्ट ने आप को जो अतुल धन-राशि दी है···"—एक पत्रकार।

"आप की गणना इस दशक के सर्वाधिक रोमांचक व्यक्तियो में"

जाने लगी है। आप का पूरा इतिहास खोद-खोद कर जनता के सामने रखा जाएगा। आप इस से बच नहीं सकते।"

दूसरा पत्रकार।

"···भद्र सुन्दरियां आप को 'प्रिय गुरु' कहती हैं। भद्र पुरुषों के बीच आप 'ओम्नीपोटेण्ट ओम' के नाम से जाने जाते हैं। डाक्टर पियरे आर्नल्ड बर्नार्ड—यह नाम आप का है ही। क्या इन के अलावा भी···"
—तीसरा पत्रकार।

"ओके, मिस्टर पीटर कून। हम चलते हैं। फिर मिलेंगे।"—पत्रकार उठ रहे हैं।

मेरा चेहरा तमतमा आना चाहिए—मुझे 'पीटर कून' कह कर सम्बोधित किया गया—लेकिन शान्त हूं। चुप हूं। अडिग हूं। आमने-सामने हूं।

□

बीमार हूं। मरने वाला हूं। ८० साल का हो चुका। इतनी उम्र तो हाथियों के लिए भी बहुत होती है।

लेटा हुआ हूं। ब्लान्शे की चिन्ता की सीमा नहीं है। जीवन में पहला अवसर है, जब मैं इतना बीमार हूं। ब्लान्शे बुदबुदा रही है, "कभी बीमार न पड़ने वाला व्यक्ति जब बीमार पड़ता है, तो उठना मुश्किल हो जाता है···"

मैं मन-ही-मन कहता हूं, 'इस बार मैं उठूंगा ही नहीं।'

प्रकट में, किन्तु, चुप रहता हूं। सब याद आता है···

मैंने एक सरकस की स्थापना की थी। कैसा बहिर्मुखी व्यक्तित्व था मेरा! सरकस का शो सब से पहले न्याक में दिखाया जाता। फिर आसपास के नगरों-कस्बों में भी। शौकिया सरकस! आगे-आगे एक अलमस्त हाथी चलता। उस का महावत होता—मैं। साक्षात् ओमप्रकाश! और उस सरकस में विदूषकों का काम, नर्तकों का काम, रस्से के झूलों पर भांति-भांति के पराक्रम दिखाने का काम, अद्भुत अंग-सन्तुलन के

चमत्कार'''यह सब कौन करता था? 'मिस्टिक आर्डर' के सदस्य-सदस्याएं—मेरे शिष्य-शिष्याएं ! कितना रोमांचक ! न्यूयार्क के सब से अमीर घरानों के लोग, जिन के दर्शन भी दुर्लभ हों, आप के सामने *सरकस करने के लिए हाजिर हो जाएं—मुफ्त ! योगासनों के अभ्यास।* प्राणायाम के प्रयोग। सब से बड़ा चमत्कार—शीर्षासन ! यह चमत्कार स्वयं मैं दिखाता था—महान् तान्त्रिक ! सिर के बल, बिना किसी सहारे के खड़ा हो जाने वाला विचित्र योगी !

उस सरकस की स्थापना 'मिस्टिक आर्डर' ने केवल इस लिए की थी कि आसपास के क्षेत्रों की सद्भावना 'मिस्टिक आर्डर' के साथ जुड़ जाए। जो व्यर्थ की बदनामी फैल रही थी, 'मिस्टिक आर्डर' उस से मुक्त होना चाहता था'''और उस रोमांचक सरकस ने—मुफ्त के सरकस ने—इस में पूरी सफलता पाई।

मुझे लाऊ नोवा याद आ रहा है। वह एक पहलवान था—हैवीवेट बॉक्सर। उस ने मैक्स बाएर नामक एक प्रसिद्ध पहलवान को चुनौती दी थी। चुनौती के बाद लाऊ नोवा 'मिस्टिक आर्डर' का सदस्य बन गया। मैंने ऐसा मजबूत कर दिया कि जब मल्ल-युद्ध हुआ, लाऊ नोवा को ओमप्रकाश शास्त्री ने प्रशिक्षित किया'''

आंखें मूंदता हूं। लाऊ नोवा का अलमस्त शरीर मुंदी हुई पलकों के नीचे प्रकट होने लगता है। लाऊ नोवा मुस्कराने लगता हूं। मैं भी मुस्कराने लगता हूं।

ब्लान्दो मेरे कन्धे को छू रही है, "क्या हुआ? क्या बात है? मुस्कराते क्यों हैं?"

"इस लिए मुस्करा रहा हूं, ब्लान्दो, कि समझ में नहीं आता, क्या-क्या याद करूं।" आंखें खोल कर मैं उत्तर देता हूं, "मेरा जीवन ऐसा चमत्कारी रहा है कि'''उसे पूरा-का-पूरा याद किया ही नहीं जा सकता। चाहे जितना याद करो, कुछ-न-कुछ छूटेगा जरूर।"

"याद करना जरूरी है?"

"बुढ़ापे में आदमी अपनी जवानी की यादों के ही सहारे जीता है,

ब्लान्शे ।"

□

अखबारों के समाचार छप रहे हैं—ओमप्रकाश शास्त्री की तबीयत और-और खराब हो रही है ।

अखबार वालों ने जान लिया था कि पीटर कून कौन है । और उन कम्बख्तों ने यह छाप भी दिया था कि पीटर कून किस-किस जगह अपनी कैंची से कच-कच करता रहा—किन्तु अन्ततः मेरा यह भय निर्मूल साबित हुआ कि अखबार वाले मुझे बदनाम कर देंगे । उन का आशय चाहे जो रहा हो, मेरे बारे में लेख और टिप्पणियां छाप-छाप कर उन्होंने मेरी प्रतिष्ठा ही बढ़ाई । मुझे उन्होंने इतना चर्चित कर दिया कि''अब जब मैं मरने पड़ा हूं, अखबार वालों के बीच सनसनी फैल गई है ।

आज तो मैं इतना अधिक बीमार हूं कि किसी अखबार वाले से नहीं मिल सकता । कुछ ही दिनों पहले ये अखबार वाले मुझ से इस तरह बातें करते थे, गोया खुफिया विभाग के कर्मचारी हों । अब उन का रुख वैसा नहीं । ज्यों-ज्यों मेरी बीमारी की गम्भीरता बढ़ी है, उन की सहानुभूति मुखर होने लगी है । साहसेन श्री ! लक्ष्मी साहसी को ही मिलती है । पीटर कून को चालबाज नहीं, बल्कि एक साहसी व्यक्ति के रूप में चित्रित किया जा रहा है ।

सच पूछें, तो''ब्लान्शे का पति बनने के बाद, मेरी चालबाजियां कम होने भी तो लगी थीं ।

चालबाजियां, किन्तु, एकदम समाप्त कहां हुई थीं ? मैं एकदम साधु-सन्त कब हुआ ?

जो भी है, ये अखबार वाले अब सचमुच चिन्तित हैं'''

अपने कमरे में अकेला पड़ा हूं । ब्लान्शे बाहर गई हुई है—ड्राइंग-रूम में, जहां अनेक संवाददाता बैठे हैं । वे मेरे सामने आने की इजाजत चाहते हैं, किन्तु जैसा कि डाक्टर ने पूरी सख्ती के साथ आदेश दिया है ।

किसी को भी मेरे कमरे में नहीं आने दिया जाएगा।

डूब-सा रहा हूं···

शायद मेरा मरना चालू हो गया है···

ड्राइंग-रूम से ब्लान्शे की आवाज सुनाई पड़ रही है। वह उन पत्रकारों को समझा रही है, उन से जिरह कर रही है···

ब्लान्शे की आवाज फीकी पड रही है···

अब बिल्कुल कोई आवाज सुनाई नहीं पड़ रही। मैं जीवित तो हूं, क्योंकि अपने 'होने' के अहसास से अभी मैं मुक्त नहीं हुआ, किन्तु सुनने की शक्ति एकदम रीत गई है। ब्लान्शे को कल्पना भी न होगी कि भीतरी कमरे मे, ओमप्रकाश शास्त्री की सुनने की शक्ति एकदम रीत गई।

आंखें खोलना चाहता हूं···बेहद मुश्किल से जरा खोल पाता हूं। आभास मिलता है—ब्लान्शे भीतर आ रही है···

सहसा···अरे !

ब्लान्शे की जगह 'पुरानी अम्मा' दिखाई देती है—ऊंची-ऊंची पहाड़ी ! झुर्रियों वाली, शानदार सूड और जरा-सी दुम वाली 'पुरानी अम्मा' ! कितनी मजेदार बात है कि ब्लान्शे को बताया जाए कि अभी मैं उस की जगह पर 'पुरानी अम्मा' को देख रहा हूं, तो उसे कैसा लगे ? क्या वह बुरा मान जाएगी ? या हंस देगी ? हुलस कर मुझे चूम लेगी क्या करेगी ?

मैं आंखें झपकता हूं। 'पुरानी अम्मा' पुंछ जाती है। उस की जगह ब्लान्शे प्रकट होती है। फिर से आंखें झपकता हू। ब्लान्शे पुंछ जाती है। उस की जगह 'पुरानी अम्मा' प्रकट होती है···

वाह ! क्या खूब ! कितने व्यवस्थित ढग से इन सन्नारियों ने अपनी-अपनी बारिया लगाई हैं।

'पुरानी अम्मा' कितने सही मौके पर आई है ! मेरे जीवन में ब्लान्शे का महत्व जितना रहा, उतना ही महत्व 'पुरानी अम्मा' का भी रहा। 'पुरानी अम्मा' की मौत के ही कारण मेरे और न्याक-निवासियों के सम्बन्ध···यदि वे सम्बन्ध तनावपूर्ण ही चलते रहते, क्या मैं वह सब

कर सकता, जो कि 'मिस्टिक आर्डर' के तहत मैंने सचमुच किया ? इसी लिए कहता हूं, 'पुरानी अम्मा' मुझ से मिलने के लिए बड़े मौके से आई है। मरने से पहले मिलन।

लेकिन यह कितनी मजेदार वात है कि क्लान्शे की जगह पर 'पुरानी अम्मा' दिखाई दे ! मुझे हंसी आ रही है। इस हंसी को मैं किसी भी तरह रोक नहीं पा रहा···दूसरी ओर अन्दरूनी कमजोरी इतनी ज्यादा है कि महसूस करता हूं, यदि मैं हंसा, तो मर जाऊंगा। हंसने में भी बदन की शक्ति खर्च होती है। शक्ति इतनी कम है कि यदि मैंने उसे हंसने के पीछे बर्बाद किया, तो जरूर इसी क्षण मर जाऊंगा।

किन्तु···अरे ! क्लान्शे की जगह पर 'पुरानी अम्मा'। चली आ रही है झूमती-झामती···वाह-वाह ! क्लान्शे उर्फ 'पुरानी अम्मा' ! हा, हा···

मैंने हास्य बिखेर दिया है।

कोई नहीं जानेगा, मैं किस तरह मरा।

हंसते ही मर गया हूं।

मरते ही—

सिंह प्रकट हुआ है। तान्त्रिक अपने सिंह की पीठ पर आरूढ़ हो गया है। सिंह उड़ने लगा है···उड़ता जा रहा है···शायद भारत की ओर ! ह, ह, ह···